हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंकः सितंबर–अक्तूबर 2016

दिल्ली

ਦਿੱਲੀ

دلّی

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में रिपोर्ट कार्ड-पी.टी.एम.

भावनाएँ भड़काते हैं अख़बार

“पत्रकारिता का व्यवसाय, किसी समय बहुत ऊँचा समझा जाता था ! आज बहुत ही गन्दा हो गया है ! यह लोग एक–दूसरे के विरुद्ध बड़े मोटे–मोटे शीर्षक देकर लोगों की भावनाएँ भड़काते हैं और परस्पर सिर फुटौव्वल करवाते हैं ! एक–दो जगह ही नहीं, कितनी ही जगहों पर इसलिए दंगे हुए हैं कि स्थानीय अखबारों ने बड़े उत्तेजनापूर्ण लेख लिखे हैं ! ऐसे लेखक बहुत कम है जिनका दिल व दिमाग ऐसे दिनों में भी शान्त रहा हो !

अखबारों का असली कर्त्तव्य शिक्षा देना, लोगों से संकीर्णता निकालना, साम्प्रदायिक भावनाएँ हटाना, परस्पर मेल–मिलाप बढ़ाना और भारत की साझी राष्ट्रीयता बनाना था लेकिन इन्होंने अपना मुख्य कर्त्तव्य अज्ञान फैलाना, संकीर्णता का प्रचार करना, साम्प्रदायिक बनाना, लड़ाई–झगड़े करवाना और भारत की साझी राष्ट्रीयता को नष्ट करना बना लिया है !

यही कारण है कि भारतवर्ष की वर्तमान दशा पर विचार कर आंखों से रक्त के आँसू बहने लगते हैं और दिल में सवाल उठता है कि ‘भारत का बनेगा क्या ?”

– भगत सिंह, 1928

दिल्ली

अंक : सितम्बर–अक्तूबर 2016

प्रधान सम्पादक
डॉ. जयदेव षड़ंगी

विशेष निदेशक
संदीप मिश्र

सम्पादक
डॉ. पंकज श्रीवास्तव

छाया चित्र
सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

"दिल्ली" पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता
प्रधान सम्पादक
दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय
दिल्ली सरकार
खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054
दूरभाष : 23819046, 23817926
फैक्स : 23814081
ई–मेल : delhidip@gmail.com

इस अंक में...

हिन्दी

शिक्षक दिवस पर सम्मानित हुए दिल्ली के 91 शिक्षक 2
दिल्ली को मिली सौ बसों की सौगात 8
हमें फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ाया जाए! 9
शहादत से पहले साथियों को अन्तिम पत्र 12
दिल्ली के बहादुरों को मिलेंगे वीरता पुरस्कार 13
गांधी जी की गोद में वह अपूर्व अवसर! 14
सौर ऊर्जा से जगमग हुआ दिल्ली सचिवालय 18
पहली एमएमसी सभा 19
शिक्षकों और अभिभावकों के बीच बना पुल! 22
1 लाख और बुजुर्गों को पेंशन देगी सरकार 24
सरकारी स्कूल के बच्चों ने की शब्दों से दोस्ती! 24
दिल्ली में 7वां वेतन आयोग 24
संक्षेप में 28

पंजाबी

ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ 'ਤੇ ਸਨਮਾਨਤ ਹੋਏ ਦਿੱਲੀ ਦੇ 91 ਅਧਿਆਪਕ 1
ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਦੱਸੇ ਰਸਤੇ ਤੇ ਹੈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ-ਕੇਜਰੀਵਾਲ 4
ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਸੌ ਬੱਸਾਂ ਦੀ ਸੌਗਾਤ 7
ਸਾਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇਣ ਦੇ ਬਜਾਏ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਉਡਾਇਆ ਜਾਏ ! 8
ਸ਼ਹਾਦਤ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਥੀਆਂ ਨੂੰ ਅੰਤਿਮ ਪੱਤਰ 11
ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਹਾਦੁਰਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣਗੇ ਵੀਰਤਾ ਪੁਰਸਕਾਰ 12
ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਨਾਲ ਜਗਮਗ ਹੋਇਆ ਦਿੱਲੀ ਸਕੱਤਰੇਤ 13
ਸੰਖੇਪ ਵਿਚ 14

اردو

ٹیچر ہیں اصلی ہیرو ۔منیش سسو دیا ٹیچر ڈے پر نوازے گئے دہلی کے 91 اساتذہ 1
بھگت سنگھ کے بتائے راستے پر ہے دہلی حکومت ۔کیجر یوال 4
دہلی کو ملی سو بسوں کی سوغات کلسٹر بسوں کی تعداد ہوئی 1590 7
ہمیں پھانسی دینے کے بجائے گولی سے اڑایا جائے! 8
شہادت سے پہلے ساتھیوں کو آخری خط 11
سنسنی توانائی سے جگمگ ہوا دہلی سیکریٹریٹ دہلی کے بہادروں کو ملیں گے بہادری ایوارڈ 12
بجلی بل کے بچے 68 لاکھ روپے 13
مختصر میں 14

शिक्षक दिवस पर सम्मानित हुए दिल्ली के 91 शिक्षक

शिक्षक हैं असली हीरो-मनीष सिसोदिया

"शिक्षक समाज के सबसे मजबूत स्तंभ होते हैं। उन्हें हर स्तर पर प्रोत्साहित करने की जरूरत है ताकि वे समाज के निर्माण की अपनी भूमिका नेतृत्वकारी ढंग से निभा सकें। उन पर एक पूरी पीढ़ी को शिक्षित और विकसित करने की जिम्मेदारी होती है। हम उनका सम्मान कर रहे हैं जो भारत का भविष्य गढ़ते हैं"

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के इस उद्‌गार पर पूरा त्यागराज स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। मौका था सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिवस यानी 5 सितंबर पर आयोजित होने वाले शिक्षक दिवस समारोह का। दिल्ली सरकार ने इस अवसर पर 91 प्रतिभाशाली शिक्षकों को "दिल्ली राज्य शिक्षक सम्मान–2016" से सम्मानित किया। उपमुख्यमंत्री ने शिक्षकों को सम्मानित करने के महत्व को बताते हुए कहा कि हम लोग खेल, सिनेमा या अन्य क्षेत्र के सितारों को सम्मानित करते हैं। लेकिन शिक्षक वह हैं जो उन्हें वास्तव में सितारा बनाते हैं। दिल्ली सरकार शिक्षकों के सम्मान में इसीलिए यह भव्य आयोजन कर रही है ताकि लोग शिक्षकों के महत्व को समझ सकें।

शिक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी संभाल रहे श्री सिसोदिया ने कहा कि अगले वर्ष शिक्षकों का सम्मान समारोह और भी बड़े पैमाने पर मनाया जाएगा। दिल्ली सरकार शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है जिसमें शिक्षकों

यह सम्मान पाकर मैं काफी खुश हूँ। हाँलाकि यह अवार्ड सिर्फ मेरा नहीं है। इसमें हमारे छात्रों व उन सभी सहयोगियों का योगदान है जिसके कारण हमारे शिष्यों ने सफलता पाई है।

– बल्लू सिंह, संस्कृत

हिंदी हमारी मातृभाषा है। मैं चाहता हूँ मेरा हर छात्र हिंदी के साथ ही अन्य भाषाओं का भी सम्मान करे, उन्हें सीखे। अपने छात्रों की बेहतरी के लिए मुझे जितनी भी मेहनत करनी पड़े, करता हूँ।

– नवदीप कुमार, हिंदी

कोशिश करती हूँ कि बच्चों को सिर्फ किताबी शिक्षा न देकर उन्हें व्यावहारिक ज्ञान अधिक दिया जाए। समय को लेकर मेरी मुस्तैदी, मेहनत व पढ़ाने–सिखाने के नए–नए तरीके इस्तेमाल करने के कारण मुझे इस अवार्ड के लिए चुना गया।

– ज्योति शर्मा, संगीत

हम स्कूल में बच्चों को पढ़ाई का अच्छा माहौल उपलब्ध कराते हैं। इसलिए बच्चे भी खूब मन लगाकर पढ़ते हैं। उनकी कामयाबी से ही हमारी सफलता और पहचान बढ़ती है। मुझे मिले इस अवार्ड का श्रेय बच्चों को ही जाता है।

– राकेश कुमार शर्मा, प्रिंसिपल

शिक्षकों का आचार–व्यवहार और अपने काम के प्रति उनका समर्पण ही उनकी छात्रों की सफलता की पहली शर्त है। छात्र अच्छे नागरिक बनकर शिक्षक का सिर गर्व से ऊंचा करें, यही हमारे लिए गुरुदक्षिणा है।

– रजनी शर्मा, संगीत

मेरे स्कूल में बच्चों को अनुशासन, सफाई व सबसे समान व्यवहार करने की बात शुरू से ही सिखाई जाती है। बच्चों को पढ़ाई का अच्छा माहौल मिले हमेशा इसका ध्यान रखना चाहिए।

– महेंद्र मोहन शर्मा, प्रिंसिपल

एक शिक्षक के रूप में मैं खुद को बच्चों के सबसे करीब पाता हूँ। हमसे सीखने के साथ ही बच्चे हमें बहुत कुछ सिखाते भी हैं। जो आज बच्चे हैं वही आगे चलकर शिक्षक बनते हैं।

– सतीश शर्मा, शारीरिक शिक्षा

इस अवार्ड को पाने के लिए जितनी मेहनत मैंने की है, उससे कहीं ज्यादा हमारे छात्रों की मेहनत है। समय पर स्कूल पहुंचकर, परीक्षा में अच्छे नंबर लाकर, स्कूल को साफ–सुथरा रखकर बच्चों ने साबित किया कि हम अच्छे शिक्षक हैं।

– अरविंद कौशल, शारीरिक शिक्षा

हमने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी। बच्चों ने हमें अवार्ड दिलवाया। यह हमारे लिए गुरुदक्षिणा के समान है। सभी छात्रों को यह समझना चाहिए कि उनके शिक्षक उन्हें जो पढ़ाते हैं, वह उनके अच्छे भविष्य के लिए होता है।

– अजवंत सिंह, पीजीटी

बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह हैं। उन्हें शुरू से जिस माहौल में जैसे ढालोगे, ढल जाएंगे। यह हम शिक्षकों को सुनिश्चित करना है किसी भी बच्चे का भविष्य कैसे संवारना है।

– विमला राणा, पीईटी

आज समाज में अच्छे शिक्षकों की सख्त जरूरत है। बच्चों की हर कामयाबी के पीछे शिक्षक का हाथ होता है। शिक्षकों को अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी संजीदगी से करना चाहिए।

– अनिल कौशिक, पीईटी

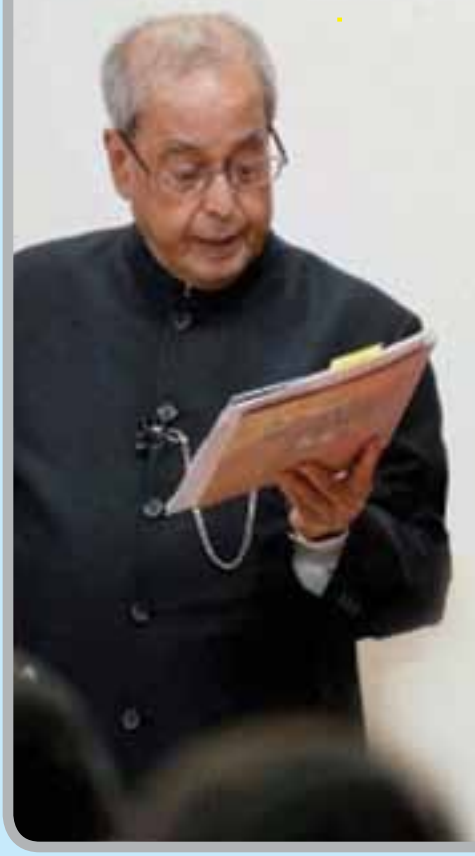

राष्ट्रपति जी की क्लास !

शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी भी शिक्षक की भूमिका में नजर आये। उन्होंने डॉ.राजेंद्र प्रसाद सर्वोदय विद्यालय में एक घंटे तक बच्चों को पढ़ाया। यह विद्यालय राष्ट्रपति भवन के परिसर में स्थित है।

राष्ट्रपति जी ने 11वीं और 12वीं के करीब 80 छात्रों को भारतीय राजनीति का इतिहास विषय पर करीब एक घंटे का व्याख्यान दिया। राष्ट्रपति ने आजादी के बाद भारतीय राजनीति के इतिहास और उसके विकास के साथ–साथ देश और दुनिया में आतंकवाद के बढ़ते खतरे के बारे में भी बताया।

पिछले साल भी राष्ट्रपति ने शिक्षक दिवस के अवसर पर इसी विद्यालय के बच्चों को पढ़ाया था। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने उनसे इसका आग्रह किया था।

इस मौके पर दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी मौजूद थे। उन्होंने स्कूल की स्मारिका नई जिंदगी की उमंग, स्वच्छ ऊर्जा के संग का लोकार्पण किया और इसकी एक प्रति राष्ट्रपति को भेंट की।

की सबसे बड़ी भूमिका है। उनके सहयोग से सरकार शिक्षा क्षेत्र का पूरा माहौल बदलने के लिए कृतसंकल्प है। उन्होंने इस दौरान शिक्षकों को छात्रों, अभिभावकों तथा समाज के प्रति निष्ठा व कर्तव्य पालन की शपथ भी

दिलाई। दिल्ली के जल संसाधन मंत्री कपिल मिश्र ने भी इस अवसर पर शिक्षकों को शुभकामनाएँ दीं।

सम्मानित किए गये शिक्षक सरकारी के साथ–साथ निजी स्कूलों के भी थे। सरकार ने उनकी तस्वीरों की होर्डिंग जगह–जगह लगवाई थी जिससे वे काफी प्रसन्न नजर आये। उन्होंने सरकार का आभार जताते हुए इस बात पर खुशी जताई कि बतौर शिक्षक उनकी मेहनत को सराहा गया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य सचिव केके शर्मा, शिक्षा सचिव पुण्या श्रीवास्तव, शिक्षा निदेशक सौम्या गुप्ता तथा अतिरिक्त शिक्षा निदेशक सुनीता कौशिक विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे. समारोह में नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी, ओलम्पिक मैडल विजेता साक्षी मलिक तथा पीवी सिन्धु के वीडियो संदेश दिखाये गये।

कार्यक्रम के दौरान गायक–कलकार शाहिद माल्या और पीयूष मिश्रा के अलावा साध्या इंस्टीटयुट तथा इंडियन ओशन बैंड के कलाकरों ने रंगारंग कार्यक्रम भी पेश किया। ■

‘शहीद उत्सव’ में शामिल हुए शहीदों के परिजन

भगत सिंह के बताये रास्ते पर है दिल्ली सरकार -केजरीवाल

दिल्ली में बनेगा भगत सिंह फ़ाउंडेशन

दिल्ली में बनेगा शहीद भगत सिंह फाउंडेशन– यह ऐलान 28 सितंबर को शहीदे आजम भगत सिंह की 110वीं जयंती पर आयोजित शहीद उत्सव के दौरान दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने किया। तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित इस समारोह में मुख्यमंत्री ने शहीद भगत सिंह और शहीद सुखदेव के अलावा तमाम अन्य शहीदों के परिजनों के साथ 190 स्वतंत्रता सेनानियों को भी सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि शहीदों का जन्मदिवस या शहादत दिवस मनाना अच्छी बात है, लेकिन इससे भी जरूरी है उनके बताये रास्ते पर चलना। भगत सिंह सर्फ 23 साल की उम्र में शहीद हुए, लेकिन उन्होंने बहुत पढ़ा–लिखा। उन्होंने लिखा कि केवल अंग्रेजों को भगाने से आजादी नहीं आएगी, सच्ची आजादी तब आएगी जब किसानों, मजदूरो, गरीबों के हाथ में सत्ता होगी। लेकिन हमारे देश में माहौल यह है कि वोट लेने के समय ही गरीबों की याद आती है। नेता लोग चुनाव में गरीबों के सामने हाथ जोड़ते हैं लेकिन जीतने के बाद उन्हें पूँजीपतियों की याद आती है। गरीबों की बात करने पर पुराने वादों को जुमला बता देते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी स्कूलों को जानबूझकर बरबाद किया गया जहां गरीबों के बच्चे पढ़ते हैं ताकि निजी स्कूल चमक सकें। दिल्ली सरकार हालात बदल रही है। आज दिल्ली में गरीबों के बच्चों को सरकारी स्कूलों में निजी स्कूलों से बेहतर माहौल मिल रहा है। शिक्षकों को आक्सफोर्ड और कैंब्रिज भेजकर ट्रेनिंग दिलवाई जा रही है। सरकारी अस्पतालों में दवा, जाँच, इलाज पूरी तरह मुफ्त कर दिया गया है और न्यूनतम मजदूरी 9 हजार से बढ़ाकर 14 हजार रुपये महीने की जा रही है जो देश में सबसे ज्यादा है। यह गरीबों की सरकार है जो गरीबों के हाथ में सत्ता देना चाहती है। शहीदे आजम भगत सिंह यही चाहते थे।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अगर वे भगत सिंह के सपनों का एक फीसदी भी पूरा कर सके तो जीवन सार्थक समझेंगे। उन्होंने कहा कि भगत सिंह के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए दिल्ली सरकार उनके नाम पर एक फाउंडेशन बनाएगी। फाउंडेशन भगत सिंह के साथ–साथ तमाम अन्य शहीदों के जीवन और विचारों पर शोध करके प्रचार–प्रसार करेगा। उन्होंने कहा कि जो समाज अपने शहीदों की कुर्बानी भूल जाता है, उसका कोई भविष्य नहीं होता।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री से माँग की कि जिस तरह दिल्ली सरकार, सीमा या देश के भीतर अपनी ड्यूटी निभाते हुए शहीद होने वालों के परिजनों को एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि देती है, वैसी ही सहायता भारत सरकार भी करे। उड़ी हमले में शहीद हुए 18 जवानों को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि उनके परिजनों को एक करोड़ की राशि देने के साथ भारत सरकार यह शुरुआत कर सकती है।

शहीद उत्सव को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि भगत सिंह हम सबके अंदर जिंदा है। शहीद उत्सव आने वाली पीढ़ी के नाम संदेश है कि शहीद होना अपने आप में उत्सव है। शहादत का भाव रखना ही उत्सव का काम है। उन्होंने कहा कि भगत सिंह इन्कलाब की जिस किताब को अधूरा छोड़ गये हैं, अगर उनकी सरकार उसमें एक पन्ना भी जोड़ पाये तो

'शहीद कोष' का लोकार्पण

आज की पीढ़ी ने तमाम शहीदों का सिर्फ नाम सुना है। उनके जीवन और विचार को लेकर ज्यादा जानकारी उसके पास नहीं है। इस कमी को दूर करने के लिए दिल्ली सरकार ने shaheedkosh.delhi.gov.in विकसित की है जिसका लोकार्पण शहीद उत्सव के दौरान किया गया।

इस वेबपोर्टल में देश भर के शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों का डेटाबेस तैयार किया जायेगा। इस कोष में देश के शहीदों से जुड़े सभी ब्योरों का संग्रह किया जाएगा। सरकार इसके लिए भारतीय उच्चायोगों और दूतावासों के माध्यम से बाग्लादेश, बर्मा, इंग्लैंड, कनाडा और अमेरिका इत्यादि देशो मे भी रह रहे स्वतंत्रता सेनानियों, उनके परिवार के सदस्यों या उनके नजदीकी रिश्तेदारों से भी संपर्क करने का प्रयास करेगी।

शहीदों से जुड़ी तमाम जानकारी एक साथ मुहैया कराने के लिहाज से यह एक अनूठा प्रयास है।

जीवन सफल हो जाएगा। उन्होंने इस अवसर पर शहीद कोष वेबसाइट के लोकार्पण को अहम बताते हुए कहा कि दुनिया के कोने–कोने में बैठे लोग इसके जरिये शहीदों के जीवन और संघर्ष के बारे में जान पायेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रम मंत्री गोपाल राय ने की। इस अवसर पर तमाम सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।'

'मेरा रंग दे बसंती चोला'' जैसी देशभक्ति की थीम पर आयोजित कार्यक्रमों ने लोगों को शहीदों की यादों में भिगो दिया। पंजाब के मशहूर गायक हरभजन सिंह मान की प्रस्तुतियाँ ने ऐसा समां बांधा कि स्टेडियम में मौजूद हजारों लोगों के बीच देशप्रेम की भावना हिलोरें मारने लगीं। ■

दिल्ली को मिली सौ बसों की सौगात

क्लस्टर बसों की संख्या हुई 1590

दिल्ली की परिवहन व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सरकार की कोशिशें रंग लाने लगी हैं। इसी के तहत 100 नई बसें सड़कों पर उतारी गई हैं। ये सभी बसें जीपीएस सुविधा से लैस हैं और इनमें इलेक्ट्रानिक टिकट की व्यवस्था भी है। अगले चरण में ऐसी 800 बसें और आएँगी जिनमें 431 पूरी तरह वातानुकूलित होंगी।

18 सितंबर को विधानसभा परिसर में हुए एक विशेष कार्यक्रम में इन सजी–धजी बसों को जनता को समर्पित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने की। उन्होंने दिल्ली सरकार को जन हित में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम बताते हुए सरकार को बधाई दी।

इस मौके पर परिवहन मंत्री सत्येंद्र जैन ने बताया कि परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए 3000 नई बसें चलाई जाएंगी। यह लक्ष्य इसी वित्त–वर्ष में पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार बस सेवा को बेहतर बनाकर लोगों का विश्वास हासिल करना चाहती है। मेट्रो फीडर बसों की संख्या बढ़ाई जाएगी जिससे लोग सार्वजनिक परिवहन का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें। इन बसों में आरामदेह सीटों का इंतजाम है जिससे यात्रियों की यात्रा सुगम होगी। साथ ही इलेक्ट्रानिक टिकट सिस्टम की वजह से समय की काफी बचत होगी।

इन बसों के सड़क पर उतरने से दिल्ली में क्लस्टर बसों की संख्या 1590 हो गई है। ये बसें उत्तर, पूर्व और पश्चिमी दिल्ली में चलाई जाएंगी। मोरी गेट, पुरानी दिल्ली, मयूर विहार फेज–3, इंद्रपुरी, अंबेडकर नगर और कमला मार्केट में इन बसों का टर्मिनल होगा। इन बसों का रूट बड़े अस्पतालों, मेट्रो स्टेशनो और बस अड्डों को जोड़ेगा। कश्मीरी गेट, आनंद विहार और सराय काले खान के अंतरराज्यीय बस अड्डों तक इनकी पहुँच यात्रियों को काफी राहत देगी। ■

हमें फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ाया जाए !

(फाँसी पर लटकाए जाने से 3 दिन पूर्व–20 मार्च, 1931 को– भगतसिंह तथा उनके साथियों राजगुरु एवं सुखदेव ने निम्नांकित पत्र द्वारा सम्मिलित रूप से पंजाब के गवर्नर से माँग की थी की उन्हें युद्धबन्दी माना जाए तथा फाँसी पर लटकाए जाने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाए। यह पत्र इन राष्ट्रवीरों की प्रतिभा, राजनीतिक मेधा, साहस एवं शौर्य की अमरगाथा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।)

20 मार्च, 1931

प्रति, गवर्नर पंजाब, शिमला

महोदय,

उचित सम्मान के साथ हम नीचे लिखी बातें आपकी सेवा में रख रहे हैं –

भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी वाइसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर षड्यंत्र अभियोग की सुनवाई के लिए एक विशेष न्यायधिकरण (ट्रिब्यूनल) स्थापित किया था, जिसने 7 अक्तूबर, 1930 को हमें फाँसी का दण्ड सुनाया। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट जार्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है।

न्यायालय के इस निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं–

पहली यह कि अंग्रेज जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरी यह है कि हमने निश्चित रूप में इस युद्ध में भाग लिया है। अतएव हम युद्धबंदी हैं।

यद्यपि इनकी व्याख्या में बहुत सीमा तक अतिशयोक्ति से काम लिया गया हैं, तथापि हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि ऐसा करके हमें सम्मानित किया गया है। पहली बात के सम्बन्ध में हम तनिक विस्तार से प्रकाश डालना चाहते हैं। हम नहीं समझते कि प्रत्यक्ष रूप मे ऐसी कोई

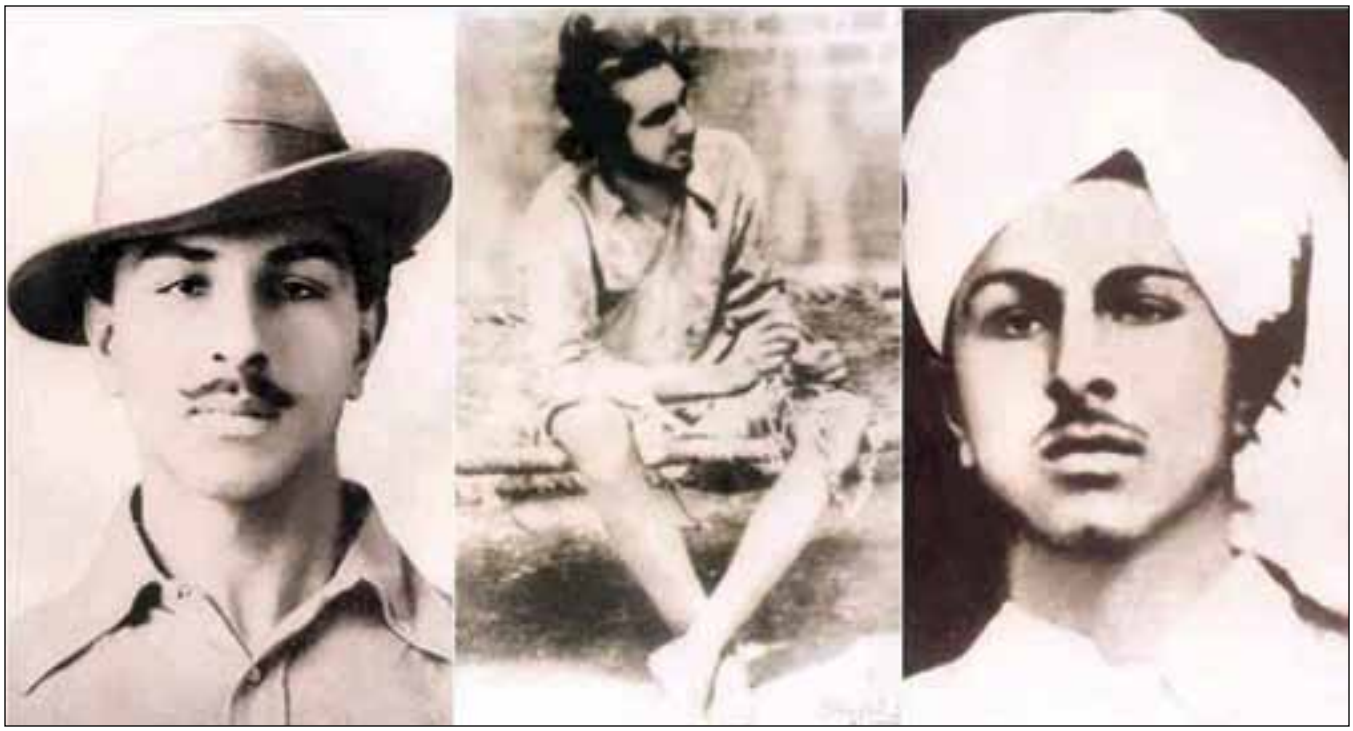

लड़ाई छिड़ी हुई है। हम नहीं जानते कि युद्ध छिड़ने से न्यायालय का आशय क्या है? परन्तु हम इस व्याख्या को स्वीकार करते हैं और साथ ही इसे इसके ठीक संदर्भ में समझाना चाहते हैं ।

युद्ध की स्थिति

हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है– चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नही पड़ता। यदि आपकी सरकार कुछ नेताओं या भारतीय समाज के मुखियों पर प्रभाव जमाने में सफल हो जाए, कुछ सुविधायें मिल जाये, अथवा समझौते हो जाएँ, इससे भी स्थिति नहीं बदल सकती, तथा जनता पर इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है। हमें इस बात की भी चिंता नही कि युवको को एक बार फिर धोखा दिया गया है और इस बात का भी भय नहीं है कि हमारे राजनीतिक नेता पथ–भ्रष्ट हो गए हैं और वे समझौते की बातचीत में इन निरपराध, बेघर और निराश्रित बलिदानियों को भूल गए हैं, जिन्हें दुर्भाग्य से क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य समझा जाता है। हमारे राजनीतिक नेता उन्हें अपना शत्रु मानते हैं, क्योंकि उनके विचार में वे हिंसा में विश्वास रखते हैं, हमारी वीरांगनाओं ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया है। उन्होंने अपने पतियों को बलिवेदी पर भेंट किया, भाई भेंट किए, और जो कुछ भी उनके पास था सब न्यौछावर कर दिया। उन्होंने अपने आप को भी न्यौछावर कर दिया परन्तु आपकी सरकार उन्हें विद्रोही समझती है। आपके एजेण्ट भले ही झूठी कहानियाँ बनाकर उन्हें बदनाम कर दें और पार्टी की प्रसिद्धि को हानि पहुँचाने का प्रयास करें, परन्तु यह युद्ध चलता रहेगा।

युद्ध के विभिन्न स्वरूप

हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न–भिन्न दशाओं में भिन्न–भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी किसान के स्तर पर युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाए कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाए। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आप की इच्छा है कि आप जिस परिस्थिति को चाहे चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी–छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। बहुत सभव है कि यह युद्ध भयंकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नही हो जाता।

अन्तिम युद्ध

निकट भविष्य में अन्तिम युद्ध लड़ा जाएगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूँजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारम्भ ही किया है और न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा। हमारी सेवाएँ इतिहास के उस अध्याय में लिखी जाएंगी जिसको यतीन्द्रनाथ दास और भगवतीचरण के बलिदानों ने विशेष रूप में प्रकाशमान कर दिया है। इनके बलिदान महान हैं। जहाँ तक हमारे भाग्य का संबंध है, हम जोरदार शब्दों में आपसे यह कहना चाहते हैं कि आपने हमें फाँसी पर लटकाने का निर्णय कर लिया है। आप ऐसा करेंगे ही,आपके हाथों में शक्ति है और आपको अधिकार भी प्राप्त है। परन्तु इस प्रकार आप जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला सिद्धान्त ही अपना रहे हैं और आप उस पर कटिबद्ध हैं। हमारे अभियोग की सुनवाई इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि हमने कभी कोई प्रार्थना नहीं की और अब भी हम आपसे किसी प्रकार की दया की प्रार्थना नहीं करते। हम आप से केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय के

भगत सिंह राजगुरु सुखदेव

अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्धबंदी हैं, अतः इस आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबन्दियों–जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

अब यह सिद्ध करना आप का काम है कि आपको उस निर्णय में विश्वास है जो आपकी सरकार के न्यायालय ने किया है। आप अपने कार्य द्वारा इस बात का प्रमाण दीजिए। हम विनयपूर्वक आप से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना–विभाग को आदेश दे दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक सैनिक टोली भेज दी जाए।

भवदीय,

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव

शहादत से पहले साथियों को अन्तिम पत्र

22 मार्च, 1931

साथियो,

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ, कि मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है–इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हर्गिज नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक चिन्ह मद्धिम पड़ जाएगा या संभवतः मिट ही जाए। लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते–हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं,उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतन्त्र, जिंदा रह सकता तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचे रहने का नहीं आया। मुझसे अधिक भाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है। अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इन्तजार है। कामना है कि यह और नजदीक हो जाए।

आपका साथी

भगत सिंह

दिल्ली के बहादुरों को मिलेंगे वीरता पुरस्कार

15 अगस्त और 26 जनवरी पर 2 लाख का नक़द पुरस्कार

दमकल कर्मचारी की ड्यूटी के दौरान मौत पर भी मिलेंगे एक करोड़

अपनी जान जोखिम में डालकर जीवन या संपत्ति का नुकसान बचाने वालों को दिल्ली सरकार अगले साल से स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर राज्य स्तरीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित करेगी। साथ ही, दमकल विभाग, पुलिस विभाग या बिना वर्दी वाले विभागों कर्मचारियों के परिजनों को भी एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि दी जाएगी जिनकी कर्तव्य पालन कै दौरान जान जाएगी।

ब्रेवरी अवार्ड या वीरता पुरस्कार के तहत 2 लाख रुपये नकद दिये जाएंगे। 15 अगस्त और 26 जनवरी को दिये जाने वाले इस पुरस्कार के लिए नागरिकों को अपना नाम प्रस्तावित करने का भी अधिकार होगा। साथ ही वे किसी अन्य का नाम भी प्रस्तावित कर सकेंगे। ऐसे दस पुरस्कार 15 अगस्त को और दस 26 जनवरी के समारोह में प्रदान किये जाएंगे।

इसके अलावा सरकार ने यह फैसला भी किया है कि दिल्ली के दमकल विभाग के जिन कर्मचारियों की मौत जीवन या संपत्ति का नुकसान बचाने के दौरान होगी, उनके परिजनों को भी एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि सहायता के रूप में दी जाएगी। अभी तक सरकार की इस सहायता नीति के तहत पुलिस, सशस्त्र बल, अर्धसैनिक बल और होमगार्ड जैसे वर्दीधारी कर्मचारियों को ही लाभ मिलता था। यही नहीं, दिल्ली के बाहर ड्यूटी के दौरान जान गंवाने वाले वर्दीधारी कर्मचारियों के परिजनों को भी इसका लाभ मिलेगा अगर परिवार दिल्ली में निवास करता होगा।

पिछले दिनों दिल्ली सरकार ने दिल्ली के एक शिक्षक को भी शहीद मानते हुए परिजनों को एक करोड़ रुपये सम्मान राशि देने का ऐलान किया था। इस शिक्षक की दो छात्रों ने चाकुओं से गोद कर हत्या कर दी थी। शहीद उत्सव में अपने भाषण के दौरान इस घटना को बेहद दुखद बताते हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा था कि शिक्षक भी किसी जवान की तरह ही मोर्चे का सिपाही है। बच्चों को पढ़ाना देशनिर्माण का काम है। यह मौत शहादत है इसलिए उनके परिजनों को भी एक करोड़ रुपये दिये जाएंगे। ■

गाँधी जयंती 2 अक्तूबर पर विशेष संस्मरण

गाँधी जी की गोद में वह अपूर्व अवसर!

■ नारायण देसाई

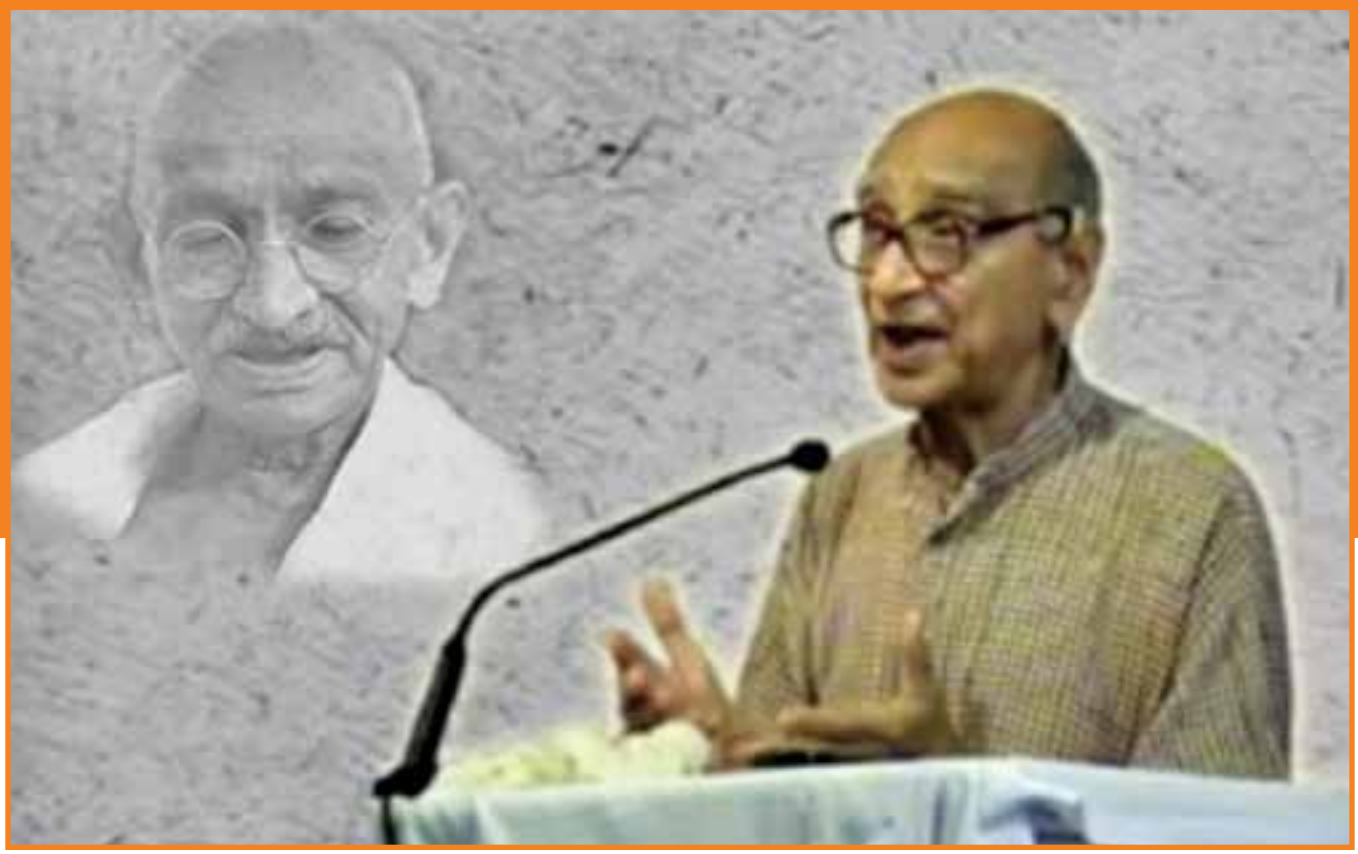

बापू के साथ ट्रेन में सफर करने का अनुभव कुछ अनोखा ही था। उन दिनों बापू सामान्य थर्ड क्लास में सफर करते थे। उनके लिए स्पेशल डिब्बा ट्रेन में जोड़ने की बात बहुत बाद में शुरु की गयी थी। आम तौर पर दूसरे मुसाफिरों की तरह वे सामान्य डिब्बे में बैठते थे। हाँ, इतना अवश्य होता था कि बापूजी बैठे हैं, यह मालूम होते ही डिब्बे के लोग उनके लिए जगह कर देते।

लेकिन बापू के साथ का लवाजिमा छोटा नहीं होता था। उनके साथ उनके अन्तेवासी, रोगी, मुलाकाती, प्रयोगी सभी शामिल हो जाते थे। 'कम सामान, अधिक आराम' (ट्रैवल लाइट) का सूत्र उन दिनों चालू नहीं हुआ था। इसलिए ढेर सारा सामान पार्टी में हो जाता था। सामान की देखभाल करने की जिम्मेवारी आम तौर पर कनुभाई की रहती थी। मैं उनका सहायक था। सफर करते हुए या उसकी समाप्ति पर हम लोगों को जो नाश्ता मिलता था, उसको हम 'कुली चार्ज' कहते थे। कनुभाई और उनका यह बन्दा, दोनों कन्धे पर सामान ढोने में और 'कुली–चार्ज' वसूल करने में शूर थे। सामान की गिनती एक बार, दो बार, तीन बार होती थी। सफर के बीच में कोई भाई शामिल हो जाते थे उनके साथ का सामान हमारे सामान में मिल जाता था। आनेवाले भाई सामान को दर्ज नहीं कराते थे। स्टेशन पर उतरते समय अपने सामान की कोई फिकर नहीं करता था। फिर पड़ाव पर पहुँचने के बाद सब लोग हमारे पास सामान की तलाश करने आते। इस तरह बीच में ट्रेन में चढ़े हुए एक भाई

के सामान को खोजने के लिए कनुभाई को एक बार कई स्टेशनों का सफर करना पड़ा था। सामान उठाने, ट्रेन में चढ़ाने, डिब्बे में ठीक ढंग से रखने और सफर समाप्त होने पर उसको उतारने का एक तंत्र हम लोगों ने बना लिया था। फिर भी बापू के आसपास जमा होने वाले शम्भू–मेले के कारण सामान के सम्बन्ध में किसी प्रकार के अनुशासन का पालन नहीं होता था। हाँ, हम लोगों को 'कुली–चार्ज' मिला या नहीं, यह देखने वाली बा बैठी रहतीं,तब तक तो कोई फिकर करने का कारण नहीं था।

बापू के लिए ठेठ कोने की जगह सुरक्षित रखी जाती थी। ऊपर की बर्थ हमारे लिए रहती थी। लेकिन एक बार ठीक बापू के ऊपर की बर्थ पर मैं अपना बिस्तरा लगाने लगा, तब कनुभाई और काका से डाँट खानी पड़ी। क्योंकि बापू के ऊपर की जगह पर कोई नहीं सोएगा, यह हमारी यात्रा का अलिखित नियम था। वैसे बापू अक्सर खिड़की के पास बैठते थे। लेकिन कभी–कभी आराम करने के लिए बीच की सीट पर भी जा बैठते थे।

लेकिन ट्रेन में बापू को आराम दुर्लभ था। दिन हो या रात का कोई भी समय हो, हर स्टेशन पर दर्शनार्थियों की जो भीड़ जमा हो जाती थी, वह उनको कहाँ चौन लेने देती थी। छोटे–बड़े हर स्टेशन पर गाड़ी प्लेट्फार्म पर लगते ही 'महात्मा गांधी की जय' के नारे सुनाई देते थे। गाड़ी छूटने पर भी यह जयघोष जारी ही रहते थे।

मैं जिस कालखण्ड का वर्णन कर रहा हूँ, वह है सन 1936 से 1940 के बीच का। स्वराज्य के आन्दोलन की दृष्टि से यह कालखण्ड मन्द ही कहा जाएगा। लेकिन दर्शनार्थियों के लिए कोई भी कालखण्ड मन्द नहीं था। रात को गाड़ी की बत्ती पर एक भूरे रंग की चड्डी हम लोग चढा देते थे, ताकि बापू कुछ देर सो सकें। यह चड्डी खास इसी उद्देश्य से बनाई गयी थी। लेकिन लोग टार्च की रोशनी उनके चेहरे पर फेकने की कोशिश करते थे। हम लोग खिड़की बन्द कर देते। भीड़ के लोग सन्डास की खिडकी के काँच भी तोड़ देते थे। वर्धा से दिल्ली ग्रैन्डट्रंक एक्सप्रेस से जाते और वापस आते समय झाँसी रात को ही पड़ता था। हर बार इस स्टेशन पर खिड़की तोड़ी जाती थी।

कभी–कभी काका लोगों से प्रार्थना करते थे, 'गांधीजी अभी सो रहे हैं, आप लोग जरा खामोश रहिए।' लोग जवाब देते, 'अजी, वे तो देवता हैं, उनको नींद की क्या आवश्यकता है?' इस जवाब से काका चिढ़ जाते और कहते,' अरे, उस देवता को तो आप लोग मन्दिर में बन्द करके रखते हैं। इस देव को तो घूमना पड़ता है। आपके लिए दिन–रात एक करना पड़ता है, क्या इन्हें आराम नही लेने देंगे ?

एक बार हमारी यात्रा में पं. जवाहरलालजी साथ थे। हर स्टेशन पर जमा होने वाली भीड़ और शोर को देखकर उन्होंने काका से कहा, 'महादेव, आज तुम आराम करो। भीड़ को संभालने का काम मैं करूँगा।' 'गांधीजी की जय' के साथ 'जवाहरलाल की जय' के नारे भी लगने लगे। पण्डितजी गरजकर बोले, 'दर्शन करने हों तो मेरे कर लो। गांधीजी आराम कर रहे हैं। उन्हें जगाने नहीं दूँगा।' लोगों ने सौदा किया,'आप से तो भाषण सुनेंगें, गांधीजी

के दर्शन करेंगे।' 'हमारा भाषण सुनना है तो उन्हें आराम करने देना होगा' पण्डितजी ने शर्त लगाई।

लोगों ने भाषण सुन लिया। बापू यह सब सुन रहे थे। लेकिन आँखें बन्द करके शरीर को आराम देने की चेष्टा कर रहे थे। लोगों का अनुशासन देखकर काका का दिल पिघल गया। गाड़ी छूटने का समय हुआ तब काका ने बापू से पूछा, 'जाग रहे हैं?' बापू बोले, 'यहाँ सोने का प्रश्न ही कहाँ है?' काका ने कहा, 'ये लोग बहुत शान्ति से खड़े थे, इनको दर्शन दीजिएगा?' पण्डितजी ने भी समर्थन किया। गाड़ी चल पड़ी तब कानपुर का पूरा स्टेशन 'महात्मा गांधी की जय' के निनाद से गूँज रहा था।

दूसरे एक स्टेशन पर तो पण्डितजी के लिए भी स्थिति संभालना कठिन हो गया। दिन का समय था। बापूजी इस डिब्बे में बैठे हैं यह देखकर एक भाई डिब्बे के बगल में खड़ा रहा। जैसे ही गाड़ी छूटी वह डिब्बे में चढने लगा। पण्डितजी चिल्लाये ,'इस डिब्बे में मत चढ़ो। इस में गांधीजी जा रहे हैं।' पहले तो उस भाई ने कानून बताया–'यह तो सामान्य डिब्बा है।इसमें किसी को भी सफर करने का अधिकार है, मेरे पास भी टिकिट है।' पण्डितजी लाल–पीले हो गए।बोले,'आप मुझे कानून सिखाना चहते हैं ?यह बताइये कि आप जानते थे कि नहीं इसमें गांधीजी जा रहे हैं ?' उस भाई ने ढ़ीली आवाज में कहा ,'जी हाँ,जानता था।'

'तो इसलिए आप इसपर चढ़े कि नहीं ?'

'जी नहीं! गाड़ी छूट रही थी इसलिए चढ़ गया था।'

'सरासर झूठ ! आप को नीचे उतार कर छोड़ूँगा।' यह कहकर पण्डितजी उसे हाथ पकड़कर उतारने लगे। इतने में बापू बीच में पड़े और उस भाई को चढ़ने दिया।'

पण्डितजी का गुस्सा बहुत देर तक कम नहीं हुआ।'कैसे बत्तमीज लोग होते हैं। गांधीजी के सामने झूठ बोलने में इनको शर्म नही आती है।' वह भाई आखिर तक कहता रहा कि मैं अचानक ही चढ़ गया हूँ। अगले स्टेशन पर वह उतर गया। यात्रा के दरमियान दिन के समय पहचान के लोग हर स्टेशन पर मिलने आते थे। जगह–जगह फलों के पिटारे,भोजन और नाश्ता ले आते थे। हम लालच भरी निगाह से 'कुली–चार्ज' को देखते रहते थे।

लेकिन बापू की लालचभरी निगाह तो दूसरी ही तरफ लगी रहती थी। हर स्टेशन पर बिना भूले वे 'हरिजन फण्ड' के लिए पैसा इकट्ठा करते थे। यह क्रम १९३४ से उनकी 'हरिजन यात्रा' से शुरु हुआ और ठीक अन्त तक जारी रहा। खिड़की में से बापू हाथ बाहर निकालकर पैसा माँगते थे। उनकी हथेली देखते–देखते पैसों से भर जाती। हम लोग भी हाथ या रुमाल लोगों के सामने फैलाते थे। मैं यह नहीं समझ पाता था कि लोग बापू के सिवा दूसरों के हाथ में क्यों पैसा देते थे। लेकिन देखा कि हम सबके हाथ पैसों से भर जाते थे। कभी–कभी तो एक स्टेशन पर जमा हुए फुटकर पैसों को गिनते–गिनते आगे का स्टेशन आ जाता था।

मेरे मन में कई बार प्रश्न उठता था कि क्या ये लोग 'बापू किस लिए पैसे माँग रहे हैं' यह समझते भी होंगे ? क्या घर जा कर यह लोग छुआछूत छोड़ देने वाले हैं ? इस तरह पैसे इकट्ठा करने से हरिजनों का क्या उद्धार होने वाला है? लेकिन मैं देखता था कि पैसे देने वालों की आँखों में श्रद्धा भरी होती थी। ये लोग महात्मा के दर्शन के लिए आते थे और साथ–साथ कुछ दक्षिणा दे जाते थे। 'हरिजन–फण्ड' शब्द तो वे जरूर सुनते होंगे। कुछ लोग उस शब्द का अर्थ भी समझते होंगे। लेकिन श्रद्ध ापूर्वक दर्शन के लिए आने वाली यह भीड़ एक बात जरूर समझती थी, ऐसा मुझे लगा। चाहे जितना व्यस्त रहने पर भी बापू देश के दरिद्रनारायण को नहीं भूलते हैं,इतना वे लोग जानते थे। कभी–कभी ऐसा भी होता था कि बापू कुछ लिख रहे हैं और इतने में स्टेशन आ गया , तो इधर लिखने का काम जारी रखते हुए बापू एक हाथ खिड़की के बाहर निकाल देते। ऐसे मौके पर वे माँगते भी नहीं थे, फिर भी हाथ में टपाटप पैसे आ गिरते थे। भारत की जनता मानो साक्षात दरिद्रनारायण की पूजा ही करती थी। गरीब–से–गरीब व्यक्ति भी दरिद्रनारायण के इस प्रतिनिधि को देखकर उस समय 'दानवीर' बन जाता था। सैंकड़ों वर्षों की गुलामी, दरिद्रता और अज्ञान होते हुए भी भारत की प्रजा में अब भी अगर कुछ खमीर बचा हुआ है तो वह उसकी इस श्रद्धा के कारण ही है।

यह श्रद्धा वैसे तो सारे प्रदेशों में है ,लेकिन खास करके बिहार और आन्ध्र में वह मूर्तिमन्त हो जाती थी। आन्ध्र प्रदेश के स्टेशनों पर दर्शनार्थियों की भीड़ में हिन्दी का शब्द जानने वाला शायद ही कोई होगा। लेकिन उस जनता को दर्शन से ही परम तृप्ति का अनुभव होता था।

हाँ, बिहार की जनता जरूर हिन्दी समझती है। लेकिन लाखों की उस भीड़ में गांधीजी के मुँह से निकलनेवाले शब्द उसके कानों तक थोड़े ही पहुँच सकते थे। फिर भी दूर–दूर के देहातों से कई दिन पैदल चलते हुए लोग बापू की ट्रेन जिस रास्ते से जाती होगी , उस रास्ते के रेलवे –स्टेशन पर पहुँच जाते थे। साथ में 'सत्तू' की पोटली बाँधकर लाते थे। भूख लगने पर सत्तू फाँक लेते थे और 'गांधीजी बबुआ जीवो हो राम' गाते हुए वापस जाते।

बिहार की भीड़ से परेशान हो कर कभी–कभी काका कह बैठते थे,' यह सब तुलसीदासजी की करामात है। उन्होंने रामायण में राम–दर्शन के लिए आने वाली भीड़ के स्तुतिस्तोत्र गा–गाकर लोगों को इस प्रकार पागल बना दिया है।' मैं हँसते हुए कहता था ,'काका, इस जमाने में तुलसीदास का यह काम तो आप ही कर रहे हैं, यह भूल जाते हो !'

डिब्बे में बैठे हुए लोग यह सुनकर खूब हँसने लगते। उनकी हँसी पूरी होते–होते अगला स्टेशन आ ही जाता।

चम्पारण जिले का एक प्रसंग मैं कभी नहीं भूलूँगा। उन दिनों अवध–त्रिहुत ट्रेन को देख कर काठियावाड़ी रियासतों की गाड़ी कई दरजे अच्छी थी, ऐसा कहना पड़ता है। रात में उस गाड़ी में कभी बत्ती जलती दिखाई दे, तो अपने को भाग्यवान समझो। रफ्तार ऐसी कि उसके साथ आदमी भी पैदल दौड़ सके। कुछ युवकों का एक झुण्ड गाड़ी की मन्द गति का लाभ ले कर उसके साथ दौड़ रहा था। कुछ लोग गाड़ी की छत पर चढ़ कर जयघोष के नारे लगाते थे और नीचे से दौड़ने वाले उसको दोहराते थे। बीच–बीच में कुछ लोग जंजीर खींच कर गाड़ी रोक लेते थे। एक जगह गाड़ी बहुत देर तक खड़ी रही तो काका नीचे उतर कर देखने गए। उन्होंने खबर दी कि गाड़ी के साथ दौड़ने वाले एक युवक को पीछे से किसीका धक्का लगा और वह पटरी पर गिरा। दूसरे लोगों ने उसे खींच लिया, फिर भी ट्रेन का एक चक्का उसके पैर पर से निकल गया। गार्ड के डिब्बे में उसे रखा गया। मुजफ्फरपुर के अस्पताल में उसे ले जा रहे थे। काका ने कहा, 'मैं उससे मिलकर आया हूँ। दोनों पाँव पर से गाड़ी का पहिया जाने के कारण घुटने तक के पाँव करीब–करीब कट गए हैं। उसके बचने की उम्मीद नहीं है। खून बहुत गया है। फिर भी लड़का होश में था। मैंने उसके सामने उस दुर्घटना के लिए अफसोस प्रकट किया तो लड़का कहने लगा,' उसमें अफसोस करने की क्या बात है? गांधीजी की गाड़ी के नीचे मैं कुचला गया,यह तो मेरा अहोभाग्य ही कहना चाहिए।'

काका की आँखें डबडबा गईं थीं। उन्होंने कहा, 'क्या उसके जितनी भक्ति हममें होगी ?'

(24 दिसम्बर 1924 को जन्मे नारायण देसाई, गाँधी जी के निजी सचिव महादेव देसाई के पुत्र थे। वे देश भर में घूम–घूम कर गाँधी–कथा सुनाते थे। उनका निधन 15 मार्च 2015 को हुआ।)

देश का अनूठा सचिवालय

सौर ऊर्जा से जगमग हुआ दिल्ली सचिवालय

बिजली बिल के बचे 68 लाख रुपये

दिल्ली सरकार का सचिवालय देश का पहला ऐसा सचिवालय बन गया है जो पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित है। दिल्ली सरकार के इस प्रयास से पिछले दिनों 68 लाख रुपये की बचत हुई जो बिजली बिल के रूप में देने पड़ते।

दिल्ली सरकार को इस उपलब्धि के लिए हाल ही में गोवा में आयोजित एक समारोह में आईपीपीएआई (इंडिपेंडेंट पावर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) पावर अवार्ड से सम्मानित किया गया। दिल्ली सचिवालय को पूरी तरह हरित सचिवालय बनाने के क्रम में बिजली विभाग 3 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर रहा है। 1 मेगावाट का संयंत्र चालू है जिससे अगस्त 2016 तक सरकार ने बिजली बिल के 68 लाख रुपये की बचत की। तीन मेगावाट का संयंत्र जल्द ही पूरी तरह सक्रिय हो जाएगा।

गोवा में 24 सितंबर को आयोजित समारोह में दिल्ली के ऊर्जा सचिव सुरेश कुमार जैन ने सरकार की ओर से अवार्ड ग्रहण किया। उन्होंने वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में केजरीवाल सरकार द्वारा उठाये जा रहे तमाम कदमों की जानकारी दी। सरकारी दफ्तरों और आवासीय इमारतों के छतों को सौर ऊर्जा संयंत्रों में बदलने के प्रयास को काफी सराहा गया। उन्होंने दिल्ली सौर ऊर्जा नीति–2016 के तहत उठाये जा रहे कदमों की विस्तार से जानकारी दी। इस नीति की जलवायु परिवर्तन पर बनी संयुक्त राष्ट्र समिति, ग्रीनपीस, वैकल्पिक ऊर्जा मंत्रालय आदि ने भी सराहा है।

श्री जैन ने बताया कि केजरीवाल सरकार देश की राजधानी को सौर ऊर्जा से संचालित शहर यानी सोलर सिटी में तब्दील करना चाहती है और इसकी शुरुआत सचिवालय से की गई है। गौरतलब है कि दिल्ली सरकार की सौर ऊर्जा नीति के तहत दिल्ली को 2020 तक 1,000 मेगावाट बिजली के उत्पादन के जरिए 'सोलर सिटी' बनाना है और इसे 2025 तक बढ़ाकर 2,000 मेगावाट करना है। सरकार ने छतों पर दो मीटर की उंचाई तक सौर पैनल लगाने के लिए भवन उपनियमों में संशोधन भी किया है। ■

पहली 'एमएमसी' सभा
अभिभावकों की क्लास में अफसरों ने कहा 'यस सर'

स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एसएमसी) के जरिये दिल्ली के स्कूलों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का सरकार का सपना शक्ल लेने लगा है। इन कमेटियों में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों सहित स्थानीय लोगों को सदस्य बनाया जाता है जो अपने इलाके के सरकारी स्कूल के कामकाज पर नजर रखते हैं। ऐसी कमेटियों की सभा (एसएमसी सभा) का पहला आयोजन बुराड़ी विधानसभा में हुआ। दिल्ली सरकार का इरादा ऐसी सभाओं के जरिये स्कूलों को विद्यार्थियों के अभिभावकों के प्रति जवाबदेह बनाना है।

बुराड़ी की सभा में 15 स्कूलों के एसएमसी सदस्य राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सिविल लाइन्स में इकट्ठा हुए। उन्होंने इस मौके पर शिक्षा विभाग के अफसरों के सामने स्कूलों से जुड़ी समस्याएँ गिनाईं।अफसरों ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे हर समस्या को दूर करने में जुटे हैं। इन सभाओं का मकसद भी यही है कि शिक्षा विभाग के लोग जमीनी हकीकत से परिचित हो सकें और समस्याओं को त्वरित गति से दूर करें।

इस सभा में दिल्ली के उपमुख्यमंत्री और शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव लाने को कटिबद्ध मनीष सिसोदिया भी उपस्थित थे। उन्होंने अभिभावकों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी समस्याएँ खुलकर बतायें। उन्होंने कहा कि एसएमसी सरकारी स्कूलों की हालत सुधारने के अभियान में बेहद सकारात्मक भूमिका अदा कर रही हैं। यह बैठक बेहद अहम है क्योंकि पहली बार अभिभावक और शिक्षा विभाग के लोग आमने–सामने बैठकर बात कर रहे हैं।

श्री सिसोदिया ने इस मौके पर तमाम कामों के लिए समय सीमा भी तय की और लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों को चेताया। एक अभिभावक ने मध्याह्न भोजन में खराब अनाज के इस्तेमाल की शिकायत की तो उन्होंने तुरंत ठेकेदार को तलब किया और एक हफ्ते में गुणवत्ता दुरुस्त करने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि अगर ठेकेदार ऐसा नहीं करता तो उससे काम छीन कर उस पर जुर्माना भी लगाया जाएगा।

एक अन्य अभिभावक ने मुकुंदपुर स्कूल में क्लासरूम के निर्माण में हो रही देरी की शिकायत की तो उप मुख्यमंत्री ने तुरंत लोक निर्माण विभाग और शिक्षा विभाग के अफसरों से वजह पूछी और काम के रास्ते आने वाली अड़चनों को जल्द दूर करने का निर्देश दिया।

एसएमसी सभा के प्रति अभिभावकों का उत्साह देखने लायक था। बड़ी तादाद में अभिभावकों ने इसमें हिस्सा लिया और उप मुख्यमंत्री की मुस्तैदी देखकर आश्वस्त हुए। कई अभिभावकों ने कहा कि सरकारी स्कूलों के प्रति सरकार की ऐसी गंभीरता किसी सपने की तरह है। भविष्य में हर विधानसभा में ऐसी सभाएँ आयोजित की जाएँगी ताकि सरकारी स्कूलों में आ रहे बदलावों को अभिभावक न सिर्फ महसूस कर सकें बल्कि हालात सुधारने में अपना योगदान भी दे सकें, जो दिल्ली सरकार का सपना है। ■

15 अक्तूबर को सरकारी स्कूलों में रही मेगा पीटीएम की धूम

शिक्षकों और अभिभावकों के बीच बना नया पुल!

दिल्ली के सरकारी स्कूलों की बदली तस्वीर का आईना है शिक्षक अभिभावक मीटिंग (पीटीएम)। 30 जुलाई को पहली बार आयोजित मेगा पीटीएम के बाद 15 अक्टूबर को एक बार फिर बड़े पैमाने पर यह आयोजन किया गया जिसमें अभिभावकों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और अपने बच्चों की कमियाँ और अच्छाइयाँ जानीं। उन्हें पहली बार रिपोर्ट कार्ड दिये गये। खास बात यह थी कि इस बार पीटीएम में डॉक्टर भी शामिल हुए जिन्होंने बच्चों के स्वास्थ्य की जानकारी ली और अभिभावकों को जरूरी सलाह दी।

सरकारी स्कूलों को निजी स्कूलों से बेहत बनाने के लक्ष्य को पूरा करने में जुटी दिल्ली सरकार ने पहले ऐलान किया था कि साल में दो बार पीटीएम का आयोजन होगा, लेकिन शिक्षकों और अभिभावकों के उत्साह को देखते हुए इसे हर तीन महीने पर आयोजित करने का फैसला किया गया है। उपमुख्यमंत्री और शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए जुटे मनीष सिसोदिया ने दूसरी मेगा पैरेंट–टीचर मीटिंग को बेहद सफल बताते हुए कहा कि पीटीएम शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों के बीच संवाद स्थापित करने का जरूरी माध्यम है। छात्रों के

रिपोर्ट कार्ड उनके माता–पिता को देना बेहद अहम है। इससे अभिभावकों को शिक्षा की गुणवत्ता तथा अपने बच्चों की कमी को समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभिभावकों के साथ शिक्षकों के संपर्क का पीटीएम एक बेहतरीन जरिया है। उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार द्वारा संचालित लगभग 1,000 स्कूलों में पीटीएम आयोजित करने के लिए अलग से बजट को मंजूरी दी गई है। पीटीएम के दौरान सरकार अपने स्कूलों में शिक्षा में किए गए सुधार की पहल से अभिभावकों को अवगत करा रही है।

पहली बार की तरह इस बार भी पीटीएम को सफल बनाने के लिए बड़े पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया गया था। नतीजा यह हुआ कि दिल्ली सरकार की इस पहल से जुड़ने में अभिभावकों ने बेहद रुचि दिखाई और छत्रों के लिए भी यह दिन खास रहा। वे अपनी उपलब्धियों से अपने अभिभावक को परिचित कराना चाहते थे। गौरतलब है कि सरकारी स्कूलों में बड़े पैमाने पर गरीबों के बच्चे पढ़ते हैं जो समय और साधन की कमी की वजह से बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान नहीं दे पाते। बड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी है जो खुद पढ़े लिखे नहीं हैं।

इस मौके पर अभिभावकों ने अपने बच्चों से जुड़ी तमाम परेशानियों से भी शिक्षकों को अवगत कराया। किसी ने ज्यादा टीवी देखने की शिकायत की तो किसी ने बात न मानने की। यही नहीं, वे बच्चों के जिद्दीपन को दुरुस्त करने की अपील शिक्षकों से करते नजर आये। वहीं शिक्षक भी समझाते नजर आये कि अभिभावक अपने बच्चों के साथ ज्यादा वक्त गुजारें और उससे रोजाना स्कूल में हुई पढ़ाई और होमवर्क के बारे में पूछें।

मेगा पीटीएम में अभिभावक काफी रुचि दिखा रहे हैं। हमारे यहां करीब 90 प्रतिशत अभिभावक मीटिंग में आए। मीटिंग से बच्चे व अभिभावक दोनों को फायदा हो रहा है। वहीं, हमें भी अभिभावकों के सामने अपनी बात रखने का मौका मिल रहा है।

– भूपिंदर कौर, वाइस प्रिंसिपल, अरुणा आसफ अली, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, तुगलकाबाद एक्सटेंशन

स्कूलों में इस पीटीएम से अभिभावकों व शिक्षकों में संवाद की अच्छी शैली विकसित हो रही है। इससे दोनों पक्षों को फायदा हो रहा है। दोनों पक्ष एक–दूसरे के सामने अपनी बात रख सकते हैं। शिक्षक उन्हें बताते हैं कि घर पर वह बच्चों की पढ़ाई में कैसे सहयोग कर सकते हैं।

– अशोक कुमार, मेंटर टीचर

पीटीएम में आकर बच्चों की परफॉर्मेंस का पता चलता है। बहुत सी बातें हैं जो बच्चे घर में नहीं बताते हैं। स्कूल आकर यह तो पता चल जाता है कि बच्चे यहां कैसे पढ़ते हैं, सपाठियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और शिक्षकों की नजर में उनकी क्या इमेज है।

– प्रेमलता, अभिभावक

यह अच्छी पहल है। इससे बच्चों के साथ ही हमें भी स्कूल का माहौल, यहां शिक्षकों व स्टाफ से संवाद करने का मौका मिलता है जिससे एक फ्रेंडली माहौल बन सके। बच्चों की पढ़ाई के बारे में दी जाने वाली टिप्स हम घर पर उनसे फॉलो करवाते हैं।

– शबनम, अभिभावक

कुल मिलाकर पीटीएम से अभिभावकों में शिक्षकों और सरकारी स्कूल के प्रति भरोसा बढ़ा है। शिक्षकों ने भी इस परिवर्तन को महसूस किया। उनके मुताबिक जिन बच्चों के मां–बाप, दोनों काम करते हैं उनमें से कोई एक छुट्टी लेकर पीटीएम में जरूर शामिल हुआ। कुछ बच्चों के साथ उनके दादा–दादी या नाना–नानी पीटीएम में शामिल होने आये। यह बताता है कि अभिभावकों ने इसे कितनी अहमियत दी है। ■

अंतर्राष्ट्रीय बुज़ुर्ग दिवस पर ऐलान

1 लाख और बुज़ुर्गों को पेंशन देगी सरकार

अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस यानी 1 अक्टूबर को दिल्ली सरकार ने एक अहम फैसला किया। सरकार ने एक लाख बुजुर्ग नागरिकों ने नई पेंशन योजना का ऐलान किया। दिल्ली सरकार अभी तक 3,85,907 बुजुर्गों को 1000–1500 रुपये की मासिक पेंशन देती है जो देश में सबसे ज्यादा है।

दिल्ली सरकार बुजुर्गों को लेकर काफी संवेदनशील है। सरकार की योजनाओं के तहत अभी 2 वृद्धाश्रम संचालित हो रहे हैं। भविष्य में ऐसे 10 और वृद्धाश्रम चालू करने की योजना है। यही नहीं, अरविन्द केजरीवाल सरकार 94 निजी वृद्धाश्रमों को आर्थिक मदद भी प्रदान करती है।

इन वृद्धाश्रमों में बुजुर्गों को तरह–तरह की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल किया जाता है, ताकि वे अपना खाली समय गुजार सके और किसी भी तरह का तनाव उन्हें छू न सके। सरकार का मानना है कि बुजुर्ग इस समाज की नींव है और उनकी देखरेख करना हम सबका कर्तव्य हैं। ये ऐसी जड़ीबूटी की तरह होते हैं, जो चाहे जितनी पुरानी हो जाये, गुणवत्ता और महत्ता बनी रहती है। कई बुजुर्ग अपनी देखरेख खुद नही कर सकते। कई बार ऐसा वक्त आता है कि शारीरिक और मानसिक तौर पर माता पिता, बच्चों पर आश्रित हो जाते है। लेकिन कई बार उन्हें पर्याप्त ध्यान नहीं मिल पाता और बच्चों से विवाद तक की नौबत आ जाती है। दिल्ली सरकार ने ऐसे विवादों के तुरंत निपटारे के लिए ट्राइब्यूनल गठित किए हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने दुनिया भर में बुजुर्गों के सम्मान और देख–रेख के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए 14 दिसंबर 1990 को फैसला लिया था कि हर साल 1 अक्टूबर को विश्व बुजुर्ग दिवस मनाया जाएगा। 1 अक्टूबर 1991 को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाया गया। भारत में बुजुर्गों की सेवा, सुरक्षा और उनके सम्मान की रक्षा के लिए कई कानून बनाए गए। 1999 में बुजुर्गों के लिए एक राष्ट्रीय नीति तैयार की गई जिसका मकसद बुजुर्गों की उचित देखभाल के लिए प्रोत्साहित करना था। इसके अलावा 2007 में माता–पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण–पोषण विधेयक संसद में पारित किया गया। इसमें माता–पिता के भरण–पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। ■

दिल्ली में 'रीडिंग मेला' की धूम!

सरकारी स्कूल के बच्चों ने की शब्दों से दोस्ती!

दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों के हाथ में किताबें सिर्फ दिखाने के लिए न हों, वे उन्हें बखूबी पढ़ भी पाएँ–– दिल्ली सरकार का यह संकल्प जल्द से जल्द साकार हो, इसके लिए शिक्षा विभाग ने पूरी ताकत लगा दी जिससे कि 2016 का बाल दिवस एक नई रंगत लेकर आया।

'एवरी चाइल्ड कैन रीड' यानी हर बच्चा पढ़ सकता है नाम से शिक्षा निदेशालय ने बाकायदा एक अभियान शुरू किया। इसके तहत स्टेट कौंसिल फॉर एजूकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एससीईआरटी) ने स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एसएमसी) के सदस्यों को प्रशिक्षण दिया जिसके तहत 14 नवंबर यानी बाल दिवस तक हर रविवार को रीडिंग मेले आयोजित किये गये।

इस योजना का मकसद यह सुनिश्चित करना था कि हर बच्चा अपनी किताबें बिना किसी हिचक के पढ़ ले। दरअसल, पिछले दिनों हुए एक सर्वे से यह चौकाने वाला नतीजा निकला था कि फेल न करने की नीति (नो डिटेशन पालिसी) के कारण विद्यार्थी अगली कक्षाओं में पहुँज जाते हैं, लेकिन उन्हें पिछली कक्षा के स्तर का कोई ज्ञान नहीं रहता। वे किताबें भी ठीक से नहीं पढ़

पाते जबकि पाठ्यक्रम का स्तर बढ़ता जाता है। नतीजा यह होता है कि उनकी पढ़ाई से रुचि खत्म हो जाती है।

दिल्ली के उप मुख्यमंत्री और शिक्षा विभाग की कमान संभाल रहे मनीष सिसोदिया ने इस समस्या को काफी गंभीरता से लेते हुए मिशन 2018 की शुरूआत की थी जिसके तहत बच्चों को पूरी तरह अपनी कक्षा के योग्य बनाया जाना था। उन्होंने इसके लिए सामुदायिक प्रयास करने का निर्देश दिया जिसका नतीजा 'रीडिंग मेला' के रूप में सामने आया। इस अभियान में स्कूल मैनेजमेंट कमेटियों की बड़ी भूमिका रही। कमेटी सदस्यों ने सामुदायिक स्थलों या स्कूलों में आयोजित रीडिंग मेलों को आयोजित करने और सफल बनाने में योगदान दिया। उप मुख्यमंत्री सिसोदिया ने कहा, "शिक्षा में बदलाव लाने की हमारी कोशिशों को उस समाज के सदस्यों की सक्रिय सहायता की आवश्यकता है जहाँ से वे आते हैं। अगर शैक्षिक सख्ती और सीखने का माहौल बनाया जाए तो

बच्चे शिक्षा की शक्ति हासिल करने के लिए प्रेरित होंगे। 'रीडिंग मेला' स्कूलों, अभिभावकों, बच्चों और समाज को पहली बार कक्षाओं के बाहर जुटाएगा ।"

रीडिंग मेले के तहत बच्चों और उनके अभिभावकों को जोड़ने वाली विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। कोशिश यह थी कि अक्षर, शब्द, वाक्य और पैराग्राफ पढ़ने की बच्चों की योग्यता निखारी जा सके। शुरू के कुछ मेला, नमूने के तौर पर आयोजित किये गये जिनसे मिले अनुभवों के आधार पर लगभग 250 स्थानों पर'रीडिंग मेला' लगाये गये। मेलों को लेकर विद्यार्थियों में भी खासा उत्साह और दिलचस्पी देखी गई।

इस पहल का मकसद था कि बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों से पूरा समाज जुड़ सके। पढ़ने और सीखने का माहौल बने। साथ ही, बच्चों के पढ़ने के स्तर और उनकी शैक्षिक प्रगति के संबंध में अभिभावकों की जागरूकता और भागीदारी बढ़े। दिल्ली सरकार अपने सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि किफायती, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सबको उपलब्ध हो सके। चुनौती 2018 और "एवरी चाइल्ड कैन रीड" प्रोग्राम इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम हैं। दिल्ली सरकार ने एक अभिनव और प्रभावी रणनीति बनाकर सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को निजी स्कूलों से बेहतर माहौल और शिक्षा दिलाने का प्रयास किया है। 'चुनौती 2018' ने शिक्षकों, बच्चों और अभिभावकों में नई ऊर्जा भरी है । ■

दिल्ली सरकार बाँटेगी 51 हज़ार टैब

शिक्षक लेंगे टैब पर हाज़िरी, अभिभावकों को मिलेगा मैसेज

2017 की शुरुआत के साथ दिल्ली के स्कूल हाईटेक होने जा रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन में जुटी दिल्ली सरकार ने ने 51 हजार टैब बाँटने का फैसला किया है। इसमें 50 हजार टैब शिक्षकों और एक हजार टैब प्रधानाचार्यो व शिक्षा विभाग के अफसरों को दिए जाएंगे। इस योजना पर करीब 50 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। प्रधानाचार्यो, स्थायी व अनुबंधित शिक्षकों को मार्च 2017 से पहले टैब उपलब्ध करा दिए जाएंगे। यानी अगला सत्र बिलुकल हाईटेक होगा।

दरअसल, दिल्ली सरकार अपने बजट का करीब 25 फीसदी शिक्षा पर खर्च कर रही है। ऐसा देश में पहली बार हो रहा है। इरादा सरकारी स्कूलों की दशा और दिशा को पूरी तरह बदल देना है ताकि यहाँ पढ़ने वाले बच्चों में किसी तरह की हीनभावना न रहे। पिछले दिनों उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता के लिहाज से महत्वपूर्ण प्रयोग करने वाले फिनलैंड सहित अन्य देशों का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने पढ़ाने की तकनीक व अत्याधुनिक उपकरणों के प्रयोग से गुणवत्ता में सुधार की जानकारी हासिल की।

शिक्षामंत्री सिसोदिया के इसी दूरगामी सोच का नतीजा है शिक्षकों को हाईटेक बनाना। शिक्षकों को टैब मिलेगा तो उन्हें बच्चों का रिकॉर्ड रजिस्टर पर अलग–अलग नहीं रखना होगा। टैब के माध्यम से ही सभी रिकार्ड एक जगह पर रख सकेंगे। टैब इंटरनेट के माध्यम से सेंटर सर्वर से जोड़ा जाएगा। इसमें फीड होने वाली जानकारी प्रधानाचार्य सहित शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के पास भी तुरंत पहुंच जाएगी। इस तरह दिल्ली सरकार अपने स्कूलों में पढ़ने वाले 16 लाख बच्चों के बारे में पूरी तरह अवगत रहेगी।

शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित मेगा पीटीएम में यह बात भी सामने आई थी कि कई बच्चे घर से निकलते हैं लेकिन स्कूल की जगह कहीं और चले जाते हैं। टैब के माध्यम से स्कूल न जाने वाले बच्चों की हरकतों पर भी लगाम लगाई जा सकेगी। हर बच्चे को एक यूनीक नंबर दिया जाएगा। इस नंबर के आधार पर उसकी हाज़िरी लगेगी। टैब में दैनिक हाजिरी भरते ही बच्चे के अभिभावक के मोबाइल पर मैसेज पहुंचेगा कि उनका बच्चा स्कूल पहुँच गया है।

टैब में बच्चों की दैनिक जानकारी फीड होने के साथ ही बच्चों का व्यक्तिगत मूल्यांकन करना भी आसान हो जाएगा। अभी अधिकतर शिक्षकों को पता ही नहीं होता कि बच्चे किस विषय में कमजोर हैं और कहा सुधार की गुंजाइश है। टैब के माध्यम से बच्चों को जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। ■

इंद्रप्रस्थ भारती : प्रश्नाकुलताओं का खुला स्पेस

(दिल्ली हिंदी अकादमी की मासिक पत्रिका इंद्रप्रस्थ भारती इन दिनों अपने तेवर और कलेवर की वजह से चर्चा में है। प्रस्तुत है शुरुआती तीन अंकों की समीक्षा, ओम निश्चल की क़लम से।)

दिल्ली में नई सरकार के गठन के बाद से पुर्नगठित हिंदी अकादमी की संचालन समिति ने हिंदी के हित में जो अहम निर्णय लिया वह था हिंदी अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका इंद्रप्रस्थ भारती का मासिक प्रकाशन। अकादमी के उपाध्यक्ष का पद सम्भालने के बाद से ही कथाकार मैत्रेयी पुष्पा की यह इच्छा थी कि पत्रिका मासिक निकले जिससे हिंदी में विचार विमर्श का एक और सशक्त मंच तैयार हो। इंद्रप्रस्थ भारती का मासिक प्रकाशन उनकी इसी प्रतिश्रुति का प्रतिफल है।

जुलाई 2016 से प्रकाशित पत्रिका के अब तक तीन अंक निकल चुके हैं जिसने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में एक हलचल और सुगबुगाहट तो पैदा की ही है, साहित्यिक पत्रिकाओं के बीच यह लगभग पारिवारिक साहित्यिक पत्रिका का वही स्वरुप ग्रहण कर रही है, जैसी किसी वक्त धर्मयुग एवं साप्ताहिक हिंदुस्तान का हुआ करता था।

इंद्रप्रस्थ भारती का जुलाई 2016 अंक बड़े सुघर कलेवर में निकला है। मृणाल पांडे जी के उपन्यास **सहेला रे** के अंश, सुभाष पंत की कहानी **घोड़ा,** मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी : **किरदार**, सुशील सिद्धार्थ के व्यंग्य लेख : **शोक सभा के आयाम**, यश मालवीय के गीतों, शायक आलोक की कविताओं, असीमा भट्ट के प्रेमपत्र, सूर्यनाथ सिंह की कहानी पर केंद्रित दिनेश कुमार के आलोचनात्मक आलेख, महादेवी वर्मा पर सुधा सिंह के आलेख, दंगे में प्रशासन पर पूर्व पुलिस उच्चाधिकारी विकासनारायण राय के वैचारिक आलेख, गटर में मौतें और अनसुनी चीखें विषयक भाषा सिंह के मार्मिक रिपोर्ताज, बदलते हुए गांव की आबोहवा पर चरण सिंह पथिक के वृत्तांत व आदमी की निगाह में औरत पर फिल्मकार जयप्रकाश चौकसे की तत्वान्वेषी वैचारिक समन्विति के साथ खुद मैत्रेयी जी का संपादकीय इतना विचारोत्तेजक है कि कई लेखकों ने उसे अपनी फेसबुक वाल पर साझा किया है।

इंद्रप्रस्थ भारती का अगस्त 2016 अंक आजादी पर आजाद सवालों, नई रचनाओं, नए सवालों, नए विमर्शों और नए अवगाहनों के साथ आया है। इस अंक में विवेक मिश्र की कहानी **गुड़हल,** महेश सिंह की कहानी **ज्ञान्ती,** नूर जहीर की कहानी **चकरघिन्नी** और अजीत तोमर की कहानी **प्रेमपत्र** प्रकाशित हुई है। दीपक गुप्ता, पंकज श्रीवास्तव, राजकुमारी की कविताएं/ग़ज़लें रचनात्मक आस्वाद से भरपूर हैं। सुशील सिद्धार्थ के व्यंग्य में अवध का विट है जो महानगर की संस्कृति में रच बस कर और परवान चढ़ा है। कभी दुष्यंत कुमार ने लिखा था, मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं। वह गजल आपको सुनाता हूं। सुशील सिद्धार्थ की भोगी हुई दुनिया के अनुभव इतने जीवंत हैं कि उनके नैरेटिव में जैसे बह जाना होता है। आदिवासी प्रतिरोध और उलगुलान की संस्कृति पर रुपक राग ने विस्तार से लिखा है जो कि शोध और विश्लेषण का विषय है। गांव के बदलते अंतःकरण पर दुलाराम सहारण को पढ़ना राजस्थान के गांवों की रूह से गुजरना है क्योंकि राजस्थान के गांवों की

गाथा कुछ अलग ही है। राजेश जोशी के वृत्तांत **किस्सा कोताह** पर वैभव सिंह ने समीक्षा लिखी है और कहानी चर्चा के अपने स्तंभ में दिनेश कुमार ने संजय कुंदन की कहानी **श्यामलाल का अकेलापन** पर लिखा है। प्रतिरोधी चेतना के लेखक एवं दलित चिंतक मुद्राराक्षस पर स्मृति आलेख के साथ दिवंगत नीलाभ से अविनाश मिश्र की बातचीत पठनीय है। फेसबुक से –– स्तंभ में निदा नवाज, कृष्ण कांत, अविनाश दास, नवनीत पांडे, नीलिमा शर्मा व ताराशंकर के इंदराज सोशल मीडिया में विवेकसम्मत रचनात्मकता का सुबूत देते हैं। इस अंक में विश्व विद्यालयीन नई पीढ़ी के रचनाकारों में आयुष गुप्ता, मेघा शर्मा, सुरेन्द्र कुमार और सविता पाठक की रचनाएं प्रकाशित की गयी हैं। विरासत और धरोहर में क्रमशः नागार्जुन की कुछ कविताएं और कमलेश्वर की कहानी **राजा निरबंसिया** प्रकाशित है, पुराने चावल का स्वाद ही कुछ अलग होता है, इसे इन रचनाओं से गुजरते हुए महसूस होता है।

मिर्जा मुहम्मद हादी रुसवा की उमराव जान अदा का किस्सा इतिहास और किंवदंतियों से मिल कर बना है। उसे लेकर नीरा जलक्षत्रि का आलेख : मेरा जीवन मेरी कहानी उपन्यास और उस पर बनी फिल्म पर एक सुचिंतित नजरिया पेश करता है। आदमी की निगाह में औरत स्तंभ में मनोज वाजपेयी के विचार : मेरी दुनिया की महिलाएं वाजपेयी के दृष्टिकोण का परिचायक है।

और अंत में मी टीवी बोलतोय के तहत नवीन कुमार के बिंदास बोल : हे गाय तुम्हारे चरणों में..... गाय केंद्रित आस्था के ज्वार की गवाही तो देता ही है, समकालीन राजनीति में गाय की प्रासंगिकता और उपयोगिता की भी पूरी खबर लेता है।

इंद्रप्रस्थ भारती का सितंबर 16 अंक चुनिंदा कहानियों से लैस है। ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानी **ओल्ड होम में एक सुबह** गहरा प्रभाव छोड़ती है। सितंबर अंक का विरल आकर्षण हैं रमाशंकर विद्रोही की कविताएं। रेणु की कहानी **तीर्थोदक** की चर्चा बहुत कम हुई है पर है यह अत्यंत मार्मिक कहानी। इसे पाठक पढ़ कर रेणु की किस्सागोई की थाह पा सकते हैं। लंबी कहानियों की लेखिका उपासना की कहानी **मुक्ति** प्रसव के अंतर्द्वंद्व का बारीक चित्रण है तो मदुला शुक्ल की कहानी अवधी परिवेश की कहानी है जहां स्त्रियां जैसे मार खाने की लिए ही पैदा होती हैं। **छोटकी फिर कुटात बा** कहानी उस स्त्री की कहानी है जिसे बाप गरीबी में जैसे तैसे ब्याहता है फिर भी ससुराल को संतोष नहीं होता। औरतों के प्रपंच, ईर्ष्या कलह की बारीकी से कलई उधेड़ती यह कहानी अचानक हृदय में एक हूक सी भर देती है।

इंद्रपस्थ भारती की प्रधान संपादक मैत्रेयी जी हैं तो हाशिए की आवाजें मुखर होंगी ही। भाषा का रिपोर्ताज सड़क के बच्चों की आंखो में पलते सपने और दस्यु फूलन देवी की मां से बातचीत पढ़े जाने की मांग करते हैं। आदमी की निगाह में औरत विषय पर निगाह डाली है इस बार डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी ने। स्त्री को लेकर जिस तरह पौरुषेय शक्तियां हावी होती दिखती हैं, उनकी चिंताएं वाजिब हैं। गांव के तालाब पर कवि हरिराम मीणा तथा कविता को लेकर युवा लेखक आशीष मिश्र के आलेख पठनीय हैं तों विश्वविद्यालय कार्नर से गंगा सहाय मीणा की कहानी **हरिया की याचिका** भी अच्छी कहानियों में शुमार किये जाने योग्य है।

एक बड़े संपादक का कहना था, कोई भी साहित्यिक पत्रिका कविताओं के चयन और उनके स्तर से जानी जाती है। संयोग से यह अंक कविताओं के मायने मे समृद्ध है। पहले के दो अंको की तुलना में। विश्वनाथ सचदेव की कविताएं तो हमारे लिए अब विरासत की तरह हैं। पर चेतन क्रांति की कविताएं बेजोड़ हैं –– अपने कथ्य अंदाजे बयां और छंद के धाकड़ प्रयोग की दृष्टि से भी। लुगुन की कविताएं भी निराश नही करतीं। युवा लेखकों की रचनाएं भी ध्यातव्य हैं। जहां एक पन्ने का सार्थक व्यंग्य लिखना मुश्किल होता है वहां सुशील सिद्धार्थ ने लात के महत्व पर तीन पेजी व्यंग्य लिख कर सिद्ध कर दिया है कि वे लात से लेकर किसी भी शास्त्रीय मुद्दे पर उसी कुशलता से लिख सकते हैं। आदिवासियों के ज्वलंत मुद्दे की रूह में प्रवेश करते उपन्यास **लाल लकीर** पर आलोचक वीरेंद्र यादव का आलोचनात्मक आलेख एक प्रासंगिक ध्यानाकर्षण है। हृदयेश जोशी का यह उपन्यास आदिवासियों के अस्तित्व की जद्दोजहद का दस्तावेज है।

और अंत में मी टीवी बोलतोय के तहत नवीन कुमार का आलेख **इतिहास से भागता टीवी**..... तथा बतौर उपाध्यक्ष, कथाकार मैत्रेयी पुष्पा का विचारपूर्ण स्तंभ। इदन्न मम। गुरु कुम्हार शिष कुम्भ। शिक्षकों और कारोबारी बनती जा रही शिक्षा प्रणाली पर दो टूक विचार। और दंगे में प्रशासन–एक बार फिर प्रशासन के दागदार चेहरे की नई व्याख्या करता है।

इंद्रप्रस्थ भारती के तीनों अंक रचना, संपादन और प्रासंगिकता तीनों दृष्टियों से पठनीयता और स्तरीयता की कसौटी पर अच्छे बन पड़े हैं।

इंद्रप्रस्थ भारती, जुलाई, अगस्त व सितंबर 2016 अंक। प्रधान संपादक : मैत्रेयी पुष्पा, संपादक जीतराम भट्ट। परामर्श विजय किशोर मानव। प्रकाशक : हिंदी अकादमी दिल्ली। मूल्य रुपये 30/–

संक्षेप में...

सातवाँ वेतन आयोग लागू

दिल्ली सरकार ने 7वें वेतन आयोग की सिफारिशें अगस्त से ही लागू करने का फैसला किया है। अगस्त के बढ़े हुए वेतन के साथ ही 1 जनवरी, 2016 से जुलाई, 2016 तक के बकाया वेतन (एरियर) की राशि भी एकमुश्त दी जाएगी। वित्त विभाग के उप सचिव ने सभी विभाग प्रमुखों को इसके लिए सर्कुलर जारी कर दिया है। वित्त विभाग के उप सचिव मनोज कुमार की तरफ से जारी सर्कुलर के साथ केंद्र सरकार की तमाम अधिसूचना और कार्यालय ज्ञापन की प्रतियां भी अटैच की गई हैं। कॉपी लेखा नियंत्रक को भी भेजी गई है। सभी विभागों के वेतन और खाता कार्यालय (पीएओ) से कहा गया है कि पूर्व में इसकी तैयारी कर लें। सरकार ने चालू वित्त वर्ष के बजट में 7वें वेतन आयोग के हिसाब से प्रावधान कर दिए थे। ऐसे में 7वें वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने में किसी तरह की आर्थिक दिक्कत नहीं होगी।

शिक्षक के परिजनों को एक करोड़

दिल्ली सरकार ने एक सरकारी स्कूल के शिक्षक मुकेश कुमार की हत्या पर गहरा दुख जताते हुए उनके परिजनों को एक करोड़ रुपये सम्मान राशि बतौर देने का ऐलान किया है। 12वीं क्लास के दो बच्चों ने शिक्षक मुकेश कुमार की हत्या कर दी थी। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने इसे बेहद चिंताजनक और जघन्य अपराध बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षक के परिवार को पहुंची क्षति की भरपाई तो नहीं हो सकती लेकिन परिवार को तुरंत आर्थिक मदद दी जा रही है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार शिक्षकों का सम्मान करती है और मानती है कि शिक्षक का योगदान भी सीमा पर खड़े सिपाही जैसा ही महान है।

स्कूलों में सुसज्जित स्टाफ़ रूम

दिल्ली के सरकारी स्कूलों के स्टाफ रूम की कायापलट होगी। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के निर्देश पर शिक्षकों के बैठने के कमरे यानी स्टाफ रूम को आधुनिक शक्ल दी जाएगी। नया रंग–रोगन, नया फर्नीचर, साज–सज्जा के साथ इन कमरों में चाय–कॉफी की वेंडिंग मशीन भी लगेगी जिसका इस्तेमाल शिक्षकगण बिना किसी पैसे के कर सकेंगे। उपमुख्यमंत्री के मुताबिक उन्होंने तमाम सरकारी स्कूलों के दौरे में पाया कि स्टाफ रूमों की हालत बेहद खराब है। शिक्षक स्कूल में रोजाना आठ घंटे पढ़ाता है तो उसके लिए सम्मानजनक व्यवस्था करना सरकार की जिम्मेदारी है।

सडकों से हटेंगी पुरानी बसें

दिल्ली की सड़कों से डीटीसी की पुरानी स्टैंडर्ड फ्लोर बसें हटाई जा रही हैं। 2013 में ऐसी बसों की तादाद 1500 थी, जब अब घटकर 340 रह गई है। डीटीसी की योजना है कि 31 दिसंबर तक ऐसी सभी बसों को सड़क से हटा लिया जाए। इन बसों ने अपनी उम्र पूरी कर ली है। फिलहाल इन्हें दूर–दराज के रूटों पर चलाया जाता है। आउटर दिल्ली के रूटों पर ऐसी बसें ज्यादा दिखती है, लेकिन सरकार अब इन्हें हटाकर नई बसें लाने की योजना पर तेजी से काम कर रही है।

गेस्ट टीचर्स को फ़िक्स्ड सैलरी

दिल्ली सरकार अतिथि शिक्षकों से किया गया एक बड़ा वादा निभाने की तैयारी कर रही है। दिल्ली अतिथि शिक्षक संघ ने सरकार से नियमित शिक्षको की तरह, उन्हें भी निर्धारित वेतन देने की माँग की थी। इस संबंध में सरकार ने तीन सदस्यीय हाईलेवल कमेटी बनाई थी जिसने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंप दी है जिस पर सरकार आगे की कार्यवाही कर रही है। उम्मीद जताई जा रही है कि अतिथि शिक्षकों को अभी के मुकाबले दोगुना वेतन मिल सकेगा। मौजूदा व्यवस्था में उन्हें दैनिक आधार पर वेतन मिलता है। अब उन्हें न सिर्फ निर्धारित वेतन मिलेगा बल्कि 8 आकस्मिक अवकाश भी मिलने की भी चर्चा है।

7 हज़ार के.वी सौर ऊर्जा का उत्पादन

दिल्ली में सौर ऊर्जा का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है। उपभोक्ताओं ने घरों और दफ्तरों पर कुल मिलाकर 206 संयंत्र लगाये हैं। बीएसईएस के मुताबिक इससे 7 हजार किलोवाट सौर ऊर्जा का उत्पादन होने लगा है। कंपनी के मुताबिक 50 और प्लाटों में सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने की प्रक्रिया चल रही है। कंपनी के मुताबिक एक किलोवाट क्षमता के संयंत्र पर करीब 80 हजार रुपये खर्च आता है। लेकिन एक बार खर्च होने के बाद फिर यह बिजली काफी सस्ती पड़ती है। साथ ही, प्रदूषण से भी राहत मिलती है। यही वजह है कि लगातार सौर ऊर्जा संयंत्रों के प्रति दिलचस्पी बढ़ती जा रही है।

दिल्ली में प्रदूषण बढ़ा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली दुनिया का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर हो गया है। दिल्ली सरकार ने इस पर गहरी चिंता जताते हुए तमाम कदम उठाये हैं। पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन ने सरकारी एजेंसियों को इस संबंध में जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया। उन्होंने निर्देश दिया कि सूखे पत्तों, कूड़ा और प्लास्टिक का सामान खुले में जलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। उन्होंने म्युनिसिलप संस्थाओं और भूमि स्वामी एजेंसियों के साथ नियमित बैठक का भी निर्देश दिया। दिल्ली में पड़ोसी राज्यों में फसलों के अवशेष जलाने से भी प्रदूषण बढ़ता है, खासतौर पर जब ठंड में हवा का निचला हिस्सा ठंडा हो जाता है और प्रदूषण के कण सतह पर ही रह जाते हैं। ■

ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ 'ਤੇ ਸਨਮਾਨਤ ਹੋਏ ਦਿੱਲੀ ਦੇ 91 ਅਧਿਆਪਕ

ਅਧਿਆਪਕ ਹਨ ਅਸਲੀ ਹੀਰੋ-ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ

''ਅਧਿਆਪਕ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਮਜ਼ਬੂਤ ਸਤੰਭ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਪੱਧਰ ਤੇ ਪ੍ਰੋਤਸਾਹਿਤ ਕਰਨ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਉਹ ਸਮਾਜ ਦੇ ਨਿਰਮਾਣ ਦੀ ਆਪਣੀ ਭੂਮਿਕਾ ਅਗਵਾਈਕਾਰੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਿਭਾ ਸਕਣ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਇਕ ਪੂਰੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਸਿਖਿਅਤ ਅਤੇ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨ ਦੀ ਜਿੰਮੇਂਦਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਜੋ ਭਾਰਤ ਦਾ ਭਵਿਖ ਘੜ੍ਹ ਰਹੇ ਹਨ''

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਦੇ ਇਸ ਐਲਾਨ ਤੇ ਪੂਰਾ ਤਿਆਗਰਾਜ ਸਟੇਡੀਅਮ ਤਾੜੀਆਂ ਦੀ ਗੜਗੜਾਹਟ ਨਾਲ ਗੂੰਜ ਉਠਿਆ। ਮੌਕਾ ਸੀ ਸਰਵਪੱਲੀ ਡਾ. ਰਾਧਾ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਨ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਯਾਨੀ 5 ਸਤੰਬਰ ਤੇ ਆਯੋਜਿਤ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਸਮਾਰੋਹ ਦਾ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ 91 ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ''ਦਿੱਲੀ ਰਾਜ ਸਿਖਿਆ ਸਨਮਾਨ-2016'' ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਤ ਕੀਤਾ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਤ ਕਰਨ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਦਸਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਖੇਡ, ਸਿਨੇਮਾ ਜਾਂ ਹੋਰ ਖੇਤਰ ਦੇ ਸਿਤਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਅਧਿਆਪਕ ਉਹ ਹਨ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਸਲ ਵਿਚ ਸਿਤਾਰਾ ਬਨਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਵਿਚ ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਵੱਡਾ ਆਯੋਜਨ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਲੋਕ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਮਝ ਸਕਣ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰਾਲੇ ਦੀ ਜਿੰਮੇਂਵਾਰੀ ਸੰਭਾਲ ਰਹੇ ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਗਲੇ ਸਾਲ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਸਮਾਰੋਹ ਹੋਰ ਵੀ ਵੱਡੇ ਪੈਮਾਨੇ ਤੇ ਮਨਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਬਦਲਾਅ ਲਿਆ ਰਹੀ ਹੈ

ਇਹ ਸਨਮਾਨ ਪਾ ਕੇ ਮੈਂ ਕਾਫੀ ਖੁਸ਼ ਹਾਂ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਹ ਐਵਾਰਡ ਸਿਰਫ ਮੇਰਾ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੇ ਸਹਿਯੋਗੀਆਂ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਕਾਰਨ ਸਾਡੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਸਫਲਤਾ ਪਾਈ ਹੈ।

–ਬੱਲੂ ਸਿੰਘ, ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ

ਹਿੰਦੀ ਸਾਡੀ ਮਾਤ੍ਰ ਭਾਸ਼ਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਮੇਰਾ ਹਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦਾ ਵੀ ਸਨਮਾਨ ਕਰੇ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੇ। ਆਪਣੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਬੇਹਤਰੀ ਦੇ ਲਈ ਮੈਨੂੰ ਜਿੰਨੀ ਵੀ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨੀ ਪਏ, ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

–ਨਵਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਹਿੰਦੀ

ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਸਿਰਫ ਕਿਤਾਬੀ ਸਿਖਿਆ ਨਾ ਦੇ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਿਵਹਾਰਿਕ ਗਿਆਨ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦਿਤੇ ਜਾਵੇ। ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਲੈ ਮੇਰੀ ਮੁਸਤੈਦੀ, ਮਿਹਨਤ ਤੇ ਪੜ੍ਹਾਉਣ-ਸਿਖਾਉਣ ਦੇ ਨਵੇਂ-ਨਵੇਂ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਐਵਾਰਡ ਲਈ ਚੁਣਿਆ ਗਿਆ।

–ਜੋਤੀ ਸ਼ਰਮਾ, ਸੰਗੀਤ

ਅਸੀਂ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਚੰਗਾ ਮਾਹੌਲ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਉਂਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਲਈ ਬੱਚੇ ਵੀ ਖੂਬ ਮਨ ਲਗਾ ਕੇ ਪੜਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਨਾਲ ਹੀ ਸਾਡੀ ਸਫਲਤਾ ਅਤੇ ਪਹਿਚਾਨ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਮੈਨੂੰ ਮਿਲੇ ਇਸ ਐਵਾਰਡ ਦਾ ਕਰੈਡਿਟ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਹੀ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

–ਰਾਕੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ

ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਆਚਾਰ-ਵਿਵਹਾਰ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਮਰਪਣ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਸ਼ਰਤ ਹੈ। ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਚੰਗੇ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣ ਕੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦਾ ਸਿਰ ਗਰਵ ਨਾਲ ਉਚਾ ਕਰਨ, ਇਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਗੁਰੂ ਦਕਸ਼ਨਾ ਹੈ।

–ਰਜਨੀ ਸ਼ਰਮਾ, ਸੰਗੀਤ

ਮੇਰੇ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ, ਸਫਾਈ ਤੇ ਸਭ ਨਾਲ ਇਕ ਜਿਹਾ ਵਤੀਰਾ ਕਰਨ ਦੀ ਗਲ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਸਖਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਚੰਗਾ ਮਾਹੌਲ ਮਿਲੇ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਇਸ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

–ਮਹੇਂਦਰ ਮੋਹਨ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ

ਇਕ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਬਚਿਆਂ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਕਰੀਬ ਪਾਉਂਦਾ ਹਾਂ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਿੱਖਣ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਬੱਚੇ ਸਾਨੂੰ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਸਿਖਾਉਂਦੇ ਵੀ ਹਨ। ਜੋ ਅੱਜ ਬੱਚੇ ਹਨ ਉਹੀ ਅੱਗੇ ਚਲ ਕੇ ਅਧਿਆਪਕ ਬਣਦੇ ਹਨ।

–ਸਤੀਸ਼ ਸ਼ਰਮਾ, ਸਰੀਰਿਕ ਸਿਖਿਆ

ਇਸ ਐਵਾਰਡ ਨੂੰ ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਜਿੰਨੀ ਮਿਹਨਤ ਮੈਂ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਉਸ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਾਡੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਤੇ ਸਕੂਲ ਪਹੁੰਚ ਕੇ ਇਮਤਿਹਾਨ ਵਿਚ ਚੰਗੇ ਨੰਬਰ ਲਿਆ ਕੇ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਸਾਫ-ਸੁਥਰਾ ਰਖ ਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਸਾਬਤ ਕੀਤਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਚੰਗੇ ਅਧਿਆਪਕ ਹਾਂ।

– ਅਰਵੰਦ ਕੌਸ਼ਲ, ਸਰੀਰਿਕ ਸਿਖਿਆ

ਅਸੀਂ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿਖਿਆ ਦਿਤੀ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਐਵਾਰਡ ਦਿਵਾਇਆ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਲਈ ਗੁਰੂ ਦਕਸ਼ਨਾ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜੋ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਵਿਖ ਦੇ ਲਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

–ਅਜਵੰਤ ਸਿੰਘ, ਪੀਜੀਟੀ

ਬੱਚੇ ਕੱਚੀ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਜਿਸ ਮਹੌਲ ਵਿਚ ਜਿਹਾ ਢਾਲਣਗੇ, ਢਲ ਜਾਣਗੇ। ਇਹ ਸਾਨੂੰ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਯਕੀਨੀ ਕਰਨਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਬੱਚੇ ਦਾ ਭਵਿਖ ਕਿਵੇਂ ਸਵਾਰਨਾ ਹੈ।

–ਵਿਮਲਾ ਰਾਣਾ, ਪੀਈਟੀ

ਅੱਜ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਚੰਗੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਸਖਤ ਜਰੂਰਤ ਹੈ। ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਹਰ ਕਾਮਯਾਬੀ ਦੇ ਪਿਛੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦਾ ਹੱਥ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਇਸ ਜਿੰਮੇਂਦਾਰੀ ਦਾ ਨਿਰਵਾਹਨ ਪੂਰੀ ਸੰਜੀਦਗੀ ਨਾਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

–ਅਨਿਲ ਕੌਸ਼ਿਕ, ਪੀਈਟੀ

ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਜੀ ਦੀ ਕਲਾਸ !

ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਤੇ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰਣਵ ਮੁਖਰਜੀ ਵੀ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਵਿਚ ਨਜ਼ਰ ਆਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਡਾ. ਰਾਜੇਂਦਰ ਪ੍ਰਸਾਦ ਸਰਵੋਦਯ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਇਕ ਘੰਟੇ ਤਕ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ। ਇਹ ਸਕੂਲ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਭਵਨ ਦੇ ਪਰਿਸਰ ਵਿਚ ਸਥਿਤ ਹੈ।

ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਜੀ ਨੇ 11ਵੀਂ ਅਤੇ 12ਵੀਂ ਦੇ ਕਰੀਬ 80 ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਸ਼ਾ ਤੇ ਕਰੀਬ ਇਕ ਘੰਟੇ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਦਿਤੀ। ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਨੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਬਾਅਦ ਭਾਰਤੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਆਤੰਕਵਾਦ ਦੇ ਵਧਦੇ ਖਤਰੇ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਵੀ ਦਸਿਆ।

ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਵੀ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਨੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਇਸ ਸਕੂਲ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਸੀ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਅਤੇ ਉਪ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ ਸੀ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਕੂਲ ਦੀ ਸਮਾਰਿਕਾ ਨਵੀਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਉਮੰਗ, ਸਵੱਛ ਊਰਜਾ ਦੇ ਸੰਗ ਦਾ ਲੋਕਾਅਰਪਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਇਕ ਕਾਪੀ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਨੂੰ ਭੇਂਟ ਕੀਤੀ।

ਜਿਸ ਵਿਚ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਰੋਲ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰ ਸਿਖਿਆ ਖੇਤਰ ਦਾ ਪੂਰਾ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲਣ ਦੇ ਲਈ ਦ੍ਰਿੜਸੰਕਲਪ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਦੌਰਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਨਿਸ਼ਠਾ ਤੇ ਕਰਤੱਵ ਪਾਲਣ

ਦੀ ਸਹੁੰ ਵੀ ਦਿਵਾਈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਜਲ ਸੰਸਾਧਨ ਮੰਤਰੀ ਕਪਿਲ ਮਿਸ਼ਰਾ ਨੇ ਵੀ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁਭਕਾਮਨਾਵਾਂ ਦਿਤੀਆਂ।

ਸਨਮਾਨਤ ਕੀਤੇ ਗਏ ਅਧਿਆਪਕ ਸਰਕਾਰੀ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਵੀ ਸਨ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਦੀ ਹੋਰਡਿੰਗ ਥਾਂ-ਥਾਂ ਲਗਵਾਏ ਸਨ ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਹ ਕਾਫੀ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨਜ਼ਰ ਆਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਆਭਾਰ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਇਸ ਗਲ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਜਤਾਈ ਕਿ ਬਤੌਰ ਅਧਿਆਪਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਸਲਾਹਿਆ ਗਿਆ।

ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਮੁੱਖ ਸਕਤਰ ਸਕਤਰ ਕੇਕੇ ਸ਼ਰਮਾ, ਸਿਖਿਆ ਸਕਤਰ ਪੁਨਯਾ ਸ੍ਰੀਵਾਸਤਵ, ਸਿਖਿਆ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਸੌਮਯਾ ਗੁਪਤਾ ਅਤੇ ਅਡੀਸ਼ਨਲ ਸਿਖਿਆ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਸੁਨੀਤਾ ਕੌਸ਼ਿਕ ਵਿਸ਼ਿਸ਼ਟ ਮਹਿਮਾਨ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਰਹੇ। ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਨੌਬਲ ਪੁਰਸਕਾਰ ਵਿਜੇਤਾ ਕੈਲਾਸ਼ ਸਤਿਆਰਥੀ, ਓਲੰਪਿਕ ਮੈਡਲ ਵਿਜੇਤਾ ਸਾਕਸ਼ੀ ਮਲਿਕ ਅਤੇ ਪੀਵੀ ਸਿੰਧੂ ਦੇ ਵੀਡੀਓ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿਖਾਏ ਗਏ। ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਗਾਇਕ-ਕਲਾਕਾਰ ਸ਼ਾਹਿਦ ਮਾਲਯਾ ਅਤੇ ਪੀਯੂਸ਼ ਮਿਸ਼ਰਾ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਸਾਧਯਾ ਇੰਸਟੀਚਿਊਟ ਅਤੇ ਇੰਡੀਅਨ ਓਸ਼ਨ ਬੈਂਡ ਦੇ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਨੇ ਰੰਗਾਰੰਗ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ■

‘ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ’ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲੇ

ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਦੱਸੇ ਰਸਤੇ ਤੇ ਹੈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ –ਕੇਜਰੀਵਾਲ

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬਣੇਗਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬਣੇਗਾ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ– ਇਹ ਐਲਾਨ 28 ਸਤੰਬਰ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦੇ ਆਜ਼ਮ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ 110ਵੀਂ ਜੈਅੰਤੀ ਤੇ ਆਯੋਜਿਤ ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਤਾਲਕਟੋਰਾ ਵਿਚ ਆਯੋਜਿਤ ਇਸ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਸਾਰੇ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ 190 ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਸੈਨਾਨੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸਨਮਾਨਤ ਕੀਤਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਜਾਂ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਿਵਸ ਮਨਾਉਣਾ ਚੰਗੀ ਗਲ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਤੋਂ ਵੀ ਜਰੂਰੀ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੱਸੇ ਰਸਤੇ ਤੇ ਚਲਣਾ। ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਸਿਰਫ 23 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ, ਲੇਕਿਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਪੜ੍ਹਾਈ-ਲਿਖਾਈ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਲਿਖਿਆ ਕਿ ਕੇਵਲ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਭਜਾਉਣ ਨਾਲ ਅਜ਼ਾਦੀ ਨਹੀਂ ਆਏਗੀ, ਸੱਚੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਤਦ ਆਏਗੀ ਜਦ ਕਿਸਾਨਾਂ, ਮਜਦੂਰਾਂ, ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਸਤਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਮਾਹੌਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਵੋਟ ਲੈਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਹੀ ਗਰੀਬਾਂ ਦੀ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਨੇਤਾ ਲੋਕ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਹੱਥ ਜੋੜਦੇ ਹਨ ਲੇਕਿਨ ਜਿੱਤਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੂੰਜੀਪਤੀਆਂ ਦੀ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਗਰੀਬਾਂ ਦੀ ਗਲ ਕਰਨ ਤੇ ਪੁਰਾਣੇ ਵਾਅਦਿਆਂ ਨੂੰ ਜੁਮਲਾ ਦੱਸ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣਬੁਝ ਕੇ ਬਰਬਾਦ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਥੇ ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਬੱਚੇ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲ ਚਮਕ ਸਕਣ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਹਾਲਾਤ ਬਦਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਬੇਹਤਰ ਮਾਹੌਲ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਆਕਸਫੋਰਡ ਅਤੇ ਕੈਂਬ੍ਰਿਜ ਭੇਜ ਕੇ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਦਿਵਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਰਕਾਰੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਦਵਾਈ, ਜਾਂਚ, ਇਲਾਜ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੁਫਤ ਕਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਘਟੋ ਘਟ ਮਜਦੂਰੀ 9 ਹਜ਼ਾਰ ਤੋਂ ਵਧਾ ਕੇ 14 ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪੈ ਮਹੀਨੇ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਜੋ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਗਰੀਬਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਹੈ ਜੋ ਗਰੀਬਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਸੱਤਾ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਹੀਦੇ ਆਜਮ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਵੀ ਇਹੋ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਉਹ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਦਾ ਇਕ ਫੀਸਦੀ ਵੀ ਪੂਰਾ ਕਰ ਸਕੇ ਤਾਂ ਜੀਵਨ ਸਾਰਥਕ ਸਮਝਣਗੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਤੇ ਪ੍ਰਚਾਰ-ਪ੍ਰਸਾਰ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ ਇਕ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ ਬਣਾਏਗੀ। ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਾਰੇ ਹੋਰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਤੇ ਸ਼ੋਧ ਕਰਕੇ ਪ੍ਰਚਾਰ-ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੋ ਸਮਾਜ ਆਪਣੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਭੁਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਦਾ ਕੋਈ ਭਵਿਖ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਤੋਂ ਮੰਗ ਕੀਤੀ ਕਿ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸੀਮਾ ਜਾਂ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਆਪਣੀ ਡਿਊਟੀ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਵੈਸੀ ਹੀ ਸਹਾਇਤਾ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਵੀ ਕਰੇ। ਉੜੀ ਹਮਲੇ ਵਿਚ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ 18 ਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਨਮਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਦੀ ਰਾਸ਼ੀ ਦੇਣ ਦੇ ਨਾਲ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਇਹ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਸਾਡੇ ਸਭ ਦੇ ਅੰਦਰ ਜਿੰਦਾ ਹਨ। ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਪੀੜੀ ਦੇ ਨਾਮ ਸੰਦੇਸ਼ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਉਤਸਵ ਹੈ। ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਾ ਭਾਵ ਰਖਣਾ ਹੀ ਉਤਸਵ ਦਾ ਨਾਮ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਜਿਸ ਕਿਤਾਬ ਨੂੰ ਅਧੂਰਾ ਛੱਡ ਗਏ ਹਨ, ਜੇਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਵਿਚ ਇਕ ਪੇਜ ਵੀ ਜੋੜ ਪਾਈ ਤਾਂ

‘ਸ਼ਹੀਦ ਕੋਸ਼’ ਦਾ ਲੋਕਾਅਰਪਣ

ਅੱਜ ਦੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੇ ਸਾਰੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਸਿਰਫ ਨਾਮ ਸੁਣਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਜਾਣਕਾਰੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੋਲ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਕਮੀ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ shaheedkosh.delhi.gov.ir ਵਿਕਸਿਤ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਦਾ ਲੋਕਾਅਰਪਣ ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

ਇਸ ਵੈਬਪੋਰਟਲ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਭਰ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਅਤੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਸੈਨਾਨੀਆਂ ਦਾ ਡੇਟਾਬੇਸ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਸ ਕੋਸ਼ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਸਾਰੇ ਵੇਰਵਿਆਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਭਾਰਤੀ ਹਾਈ ਕਮਿਸ਼ਨਰਾਂ ਅਤੇ ਦੂਤਾਵਾਸਾਂ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ ਬੰਗਲਾਦੇਸ਼, ਬਰਮਾ, ਇੰਗਲੈਂਡ, ਕਨਾਡਾ ਅਤੇ ਅਮਰੀਕਾ ਆਦਿ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਰਹਿ ਰਹੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਸੈਨਾਨੀਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਜਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਜ਼ਦੀਕੀ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਨਾਲ ਵੀ ਸੰਪਰਕ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰੇਗੀ।

ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਇਕੱਠੇ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਉਣ ਦੇ ਲਿਹਾਜ ਨਾਲ ਇਹ ਇਕ ਅਨੂਠਾ ਯਤਨ ਹੈ।

ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਹੋ ਜਾਏਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਕੋਸ਼ ਵੈਬਸਾਈਟ ਦੇ ਲੋਕਾਅਰਪਨ ਨੂੰ ਅਹਿਮ ਦਸਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਕੋਨੇ-ਕੋਨੇ ਵਿਚ ਬੈਠੇ ਲੋਕ ਇਸ ਦੇ ਜਰੀਏ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਜਾਣ ਸਕਣਗੇ। ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਿਰਤ ਮੰਤਰੀ ਗੋਪਾਲ ਰਾਏ ਨੇ ਕੀਤੀ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸਾਰੇ ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਕ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵੀ ਹੋਏ।

‘‘ਮੇਰਾ ਰੰਗ ਦੇ ਬਸੰਤੀ ਚੋਲਾ’’ ਜਿਹੀ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦੀ ਥੀਮ ਤੇ ਆਯੋਜਿਤ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮਾਂ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਵਿਚ ਭਿਗੋ ਦਿਤਾ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮਸ਼ਹੂਰ ਗਾਇਕ ਹਰਭਜਨ ਸਿੰਘ ਮਾਨ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਸਤੁਤੀਆਂ ਨੇ ਐਸਾ ਸਮਾਂ ਬੰਨਿਆ ਕਿ ਸਟੇਡੀਅਮ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਹਿਲੋਰੇ ਮਾਰਨ ਲੱਗੀਆਂ। ■

ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਸੌ ਬੱਸਾਂ ਦੀ ਸੌਗਾਤ

ਕਲਸਟਰ ਬੱਸਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਹੋਈ 1590

ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਪਰਿਵਹਨ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਰੰਗ ਲਿਆਉਣ ਲਗੀਆਂ ਹਨ। ਇਸੇ ਦੇ ਤਹਿਤ 100 ਨਵੀਆਂ ਬਸਾਂ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਉਤਾਰੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਬੱਸਾਂ ਜੀਪੀਐਸ ਸੁਵਿਧਾ ਨਾਲ ਲੈਸ ਹਨ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇਲੈਕਟ੍ਰੋਨਿਕ ਟਿਕਟ ਦਾ ਵੀ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਵੀ ਹੈ। ਅਗਲੇ ਪੜਾਅ ਵਿਚ ਐਸੀਆਂ 800 ਬੱਸਾਂ ਹੋਰ ਆਉਣਗੀਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾ ਵਿਚ 431 ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਏਅਰ ਕੰਡੀਸ਼ਨ ਹੋਣਗੀਆਂ।

18 ਸਤੰਬਰ ਨੂੰ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਪਰਿਸਰ ਵਿਚ ਹੋਏ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਜੀਆ-ਧਜੀਆਂ ਬਸਾਂ ਨੂੰ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਦਿੱਲੀ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਨਿਵਾਸ ਗੋਯਲ ਨੇ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਜਨ ਹਿਤ ਵਿਚ ਉਠਾਇਆ ਗਿਆ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕਦਮ ਦਸਿਆ ਹੋਏ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਪਰਿਵਹਨ ਮੰਤਰੀ ਸਤੇਂਦਰ ਜੈਨ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਪਰਿਵਹਨ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਲਈ 3000 ਨਵੀਆਂ ਬਸਾਂ ਚਲਾਈਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਇਹ ਟੀਚਾ ਇਸੇ ਵਿਤੀ ਸਾਲ ਵਿਚ ਪੂਰਾ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਵੇਗਾ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਬਸ ਸੇਵਾ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਬਣਾ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹਾਸਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮੈਟਰੋ ਫੀਡਰ ਬਸਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਧਾਈ ਜਾਵੇਗੀ ਜਿਸ ਨਾਲ ਲੋਕ ਸਾਰਵਜਨਿਕ ਪਰਿਵਹਨਦਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਸਾਂ ਵਿਚ ਆਰਾਮਦੇਹ ਸੀਟਾਂ ਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਯਾਤਰੀਆਂ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਅਸਾਨ ਹੋਵੇਗੀ। ਨਾਲ ਹੀ ਇਲੈਕਟ੍ਰਾਨਿਕ ਟਿਕਟ ਸਿਸਟਮ ਦੀ ਵਜਾ ਨਾਲ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਾਫੀ ਬਚਤ ਹੋਵੇਗੀ।

ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਸਾਂ ਦੇ ਸੜਕ ਤੇ ਉਤਰਨ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕਲਸਟਰ ਬਸਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ 1590 ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਬੱਸਾਂ ਉਤਰ, ਪੂਰਬ ਅਤੇ ਪੱਛਮ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਚਲਾਈਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਮੋਰੀ ਗੇਟ, ਪੁਰਾਣੀ ਦਿੱਲੀ, ਮਯੂਰ ਵਿਹਾਰ ਫੇਜ-3, ਇੰਦਰਪੁਰੀ, ਅੰਬੇਡਕਰ ਨਗਰ ਅਤੇ ਕਮਲਾ ਮਾਰਕੀਟ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਸਾਂ ਦਾ ਟਰਮੀਨਲ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਸਾਂ ਦਾ ਰੂਟ ਵੱਡੇ ਹਸਪਤਾਲਾਂ, ਮੈਟਰੋ ਸਟੇਸ਼ਨਾਂ ਅਤੇ ਬਸ ਅੱਡਿਆਂ ਨੂੰ ਜੋੜੇਗਾ। ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਗੇਟ, ਆਨੰਦ ਵਿਹਾਰ ਅਤੇ ਸਰਾਏ ਕਾਲੇ ਖਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਰਾਜੀ ਬਸ ਅਡਿਆਂ ਤਕ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਹੁੰਚ ਯਾਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਫੀ ਰਾਹਤ ਦੇਵੇਗੀ। ■

ਸਾਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇਣ ਦੇ ਬਜਾਏ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਉਡਾਇਆ ਜਾਏ !

(ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਲਟਕਾਏ ਜਾਣ ਤੋਂ 3 ਦਿਨ ਪਹਿਲਾਂ–20 ਮਾਰਚ, 1931 ਨੂੰ– ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਾਥੀਆਂ ਰਾਜਗੁਰੂ ਅਤੇ ਸੁਖਦੇਵ ਨੇ ਹੇਠਾਂ ਲਿਖਤ ਪੱਤਰ ਦੁਆਰਾ ਇਕੱਠੇ ਤੌਰ ਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਗਵਰਨਰ ਤੋਂ ਮੰਗ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਯੁਧਬੰਧੀ ਮੰਨਿਆ ਜਾਏ ਅਤੇ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਲਟਕਾਏ ਜਾਣ ਦੇ ਬਜਾਏ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਉਡਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਹ ਪੱਤਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਰਾਸ਼ਟਰਵੀਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਮੇਧਾ, ਹਿੰਮਤ ਅਤੇ ਵੀਰਤਾ ਦੀ ਅਮਰਗਾਥਾ ਦਾ ਇਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅਧਿਆਏ ਹੈ।)

20 ਮਾਰਚ, 1931
ਪ੍ਰਤੀ, ਗਵਰਨਰ ਪੰਜਾਬ ਸ਼ਿਮਲਾ

ਸ੍ਰੀਮਾਨ,

ਉਚਿਤ ਸਨਮਾਨ ਦੇ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਹੇਠਾਂ ਲਿਖੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਰਖ ਰਹੇ ਹਾਂ:–

ਭਾਰਤ ਦੀ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਵਾਈਸਰਾਏ ਨੇ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਬਿਲ ਜਾਰੀ ਕਰਕੇ ਲਾਹੌਰ ਸਾਜਸ਼ ਅਭਿਯੋਗ ਦੀ ਸੁਣਵਾਈ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਨਿਆਂਧਿਕਰਨ (ਟ੍ਰਿਬਊਨਲ) ਸਥਾਪਤ ਕੀਤਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਨੇ 7 ਅਕਤੂਬਰ, 1930 ਨੂੰ ਸਾਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਸੁਣਾਈ। ਸਾਡੇ ਵਿਰੁੱਧ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਦੋਸ਼ ਇਹ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕ ਅਸੀਂ ਸਮਰਾਟ ਜਾਰਜ ਪੰਚਮ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਯੁਧ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਅਦਾਲਤ ਦੇ ਇਸ ਫੈਸਲੇ ਨਾਲ ਦੋ ਗੱਲਾਂ ਸਪਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।–

ਪਹਿਲੀ ਇਹ ਕਿ ਅੰਗ੍ਰੇਜ ਜਾਤੀ ਅਤੇ ਭਾਰਤੀ ਜਨਤਾ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਇਕ ਯੁੱਧ ਚਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਇਹ ਕਿ ਅਸੀਂ ਯਕੀਨੀ ਤੌਰ ਤੇ ਇਸ ਯੁੱਧ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਯੁਧਬੰਧੀ ਹਾਂ।

ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਨਾਂ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹਦ ਤਕ ਜਲਦਬਾਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ, ਹਾਲਾਂਕਿ ਅਸੀਂ ਇਹ ਕਹੇ ਬਿਨਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਐਸਾ ਕਰਕੇ ਸਾਨੂੰ ਸਨਮਾਨਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਹਿਲੀ ਗਲ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਜਰਾ ਵਿਸਥਾਰ ਨਾਲ ਰੋਸ਼ਨੀ ਪਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਅਸੀਂ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੇ ਕਿ ਸਿਧੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਐਸੀ ਕੋਈ ਲੜਾਈ ਛਿੜੀ ਹੋਈ ਹੈ।

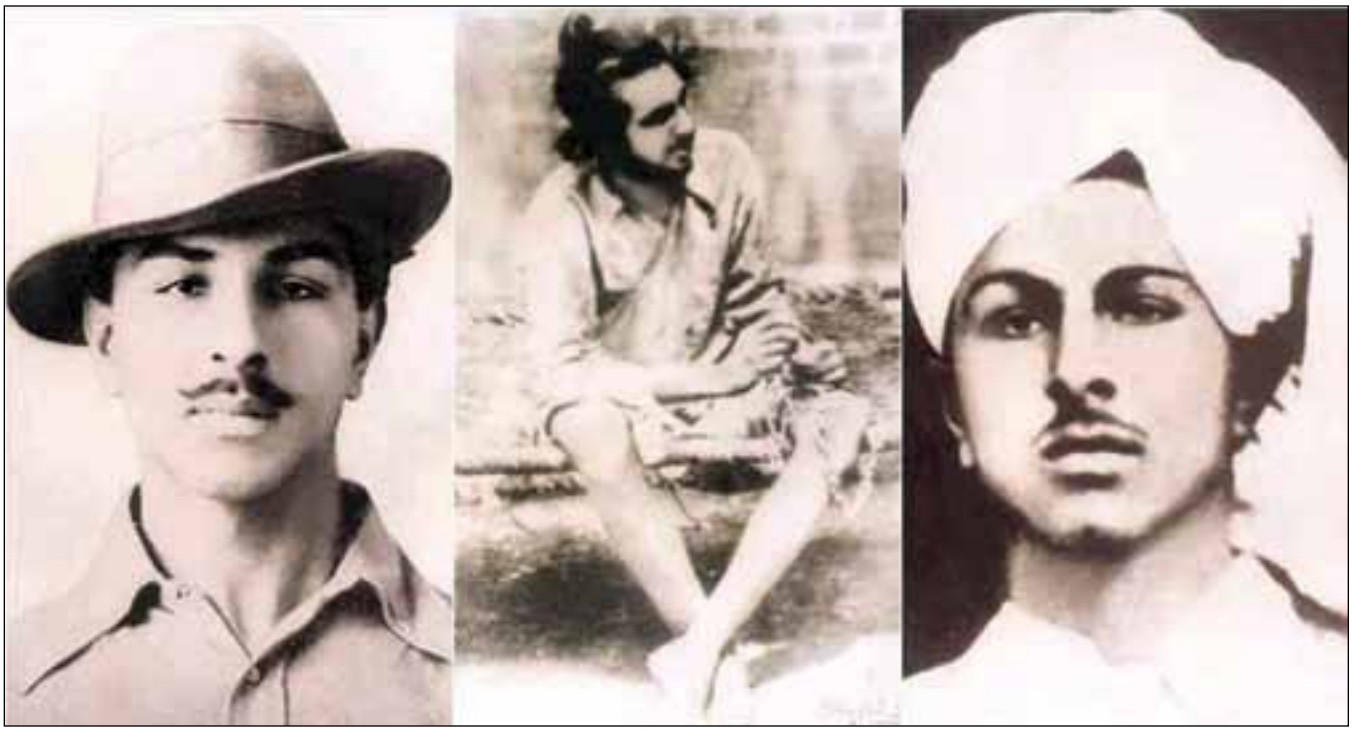

ਅਸੀਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੇ ਕਿ ਯੁੱਧ ਛਿੜਣ ਨਾਲ ਅਦਾਲਤ ਦਾ ਮਤਲਬ ਕੀ ਹੈ? ਪਰ ਅਸੀਂ ਇਸ ਵਿਆਖਿਆ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਸ ਦੇ ਠੀਕ ਸੰਧਰਭ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ।

ਯੁੱਧ ਦੀ ਸਥਿਤੀ

ਅਸੀਂ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਯੁੱਧ ਛਿੜਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਲੜਾਈ ਤਦ ਤਕ ਚਲਦੀ ਰਹੇਗੀ ਜਦ ਤਕ ਕਿ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਨੇ ਭਾਰਤੀ ਜਨਤਾ ਅਤੇ ਕਾਮਿਆਂ ਦੀ ਆਮਦਨ ਦੇ ਸਾਧਨਾਂ 'ਤੇ ਆਪਣਾ ਇਕੱਲਾ ਅਧਿਕਾਰ ਕਰ ਰਖਿਆ ਹੈ– ਚਾਹੇ ਐਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਪੂੰਜੀਪਤੀ ਅਤੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਜਾਂ ਖੁਦ ਭਾਰਤੀ ਹੀ ਹੋਣ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਸ ਵਿਚ ਮਿਲ ਕੇ ਇਕ ਲੁਟ ਜਾਰੀ ਕਰ ਰਖੀ ਹੈ। ਚਾਹੇ ਸ਼ੁਧ ਭਾਰਤੀ ਪੂੰਜੀਪਤੀਆਂ ਦੇ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਗਰੀਬਾਂ ਦਾ ਖੂਨ ਚੂਸਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਵੀ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਕੋਈ ਅੰਤਰ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਜੇਕਰ ਤੁਹਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਕੁਝ ਨੇਤਾਵਾਂ ਜਾਂ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਦੇ ਮੁਖੀਆਂ ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਜਮਾਉਣ ਵਿਚ ਸਫਲ ਹੋ ਜਾਏ, ਕੁਝ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਮਿਲ ਜਾਣ, ਜਾਂ ਸਮਝੌਤੇ ਹੋ ਜਾਣ, ਇਸ ਨਾਲ ਵੀ ਸਥਿਤੀ ਨਹੀਂ ਬਦਲ ਸਕਦੀ, ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਤੇ ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਬਹੁਤ ਘਟ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦੀ ਵੀ ਚਿੰਤਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਵਾਰ ਫਿਰ ਧੋਖਾ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਵੀ ਡਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਨੇਤਾ ਪਥ-ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਹੋ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹ ਸਮਝਦੇ ਹਨ ਕਿ ਗਲਬਾਤ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੇਗੁਨਾਹਾਂ, ਬੇਘਰ ਅਤੇ ਬੇਆਸਰਿਆਂ ਬਲਿਦਾਨੀਆਂ ਨੂੰ ਭੁਲ ਗਏ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾ ਨੂੰ ਬਦਕਿਸਮਤੀ ਨਾਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਮੈਂਬਰ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਨੇਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਦੁਸ਼ਮਣ ਮੰਨਦੇ ਹਨ, ਕਿਉਂਕਿ

ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਵਿਚ ਉਹ ਹਿੰਸਾ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰਖਦੇ ਹਨ, ਸਾਡੀਆਂ ਵਿਰਾਂਗਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣਾ ਸਭ ਕੁਝ ਬਲਿਦਾਨ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪਤੀਆਂ ਨੂੰ ਬਲੀ ਦੇਵੀ ਤੇ ਭੇਂਟ ਕੀਤਾ, ਭਰਾ ਭੇਂਟ ਕੀਤੇ, ਅਤੇ ਜੋ ਕੁਝ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੋਲ ਸੀ ਸਭ ਨੌਛਾਵਰ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਵੀ ਨੌਛਾਵਰ ਕਰ ਦਿਤਾ ਪਰ ਤੁਹਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਿਦਰੋਹੀ ਸਮਝਦੀ ਹੈ। ਤੁਹਾਡੇ ਏਜੰਟ ਭਲੇ ਹੀ ਝੂਠੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਸ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਦਨਾਮ ਕਰ ਦੇਣ ਅਤੇ ਪਾਰਟੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿਧੀ ਨੂੰ ਹਾਨੀ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰਨ, ਪਰ ਇਹ ਯੁਧ ਚਲਦਾ ਰਹੇਗਾ।

ਯੁੱਧ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਸਵਰੂਪ

ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਲੜਾਈ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਸਵਰੂਪ ਅਖਤਿਆਰ ਕਰੇ। ਕਿਸੇ ਸਮੇਂ ਇਹ ਲੜਾਈ ਪ੍ਰਕਟ ਰੂਪ ਲੈ ਲਏ, ਕਦੇ ਗੁਪਤ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਚਲਦੀ ਰਹੇ, ਕਦੇ ਭਿਆਨਕ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲਏ, ਕਦੇ ਕਿਸਾਲ ਦੇ ਪਧਰ ਤੇ ਯੁਧ ਜਾਰੀ ਰਹੇ ਅਤੇ ਕਦੇ ਇਹ ਘਟਨਾ ਇੰਨੀ ਭਿਆਨਕ ਹੋ ਜਾਏ ਕਿ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਮੌਤ ਦੀ ਬਾਜੀ ਲਗ ਜਾਏ। ਚਾਹੇ ਕੋਈ ਵੀ ਹਾਲਾਤ ਹੋਣ, ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਤੁਹਾਡੇ ਤੇ ਪਏਗਾ। ਇਹ ਤੁਹਾਡੀ ਮਰਜੀ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਜਿਸ ਹਾਲਾਤ ਨੂੰ ਚਾਹੋ ਚੁਣ ਲਵੋ, ਪਰ ਇਹ ਲੜਾਈ ਜਾਰੀ ਰਹੇਗੀ। ਇਸ ਵਿਚ ਛੋਟੀਆਂ-ਛੋਟੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਤੇ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਬਹੁਤ ਸੰਭਵ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਯੁੱਧ ਭਿਅੰਕਰ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲਵੇ। ਪਰ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਹੀ ਇਹ ਉਸ ਸਮੇਂ ਤਕ ਸਮਾਪਤ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ ਜਦ ਤਕ ਕਿ ਸਮਾਜ ਦਾ ਵਰਤਮਾਨ ਢਾਂਚਾ ਸਮਾਪਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਦਾ, ਹਰੇਕ ਵਸਤੂ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਜਾਂ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਸਮਾਪਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਅਤੇ ਮਾਨਵੀ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਵਿਚ ਇਕ ਨਵੇਂ ਯੁੱਗ ਦਾ ਸੂਤਰਪਾਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਦਾ।

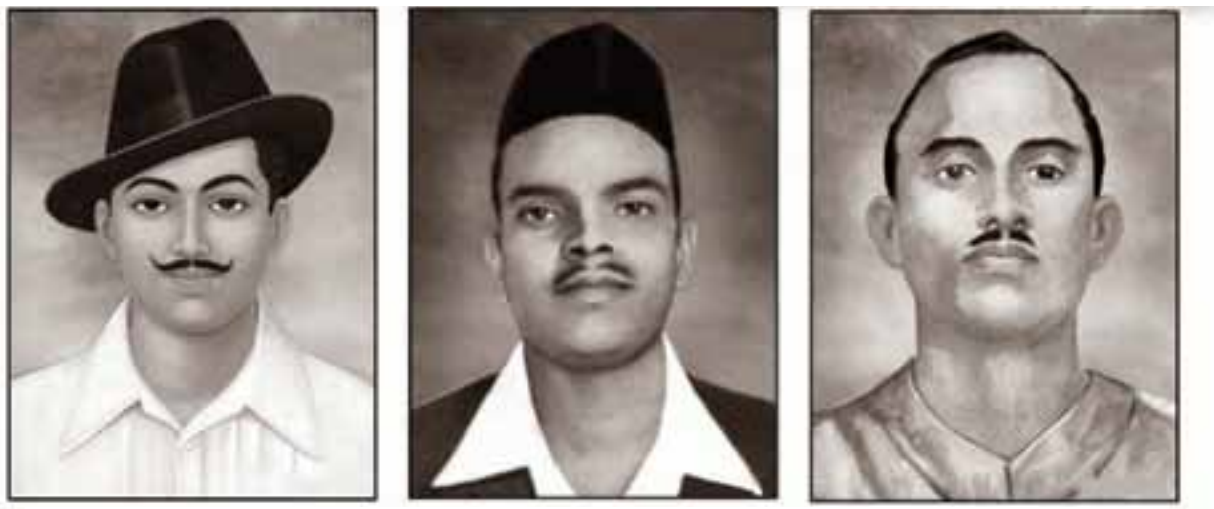

ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਰਾਜਗੁਰੂ ਸੁਖਦੇਵ

ਅੰਤਿਮ ਯੁੱਧ

ਨੇੜ ਭਵਿਖ ਵਿਚ ਅੰਤਮ ਯੁੱਧ ਲੜਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਅਤੇ ਇਹ ਯੁੱਧ ਫੈਸਲਾਕੁੰਨ ਹੋਵੇਗਾ। ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ ਤੇ ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਕੁਝ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਮਹਿਮਾਨ ਹਨ। ਇਹ ਉਹ ਲੜਾਈ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਸਿੱਧੇ ਤੌਰ ਤੇ ਭਾਗ ਲਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਤੇ ਮਾਨ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਯੁੱਧ ਨੂੰ ਨਾ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਇਹ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਨਾਲ ਸਮਾਪਤ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ। ਸਾਡੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਇਤਿਹਾਸ ਦੇ ਉਸ ਅਧਿਆਏ ਵਿਚ ਲਿਖੀਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ ਜਿਸ ਨੂੰ ਯਤੀਨਦਰਨਾਥ ਦਾਸ ਅਤੇ ਭਗਵਤੀਚਰਨ ਦੇ ਬਲਿਦਾਨਾਂ ਨੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਮਾਨ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾ ਦੇ ਬਲਿਦਾਨ ਮਹਾਨ ਹਨ। ਜਿਥੋਂ ਤਕ ਸਾਡੀ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਸਬੰਧ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਜੋਰਦਾਰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਾਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇ ਲਟਕਾਉਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਐਸਾ ਕਰੋਗੇ ਹੀ, ਤੁਹਾਡੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਅਧਿਕਾਰ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੈ। ਪਰ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਤੁਸੀਂ ਜਿਸ ਦੀ ਲਾਠੀ ਉਸੇ ਦੀ ਭੈਂਸ ਵਾਲਾ ਸਿਧਾਂਤ ਹੀ ਅਪਣਾ ਰਹੇ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸੀਂ ਉਸੇ ਤੇ ਅਡਿਗ ਹੋ। ਸਾਡੇ ਅਭਿਯੋਗ ਦੀ ਸੁਣਵਾਈ ਇਸ ਗਲ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਕਾਫੀ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਕਦੇ ਕੋਈ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਵੀ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੇ ਤੋਂ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਦਯਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ। ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕੇਵਲ ਇਹ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਹਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੀ ਇਕ ਅਦਾਲਤ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਡੇ ਵਿਰੁੱਧ ਯੁਧ ਜਾਰੀ ਰਖਣ ਦਾ ਅਭਿਯੋਗ ਹੈ। ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਯੁੱਧਬੰਦੀ ਹਾਂ, ਅਤੇ ਇਸ ਆਧਾਰ ਤੇ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੇ ਤੋਂ ਮੰਗ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪ੍ਰਤੀ ਯੁੱਧਬੰਦੀਆਂ ਜਿਹਾ ਹੀ ਵਿਵਹਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਅਤੇ ਸਾਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇਣ ਦੇ ਬਦਲੇ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਉਡਾ ਦਿਤਾ ਜਾਏ।

ਹੁਣ ਇਹ ਸਿਧ ਕਰਨਾ ਤੁਹਾਡਾ ਕੰਮ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਨੂੰ ਉਸ ਫੈਸਲੇ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੈ ਜੋ ਤੁਹਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਅਦਾਲਤ ਨੇ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਦੁਆਰਾ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਦੇਵੋ। ਅਸੀਂ ਵਿਨਰਮਤਾ ਨਾਲ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣੇ ਸੈਨਾ-ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਆਦੇਸ਼ ਦੋਵੇ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਗੋਲੀ ਨਾਲ ਉਡਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਸੈਨਿਕ ਟੋਲੀ ਭੇਜ ਦਿਤੀ ਜਾਏ।

ਧੰਨਵਾਦ,

ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਰਾਜਗੁਰੂ, ਸੁਖਦੇਵ

ਸ਼ਹਾਦਤ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਥੀਆਂ ਨੂੰ ਅੰਤਿਮ ਪੱਤਰ

ਸਾਥੀਓ,

ਸੁਭਾਵਿਕ ਹੈ ਕਿ ਜੀਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਮੇਰੇ ਵਿਚ ਵੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਮੈਂ ਇਸ ਨੂੰ ਲੁਕਾਉਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ। ਲੇਕਿਨ ਇਕ ਸ਼ਰਤ ਤੇ ਜਿੰਦਾ ਰਹਿ ਸਕਦਾ ਹਾਂ, ਕਿ ਮੈਂ ਕੈਦ ਹੋ ਕੇ ਜਾਂ ਪਾਬੰਦ ਹੋ ਕੇ ਜੀਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ।

ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਣ ਚੁਕਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਦਲ ਦੇ ਆਦਰਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਉਚਾ ਚੁੱਕ ਦਿਤਾ ਹੈ- ਇੰਨਾ ਉਚਾ ਕਿ ਜਿੰਦਾ ਰਹਿਣ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਇਸ ਤੋਂ ਉੱਚੇ ਵਿਚ ਹਰਗਿਜ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ।

ਅੱਜ ਮੇਰੀਆਂ ਕਮਜ਼ੋਰੀਆਂ ਜਨਤਾ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਮੈਂ ਫਾਂਸੀ ਤੋਂ ਬਚ ਗਿਆ ਤਾਂ ਜਾਹਿਰ ਹੋ ਜਾਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਚਿੰਨ ਹਲਕਾ ਪੈ ਜਾਏਗਾ ਜਾਂ ਸੰਭਵਤਾ ਮਿਟ ਹੀ ਜਾਏ। ਲੇਕਿਨ ਦਿਲੇਰਾਨਾ ਢੰਗ ਨਾਲ ਹੱਸਦੇ-ਹੱਸਦੇ ਮੇਰੇ ਫਾਂਸੀ ਚੜਣ ਦੀ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਮਾਤਾਵਾਂ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਬਣਨ ਦੀ ਆਰਜੂ ਕਰਿਆ ਕਰਨਗੀਆਂ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਇੰਨੀ ਵਧ ਜਾਏਗੀ ਕਿ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਨੂੰ ਰੋਕਣਾ ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ ਜਾਂ ਸਾਰੇ ਸ਼ੈਤਾਨੀ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਦੇ ਬੂਤੇ ਦੀ ਗਲ ਨਹੀਂ ਰਹੇਗੀ।

ਹਾਂ, ਇਕ ਵਿਚਾਰ ਅੱਜ ਵੀ ਮੇਰੇ ਮਨ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਮਾਨਵਤਾ ਦੇ ਲਈ ਜੋ ਕੁਝ ਕਰਨ ਦੀਆਂ ਹਸਰਤਾਂ ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਸਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹਜ਼ਾਰਵਾਂ ਭਾਗ ਵੀ ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਿਆ। ਜੇਕਰ ਸੁਤੰਤਰ, ਜਿੰਦਾ ਰਹਿ ਸਕਦਾ ਤਦ ਸ਼ਾਇਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਦਾ ਅਤੇ ਮੈਂ ਆਪਣੀਆਂ ਹਸਰਤਾਂ ਪੂਰੀ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਮੇਰੇ ਮਨ ਵਿਚ ਕਦੇ ਕੋਈ ਲਾਲਚ ਫਾਂਸੀ ਤੋਂ ਬਚੇ ਰਹਿਣ ਦਾ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਕਿਸਮਤਵਾਲਾ ਕੌਣ ਹੋਵੇਗਾ? ਮੈਨੂੰ ਖੁਦ ਤੇ ਬਹੁਤ ਮਾਨ ਹੈ। ਹੁਣ ਤਾਂ ਬੜੀ ਬੇਤਾਬੀ ਨਾਲ ਅੰਤਿਮ ਇਮਤਿਹਾਨ ਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਹੈ। ਕਾਮਨਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਹੋਰ ਨਜ਼ਦੀਕ ਹੋ ਜਾਏ।

ਤੁਹਾਡਾ ਸਾਥੀ

ਭਗਤ ਸਿੰਘ

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਹਾਦੁਰਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣਗੇ ਵੀਰਤਾ ਪੁਰਸਕਾਰ

15 ਅਗਸਤ ਅਤੇ 26 ਜਨਵਰੀ 'ਤੇ 2 ਲੱਖ ਦਾ ਨਕ਼ਦ ਪੁਸਰਕਾਰ
ਦਮਕਲ ਕਰਮਚਾਰੀ ਦੀ ਡਿਊਟੀ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਮੌਤ 'ਤੇ ਵੀ ਮਿਲਣਗੇ ਇਕ ਕਰੋੜ

ਆਪਣੀ ਜਾਨ ਜੋਖਮ ਵਿਚ ਪਾ ਕੇ ਜੀਵਨ ਜਾਂ ਸੰਪਤੀ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਅਗਲੇ ਸਾਲ ਤੋਂ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦਿਵਸ ਅਤੇ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਤੇ ਰਾਜ ਪੱਧਰੀ ਵੀਰਤਾ ਪੁਰਸਕਾਰ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕਰੇਗੀ। ਨਾਲ ਹੀ, ਦਮਕਲ ਵਿਭਾਗ, ਪੁਲੀਸ ਵਿਭਾਗ ਜਾਂ ਬਿਨਾ ਵਰਦੀ ਵਾਲੇ ਵਿਭਾਗਾਂ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਜਿਨਾਂ ਦੀ ਕਰਤੱਵ ਪਾਲਣ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਜਾਨ ਜਾਏਗੀ।

ਬ੍ਰੇਵਰੀ ਐਵਾਰਡ ਜਾਂ ਵੀਰਤਾ ਪੁਰਸਕਾਰ ਦੇ ਤਹਿਤ 2 ਲੱਖ ਰੁਪੈ ਨਕਦ ਦਿਤੇ ਜਾਣਗੇ। 15 ਅਗਸਤ ਅਤੇ 26 ਜਨਵਰੀ ਨੂੰ ਦਿਤੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਇਸ ਪੁਰਸਕਾਰ ਦੇ ਲਈ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਪ੍ਰਸਤਾਵਿਤ ਕਰਨ ਦਾ ਵੀ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ। ਨਾਲ ਹੀ ਉਹ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਦਾ ਨਾਮ ਵੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਿਤ ਕਰ ਸਕਣਗੇ। ਐਸੇ ਦਸ ਪੁਰਸਕਾਰ 15 ਅਗਸਤ ਨੂੰ ਅਤੇ ਦਸ 26 ਜਨਵਰੀ ਦੇ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੇ ਜਾਣਗੇ।

ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਵੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਦਮਕਲ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦੀ ਮੌਤ ਜੀਵਨ ਜਾਂ ਸੰਪਤੀ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨ ਬਚਾਉਣ ਦੌਰਾਨ ਹੋਵੇਗੀ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਸਹਾਇਤਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਅਜੇ ਤਕ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਇਸ ਸਹਾਇਤਾ ਨੀਤੀ ਦੇ ਤਹਿਤ ਪੁਲੀਸ, ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਬਲ, ਅਰਧ ਸੈਨਿਕ ਬਲ ਅਤੇ ਹੋਮਗਾਰਡ ਜਿਹੇ ਵਰਧੀਦਾਰੀ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੀ ਇਹ ਲਾਭ ਮਿਲਦਾ ਸੀ। ਇਹੋ ਨਹੀਂ, ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਾਹਰ ਡਿਊਟੀ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਜਾਨ ਗਵਾਉਣ ਵਾਲੇ ਵਰਧੀਧਾਰੀ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਸ ਦਾ ਲਾਭ ਮਿਲੇ ਗਾ ਜੇਕਰ ਪਰਿਵਾਰ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਨਿਵਾਸ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇਗਾ।

ਪਿਛਲੇ ਦਿਨੀਂ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਇਕ ਅਧਿਆਪਕ ਨੂੰ ਸ਼ਹੀਦ ਮੰਨਦੇ ਹੋਏ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦੇਣ ਦਾ ਐਲਾਨ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਸ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਦੋ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਚਾਕੂਆਂ ਨਾਲ ਗੋਦ ਕੇ ਹਤਿਆ ਕਰ ਦਿਤੀ ਸੀ। ਸ਼ਹੀਦ ਉਤਸਵ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਨ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਇਸ ਘਟਨਾ ਨੂੰ ਬੇਹਦ ਦੁਖਦ ਦਸਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਵੀ ਕਿਸੇ ਜਵਾਨ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਮੋਰਚੇ ਦਾ ਸਿਪਾਹੀ ਹੈ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜਾਉਣਾ ਦੇਸ਼ ਨਿਰਮਾਣ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ। ਇਹ ਮੌਤ ਸ਼ਹਾਦਤ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦਿਤੇ ਜਾਣਗੇ। ■

ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਨਾਲ ਜਗਮਗ ਹੋਇਆ ਦਿੱਲੀ ਸਕੱਤਰੇਤ
ਬਿਜਲੀ ਬਿੱਲ ਦੇ ਬਚੇ 68 ਲੱਖ ਰੁਪਏ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਸਕੱਤਰੇਤ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਐਸਾ ਸਕਤਰੇਤ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ ਜੋ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਨਾਲ ਸੰਚਾਲਿਤ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਯਤਨ ਨਾਲ ਪਿਛਲੇ ਦਿਨੀਂ 68 ਲੱਖ ਰੁਪੈ ਦੀ ਬਚਤ ਹੋਈ ਜੋ ਬਿਜਲੀ ਬਿਲ ਦੇ ਰੁਪ ਵਿਚ ਦੇਣੇ ਪੈਂਦੇ।

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਸ ਉਪਲਬਧੀ ਦੇ ਲਈ ਹਾਲ ਹੀ ਵਿਚ ਗੋਵਾ ਵਿਚ ਆਯੋਜਿਤ ਇਕ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਆਈਪੀਪੀਏਆਈ (ਇੰਡੀਪੈਂਡੇਂਟ ਪਾਵਰ ਪ੍ਰੋਡਯੂਸਰਸ ਐਸੋਸੀਏਸ਼ਨ ਆਫ ਇੰਡੀਆ) ਪਾਵਰ ਐਵਾਰਡ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਦਿੱਲੀ ਸਕਤਰੇਤ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਰਿਤ ਸਕਤਰੇਤ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਬਿਜਲੀ ਵਿਭਾਗ 3 ਮੈਗਾਵਾਟ ਦਾ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਸੰਯੰਤਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। 1 ਮੈਗਾਵਾਟ ਦਾ ਸੰਯੰਤਰ ਚਾਲੂ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਅਗਸਤ 2016 ਤਕ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਬਿਜਲੀ ਬਿਲ ਦੇ 68 ਲਖ ਰੁਪੈ ਦੀ ਬਚਤ ਕੀਤੀ। ਤਿੰਨ ਮੇਗਾਵਾਟ ਦਾ ਸੰਯੰਤਰ ਜਲਦ ਹੀ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਰਗਰਮ ਹੋ ਜਾਏਗਾ।

ਗੋਵਾ ਵਿਚ 24 ਸਤੰਬਰ ਨੂੰ ਆਯੋਜਿਤ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਊਰਜਾ ਸਕਤਰ ਸੁਰੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਜੈਨ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਵਲੋਂ ਇਨਾਮ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਵੈਕਲਪਿਕ ਊਰਜਾ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਉਠਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਸਾਰੇ ਕਦਮਾਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਤੀ। ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰਾਂ ਅਤੇ ਅਵਾਸੀ ਇਮਾਰਤਾਂ ਦੀਆਂ ਛੱਤਾਂ ਨੂੰ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਸੰਯੰਤਰਾਂ ਵਿਚ ਬਦਲਣ ਦੇ ਯਤਨ ਨੂੰ ਕਾਫੀ ਸਲਾਹਿਆ ਗਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਊਰਜਾ ਨੀਤੀ–2016 ਦੇ ਤਹਿਤ ਉਠਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਕਦਮਾਂ ਦੀ ਵਿਸਤਾਰ ਨਾਲ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਤੀ। ਇਸ ਨੀਤੀ ਦੀ ਜਲਵਾਯੂ ਪਰਿਵਰਤਨ ਤੇ ਬਣੀ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੀਮਿਤੀ, ਗ੍ਰੀਨਪੀਸ, ਵੈਕਲਪਿਕ ਊਰਜਾ ਮੰਤਰਾਲਾ ਆਦਿ ਨੇ ਵੀ ਸਲਾਹਿਆ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਜੈਨ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਨੂੰ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਨਾਲ ਸੰਚਾਲਿਤ ਸ਼ਹਿਰ ਯਾਨੀ ਸੋਲਰ ਸਿਟੀ ਵਿਚ ਤਬਦੀਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਸਕਤਰੇਤ ਤੋਂ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਚੇਤੇ ਰਹੇ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਨੀਤੀ ਦੇ ਤਹਿਤ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ 2020 ਤਕ 1,000 ਮੇਗਾਵਾਟ ਬਿਜਲੀ ਦੇ ਉਤਪਾਦਨ ਦੇ ਜਰੀਏ 'ਸੋਲਰ ਸਿਟੀ' ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ 2025 ਤਕ ਵਧਾ ਕੇ 2,000 ਮੈਗਾਵਾਟ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਛੱਤਾਂ ਤੇ ਦੋ ਮੀਟਰ ਦੀ ਉਚਾਈ ਤਕ ਸੌਰ ਪੈਨਲ ਲਗਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਭਵਨ ਉਪ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੰਸ਼ੋਧਨ ਵੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ■

ਸੰਖੇਪ ਵਿਚ...

ਸੱਤਵਾਂ ਪੇਅ ਕਮਿਸ਼ਨ ਲਾਗੂ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ 7ਵੇਂ ਪੇਅ ਕਮਿਸ਼ਨ ਦੀਆਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਅਗਸਤ ਤੋਂ ਹੀ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਗਸਤ ਤੋਂ ਵਧੀ ਹੋਈ ਤਨਖਾਹ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ 1 ਜਨਵਰੀ, 2016 ਤੋਂ ਜੁਲਾਈ 2016 ਤਕ ਦੇ ਬਕਾਇਆ ਤਨਖਾਹ (ਏਰੀਅਰ) ਦੀ ਰਾਸ਼ੀ ਵੀ ਇਕਮੁਸ਼ਤ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਵਿਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਡਿਪਟੀ ਸਕਤਰ ਨੇ ਸਾਰੇ ਵਿਭਾਗ ਪ੍ਰਮੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕੂਲਰ ਜਾਰੀ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਵਿਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਉਪ ਸਕਤਰ ਮਨੋਜ ਕੁਮਾਰ ਦੇ ਵਲੋਂ ਜਾਰੀ ਸਰਕੂਲਰ ਦੇ ਨਾਲ ਕੇਂਦਰ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਅਧਿਸੂਚਨਾ ਅਤੇ ਦਫਤਰ ਮੈਮੋਰੰਡਮ ਦੀਆਂ ਕਾਪੀਆਂ ਵੀ ਅਟੈਚ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਕਾਪੀ ਲੇਖਾ ਕੰਟਰੋਲਰ ਨੂੰ ਵੀ ਭੇਜੀ ਗਈ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਵਿਭਾਗਾਂ ਦਾ ਤਨਖਾਹ ਅਤੇ ਖਾਤਾ ਦਫਤਰ (ਪੀਏਓ) ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਇਸ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ ਲੈਣ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਚਾਲੂ ਵਿਤ ਸਾਲ ਦੇ ਬਜਟ ਵਿਚ 7ਵੇਂ ਤਨਖਾਹ ਕਮਿਸ਼ਨ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਵਧਾਨ ਕਰ ਦਿਤੇ ਸਨ। ਐਸੇ ਵਿਚ 7ਵੇਂ ਤਨਖਾਹ ਕਮਿਸ਼ਨ ਦੀਆਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨੀ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ।

ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਕ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਮੁਕੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਦੀ ਹਤਿਆ ਤੇ ਗਹਿਰਾ ਦੁਖ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਬਤੌਰ ਦੇਣ ਦਾ ਐਲਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। 12ਵੀਂ ਕਲਾਸ ਦੇ ਦੋ ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਅਧਿਆਪਕ ਮੁਕੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਦੀ ਹਤਿਆ ਕਰ ਦਿਤੀ ਸੀ। ਉਪ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਬੇਹਤ ਚਿੰਤਾਜਨਕ ਅਤੇ ਵੱਡਾ ਅਪਰਾਧ ਦਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਪਹੁੰਚੇ ਨੁਕਸਾਨ ਦੀ ਭਰਪਾਈ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ ਲੇਕਿਨ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਆਰਥਿਕ ਮਦਦ ਦਿਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਵੀ ਸੀਮਾ ਤੇ ਖੜੇ ਸਿਪਾਹੀ ਜਿਹਾ ਹੀ ਮਹਾਨ ਹੈ।

ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸੱਜੇ ਸਟਾਫ ਰੂਪ

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਸਟਾਫ ਰੂਮ ਦੀ ਕਾਇਆਪਲਟ ਹੋਵੇਗੀ। ਉਪ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਤੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਬੈਠਣ ਦੇ ਕਮਰੇ ਯਾਨੀ ਸਟਾਫ ਰੂਮ ਨੂੰ ਆਧੁਨਿਕ ਸ਼ਕਲ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਨਵਾਂ ਰੰਗ-ਰੋਗਨ, ਨਵਾਂ ਫਰਨੀਚਰ, ਸਾਜੋ-ਸਜਾਵਟ ਦੇ ਨਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਮਰਿਆਂ ਵਿਚ ਚਾਹ-ਕਾਫੀ ਦੀ ਵੇਡਿੰਗ ਮਸ਼ੀਨ ਵੀ ਲਗੇਗੀ। ਜਿਸ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਅਧਿਆਪਕ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਪੈਸੇ ਦੇ ਕਰ ਸਕਣਗੇ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਾਰੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਦੌਰੇ ਵਿਚ ਪਾਇਆ ਕਿ ਸਟਾਫ ਰੂਮਾਂ ਦੀ ਹਾਲਤ ਬੇਹਦ ਖਰਾਬ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਰੋਜਾਨਾ ਅੱਠ ਘੰਟੇ ਪੜਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਸਨਮਾਨਜਨਕ ਵਿਵਸਥਾ ਕਰਨਾ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਜਿੰਮੇਦਾਰੀ ਹੈ।

ਸੜਕਾਂ ਤੋਂ ਹਟਣਗੀਆਂ ਪੁਰਾਣੀਆਂ ਬੱਸਾਂ

ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਸੜਕਾਂ ਤੋਂ ਡੀਟੀਸੀ ਦੀਆਂ ਪੁਰਾਣੀਆਂ ਸਟੈਂਡਰਡ ਫਲੋਰ ਬਸਾਂ ਹਟਾਈਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। 2013 ਵਿਚ ਐਸੀਆਂ ਬੱਸਾਂ ਦੀ ਸੰਖਿਆ 1500 ਸੀ, ਜਦ ਹੁਣ ਘਟ ਕੇ 340 ਰਹਿ ਗਈ ਹੈ। ਡੀਟੀਸੀ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਹੈ ਕਿ 31 ਦਸੰਬਰ ਤਕ ਐਸੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਬੱਸਾਂ ਨੂੰ ਸੜਕ ਤੋਂ ਹਟਾ ਲਿਆ ਜਾਵੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੱਸਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਉਮਰ ਪੂਰੀ ਕਰ ਲਈ ਹੈ। ਫਿਲਹਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ-ਦਰਾਜ ਦੇ ਰੂਟਾਂ ਤੇ ਚਲਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਉਟਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਰੂਟਾਂ ਤੇ ਐਸੀਆਂ ਬੱਸਾਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦਿਸਦੀਆਂ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਸਰਕਾਰ ਹੁਣ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾ ਕੇ ਨਵੀਂਆਂ ਬਸਾਂ ਲਿਆਉਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਤੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ।

ਮਹਿਮਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਤੈਅ ਤਨਖਾਹ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਮਹਿਮਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਇਕ ਵੱਡਾ ਵਾਅਦਾ ਨਿਭਾਉਣ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਮਹਿਮਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਸੰਘ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਨਿਯਮਿਤ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਤੈਅ ਤਨਖਾਹ ਦੇਣ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਤਿੰਨ ਮੈਂਬਰੀ ਹਾਈਲੇਵਲ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਸੀ ਜਿਸ ਨੇ ਆਪਣੀ ਰੀਪੋਰਟ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਸੌਂਪ ਦਿਤੀ ਹੈ ਜਿਸ ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਅੱਗੇ ਦੀ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਮੀਦ ਜਤਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਮਹਿਮਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਹੁਣ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਦੋਗੁਣੀ ਤਨਖਾਹ ਮਿਲ ਸਕੇਗੀ। ਮੌਜੂਦਾ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਕੋਈ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਆਧਾਰ ਤੇ ਤਨਖਾਹ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਹੁਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨਾ ਸਿਰਫ ਤੈਅ ਤਨਖਾਹ ਮਿਲੇਗੀ ਬਲਕਿ 8 ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਛੁੱਟੀਆਂ ਵੀ ਮਿਲਣ ਦੀ ਚਰਚਾ ਹੈ।

7 ਹਜ਼ਾਰ ਕੇ.ਵੀ. ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਦਾ ਉਤਪਾਦਨ

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਦਾ ਉਤਪਾਦਨ ਲਗਾਤਾਰ ਵਧ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਪਭੋਗਤਾਵਾਂ ਨੇ ਘਰਾਂ ਅਤੇ ਦਫਤਰਾਂ ਤੇ ਕੁਲ ਮਿਲਾ ਕੇ 206 ਸੰਯੰਤਰ ਲਗਾਏ ਹਨ। ਬੀਐਸਈਐਸ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਇਸ ਨਾਲ 7 ਹਜ਼ਾਰ ਕਿਲੋਵਾਟ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਦਾ ਉਤਪਾਦਨ ਹੋਣ ਲਗਾ ਹੈ। ਕੰਪਨੀ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ 50 ਹੋਰ ਪਲਾਂਟ ਵਿਚ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਸੰਯੰਤਰ ਲਗਾਉਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਚਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਕੰਪਨੀ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਇਕ ਕਿਲੋਵਾਟ ਸਮਰਥਾ ਦੇ ਸੰਯੰਤਰ ਤੇ ਕਰੀਬ 80 ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪੈ ਦਾ ਖਰਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਇਕ ਵਾਰ ਖਰਚ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਫਿਰ ਇਹ ਬਿਜਲੀ ਕਾਫੀ ਸਸਤੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਨਾਲ ਹੀ, ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਤੋਂ ਵੀ ਰਾਹਤ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਇਹੋ ਵਜ੍ਹਾ ਹੈ ਕਿ ਲਗਾਤਾਰ ਸੌਰ ਊਰਜਾ ਸੰਯੰਤਰਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਦਿਲਚਸਪੀ ਵਧਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਵਧਿਆ

ਵਿਸ਼ਵ ਸਿਹਤ ਸੰਗਠਨ (ਡਬਲਯੂਐਚਓ) ਦੀ ਤਾਜਾ ਰੀਪੋਰਟ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਦਿੱਲੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਸਭ ਤੋਂ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਿਤ ਸ਼ਹਿਰ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਤੇ ਗਹਿਰੀ ਚਿੰਤਾ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਸਾਰੇ ਕਦਮ ਉਠਾਏ ਹਨ। ਪਰਿਆਵਰਣ ਮੰਤਰੀ ਇਮਰਾਨ ਹੁਸੈਨ ਨੇ ਸਰਕਾਰੀ ਏਜੰਸੀਆਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਜਰੂਰੀ ਕਦਮ ਚੁਕਣ ਦੇ ਹੁਕਮ ਦਿਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਹੁਕਮ ਦਿਤਾ ਕਿ ਸੁਕੇ ਪੱਤਿਆਂ, ਕੂੜਾ ਅਤੇ ਪਲਾਟਸਟਿਕ ਦਾ ਸਮਾਨ ਖੁਲ੍ਹੇ ਵਿਚ ਸਾੜਨ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮਯੂਨਿਸਿਲਪ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਅਤੇ ਜਮੀਨ ਮਾਲਿਕ ਏਜੰਸੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਿਯਮਿਤ ਬੈਠਕ ਦਾ ਵੀ ਹੁਕਮ ਦਿਤਾ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਗੁਆਂਢੀ ਰਾਜਾਂ ਵਿਚ ਫਸਲਾਂ ਦੇ ਅਵਸ਼ੇਸ਼ ਸਾੜਨ ਨਾਲ ਵੀ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਵਧਦਾ ਹੈ, ਖਾਸ ਤੌਂ ਤੇ ਜਦ ਠੰਡ ਵਿਚ ਹਵਾ ਦਾ ਹੇਠਲਾ ਠੰਡਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਦੇ ਕਣ ਸਤਹਾ ਤੇ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ■

مختصر میں...

ساتواں ویتن آیوگ لاگو

دہلی سرکار نے ساتویں ویتن آیوگ کی سفارشیں اگست سے ہی لاگو کرنے کا فیصلہ کیا ہے۔ اگست کے بڑھی ہوئی تنخواہ کے ساتھ ہی یکم جنوری 2016 سے جولائی 2016 تک کے بقایا ویتن (ایریئر) کی رقم بھی یک مشت دی جائے گی۔ ویتن محکمہ کے ڈپٹی سکریٹری نے سبھی محکمہ کے سربراہوں کو اس کیلئے سرکولر جاری کر دیا ہے۔ ویتن محکمہ کے ڈپٹی سکریٹری منوج کمار کی طرف سے جاری سرکولر کے ساتھ مرکزی سرکار کی تمام اعلان اور دفتری اشتہار کی کاپیاں بھی منسلک کی گئی ہیں۔ کاپی تخمینہ رکھنے والے کو بھی بھیج دی گئی ہے۔ سبھی محکموں کے ویتن اور کھاتا دفاتر (پی اے او) سے کہا گیا ہے کہ قبل از وقت ہی اس کی تیاری کر لیں۔ سرکار نے چالو مالی سال کے بجٹ میں 7 ویں ویتن آیوگ کے حساب سے بندوبست کر دیئے تھے۔ ایسے میں ساتویں ویتن آیوگ کی سفارشوں کو لاگو کرنے میں کسی طرح کی مالی پریشانی نہیں ہوگی۔

ٹیچروں کے لواحقین کو ایک کروڑ روپے

دہلی سرکار نے ایک سرکاری اسکول کے ٹیچر مکیش کمار کی قتل پر گہری رنج وغم ظاہر کرتے ہوئے ان کے لواحقین کو ایک کروڑ روپے اعزازی رقم کے بطور دینے کا اعلان کیا ہے۔ 12 ویں کلاس کے دو بچوں نے ٹیچر مکیش کمار کا قتل کر دیا تھا۔ نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے اسے بیحد افسوسناک اور سنگین جرم بتایا۔ انہوں نے کہا کہ ٹیچر کے لواحقین کو پہونچی ضرب کی بھرپائی تو نہیں ہوسکتی لیکن پریوار کو فوراً مالی مدد دی جارہی ہے۔ انہوں نے کہا کہ دہلی سرکار ٹیچروں کا احترام کرتی ہے اور مانتی ہے کہ ٹیچر کا تعاون بھی سرحد پر کھڑے سپاہی جیسا ہی عظیم ہے۔

اسکولوں میں بہترین اسٹاف روم

دہلی کے سرکاری اسکولوں کے اسٹاف روم کی ہیئت بدل جائے گی۔ نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا کی ہدایت پر ٹیچروں کے بیٹھنے کے کمرے یعنی اسٹاف روم اور جدید شکل دی جائے گی۔ نیا رنگ وروغن، نیا فرنیچر، تزئین کاری کے ساتھ ان کمروں میں چائے کافی کی وینڈنگ مشین بھی لگے گی۔ جس کا استعمال اساتذہ بنا کسی پیسے کے کر سکیں گے۔ نائب وزیر اعلیٰ کے مطابق انہیں تمام سرکاری اسکولوں کے دورے میں پایا کہ اسٹاف روموں کی حالت بیحد خراب ہے۔ ٹیچر اسکول میں روزانہ آٹھ گھنٹے پڑھاتے ہیں تو اس کے لئے بہتر ڈھنگ سے انتظام کرنا سرکار کی ذمہ داری ہے۔

سڑکوں سے ہٹیں گی پرانی بسیں

دہلی کی سڑکوں سے ڈی ٹی سی کی پرانی اسٹینڈرڈ فلور بسیں ہٹائی جارہی ہیں۔ 2013 میں ایسی بسوں کی تعداد 1500 تھی جب اب ہٹ کر 340 رہ گئی ہے۔ ڈی ٹی سی کی یوجنا ہے کہ 31 دسمبر تک ایسی سبھی بسوں کو سڑک سے ہٹا لیا جائے۔ ان بسوں نے اپنی عمر پوری کر لی ہے۔ فی الحال انہیں دور دراز کے روٹوں پر چلایا جاتا ہے۔ لیکن سرکار اب انہیں ہٹا کر نئی بسیں لانے کی یوجنا پر تیزی سے کام کر رہی ہے۔

عارضی ٹیچر کو فکسڈ تنخواہ

دہلی سرکار مہمان ٹیچروں سے کہا گیا ایک بڑا وعدہ نبھانے کی تیاری کر رہی ہے۔ دہلی عارضی ٹیچر یونین نے سرکار سے مستقل ٹیچروں کی طرح، انہیں بھی مقررہ تنخواہ دینے کی مانگ کی تھی۔ اس تعلق میں سرکار نے تین سطحی ہائی لیول کمیٹی بنائی تھی۔ جس نے اپنی رپورٹ سرکار کو سونپ دی ہے جس پر سرکار آگے کی کارروائی کر رہی ہے۔ امید جتائی جارہی ہے کہ عارضی ٹیچروں کو ابھی کے مطابق دوگنی تنخواہ مل سکے گی۔ موجودہ انتظام میں انہیں روزانہ طور پر تنخواہ ملتی ہے اب انہیں نہ صرف مقررہ تنخواہ ملے گی بلکہ آٹھ اتفاقیہ چھٹی بھی ملنے کا ذکر ہے۔

7 ہزار کے وی شمسی توانائی کی پیداوار

دہلی میں شمسی توانائی کی پیداوار لگاتار بڑھ رہی ہے۔ صارفین نے گھروں اور دفتروں پر کل ملا کر 206 آلات لگائے ہیں۔ بی ایس ای ایس کے مطابق اس سے سات ہزار کلوواٹ شمسی توانائی کی پیداوار ہونے لگی ہے۔ کمپنی کے مطابق 50 اور پلانٹوں میں سولر پینل لگانے کی قواعد چل رہی ہے۔ کمپنی کے مطابق ایک کلوواٹ طاقت کے پینل پر قریب 80 ہزار روپے خرچ آتا ہے۔ لیکن ایک بار خرچ ہونے کے بعد پھر یہ بجلی کافی سستی پڑتی ہے۔ ساتھ ہی آلودگی سے بھی راحت ملتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ لگاتار شمسی توانائی پینل کے تئیں دلچسپی بڑھتی جارہی ہے۔

دہلی میں آلودگی بڑھی

عالمی ہیلتھ آرگنائزیشن (ڈبلو ایچ او) کی تازہ رپورٹ کے مطابق دہلی دنیا کا دوسرا سب سے آلودہ شہر ہوگیا ہے۔ دہلی سرکار نے اس پر گہری تشویش جتاتے ہوئے تمام قدم اٹھائے ہیں۔ ماحولیات وزیر عمران حسین نے سرکاری ایجنسیوں کو اس تعلق سے ضروری قدم اٹھانے کی ہدایت دی۔ انہوں نے ہدایت دی کہ سوکھے پتوں، کوڑا اور پلاسٹک کا سامان کھلے میں جلانے والوں کے خلاف کارروائی کی جائے۔ انہوں نے میونسپل محکموں اور اراضی کے مالک ایجنسیوں کے ساتھ مستقل بنیاد پر میٹنگ کی بھی ہدایت دی۔ دہلی میں پڑوسی صوبوں میں فصلوں کے بقایا جلانے سے بھی آلودگی بڑھتی ہے۔ خاص طور پر جب ٹھنڈ میں ہوا کی نچلی سطح ٹھنڈی ہوجاتی ہے اور آلودگی کے ذرات سطح پر ہی رہ جاتے ہیں۔

شمسی توانائی سے جگمگ ہوا دہلی سیکریٹریٹ

بجلی بل کے بچے 68 لاکھ روپئے

دہلی سرکار کا سچوالیہ ملک کا پہلا ایسا سچوالیہ بن گیا ہے جو پوری طرح سمشی توانائی سے مزین ہے دہلی سرکار کے اس کوشش سے پہلے دنوں 68 لاکھ روپئے کی بچت ہوئی جو بجلی بل کی شکل میں دینے پڑتے۔

دہلی سرکار کو اس کامیابی کیلئے حال میں گوا میں منعقدہ ایک تقریب میں آئی پی پی اے آئی (اینڈیپینڈ ینٹ پاور پروڈیوسرس ایسوسی ایشن آف انڈیا) پاور ایوارڈ سے نوازا گیا۔ دہلی سچوالیہ کو پوری طرح ہرت سچوالیہ بنانے کے سلسلے میں بجلی محکمہ تین میگا واٹ سمشی توانائی پینل قائم کر رہا ہے۔ ایک میگا واٹ پینل چالو ہے جس سے اگست 2016 تک سرکار نے بجلی بل کے 68 لاکھ روپئے کی بچت کی ۔تین میگا واٹ پینل جلد ہی پوری طرح آپریشنل ہو جائے گا۔

گوا میں 24 ستمبر کو منعقدہ تقریب میں دہلی سرکار کے توانائی سیکریٹری سریش کمار جین نے سرکار کی جانب سے ایوارڈ حاصل کیا۔ انہوں نے متبادل توانائی کے میدان میں کیجریوال سرکار کے ذریعہ اٹھائے جارہے تمام قدموں کی جانکاری دی۔ سرکاری دفتروں اور رہائشی عمارتوں کی چھتوں کو سمشی توانائی پینلوں میں بدلنے کی کوشش کو کافی سراہا گیا۔ انھوں نے دہلی اور توانائی نیتی 2016 کے تحت اٹھائے جارہے قدموں کی تفصیل سے جانکاری دی۔ اس منصوبہ کی تبدیلیٔ آب و ہوا پر بنی اقوام متحدہ، گرین پیس، ماحولیاتی بدلاؤ وزارت وغیرہ نے بھی سراہا ہے۔

جناب جین نے بتایا کہ کیجریول سرکار ملک کی راجدھانی کو سمشی توانائی سے چلنے والا شہر یعنی سولر سٹی میں تبدیل کرنا چاہتی ہے اور اس کی شروعات سچوالیہ سے کی گئی ہے۔ غور طلب ہے کہ دہلی سرکار کی سمشی توانائی پالیسی کے تحت دہلی کو 2020 تک 1000 میگا واٹ بجلی کے پیداوار کے ذریعہ سولر سٹی بنانا ہے اور اسے 2025 تک بڑھا کر 2000 میگا واٹ کرنا ہے۔ سرکار نے چھتوں پر 2 میٹر کی اونچائی تک سمشی پینل لگانے کیلئے بلڈنگ ضوابط میں ترمیم بھی کیا ہے۔

دہلی کے بہادروں کو ملیں گے بہادری ایوارڈ

15اگست اور 26جنوری پر 2لاکھ کا نقد انعام

فائر بریگیڈ ملازمین کی ڈیوٹی کے دوران موت پر بھی ملیں گے ایک کروڑ

اپنی جان خطرے میں ڈال کر زندگی یا جائیداد کا نقصان بچانے والوں کو دہلی سرکار اگلے سال سے یوم آزادی اور یوم جمہوریہ پر ریاستی سطح پر بہادری انعامات سے نوازا کرے گی۔ ساتھ ہی فائر بریگیڈ محکمہ، پولیس محکمہ یا ہنا وردی والے محکموں ملازمینوں کے پریواروں کو بھی ایک کروڑ روپئے کی انعامی رقم دی جائے گی۔ جن کی کام کے دوران جان جائے گی۔

بہادری ایوارڈ اور بہادری انعام کے تحت 2لاکھ روپئے نقد دیئے جائیں گے۔ 15اگست اور 26جنوری کو دئے جانے والے اس انعام کیلئے باشندوں کو اپنا نام تجویز کرنے کا بھی اختیار ہوگا۔ ساتھ ہی وہ کسی دیگر کا نام بھی تجویز کر سکیں گے۔ ایسے دس انعام 15اگست کو اور دس 26جنوری کو تقریب میں نوازے جائیں گے۔

اس کے علاوہ سرکار نے یہ فیصلہ بھی کیا ہے کہ دہلی کے فائر بریگیڈ محکمہ کے جن ملازمین کی زندگی یا جائیداد کا نقصان سے بچانے کے دوران ہوگی، ان کے پریواروں کو بھی ایک کروڑ روپئے کی انعام رقم مالی مدد کے طور پر دی جائے گی۔

ابھی تک سرکار کی اس مالی مدد یوجنا کے تحت پولیس، مسلح افواج نیم فوجی دستہ اور ہوم گارڈ جیسے وردی والے ملازمینوں کو ہی ملتا تھا۔ یہی نہیں، ہلی کے باہر ڈیوٹی کے باہر جان گنوانے والے وردی والے ملازمینوں کے پریواروں کو بھی اس کا فائدہ ملے گا۔ اگر پریوار دہلی میں رہتے ہوگا۔

پچھلے دنوں دہلی سرکار نے دہلی کے ایک استاد کو بھی شہید مانتے ہوئے پریواروں کو ایک کروڑ روپئے اعزازی رقم دینے کا اعلان کیا تھا۔ اس ٹیچر کی دو طلبا نے چاقوؤں سے قتل کر دیا تھا۔ شہید استو میں اپنے خطاب کے دوران حادثہ کو بیحد دکھ بتاتے ہوئے وزیر اعلیٰ کیجر یوال نے کہا تھا کہ ٹیچر بھی کسی جوان کی طرح ہی مورچے کا سپاہی ہے۔ بچوں کو ملک کی تعمیر کا کام ہے۔ یہ موت شہادت ہے۔ اسلئے ان کے پریواروں کو بھی ایک کروڑ روپئے دیئے جائیں گے۔

شہادت سے پہلے ساتھیوں کو آخری خط

22/مارچ 1931

ساتھیو،

فطرت ہے کہ جینے کی خواہش مجھ میں بھی ہونی چاہئے، میں اسے چھپانے نہیں چاہتا۔ لیکن ایک شرط پر زندہ رہ سکتا ہوں، کہ میں قید ہو کر یا پابند ہو کر جینا نہیں چاہتا۔

میرا نام ہندوستانی کرانتی کا علامت بن چکا ہے۔ اور کرانتی کاری دَل کے آئیڈیل اور قربانیوں نے مجھے بہت اونچا اٹھا دیا ہے۔ اتنا اونچا کہ زندہ رہنے کی حالت میں اس سے اونچا ہر گز نہیں ہو سکتا۔

آج میری کمزوریاں عوام کے سامنے نہیں ہیں۔ اگر پھانسی سے بچ گیا تو وہ ظاہر ہو جائے گی اور کرانتی کا علامت نشان کم پڑ جائے گی۔ یا ممکن ہے کہ مٹ ہی جائے۔ لیکن دلیرانہ ڈھنگ سے ہنستے ہنستے میرا پھانسی چڑھنے کی صورت میں ہندوستانی مائیں اپنے بچوں کے بھگت سنگھ بننے کی آرزو کیا کریں گی اور ملک کی آزادی کیلئے قربانی دینے والوں کی تعداد اتنی تعداد بڑھ جائے گی کہ کرانتی کو روکنا ملوکیت یا تمام شیطانی طاقتوں کے مقدور کی بات نہیں رہے گی۔

ہاں، ایک سوچ آج بھی میرے من میں آتا ہے کہ ملک اور انسانیت کے لئے جو کچھ کرنے کی حسرتیں میرے دل میں تھیں، ان کا ہزارواں حصہ بھی پورا نہیں کر سکا۔ اگر آزاد، زندہ رہ سکتا تب شاید انھیں پورا کرنے کا موقع ملتا اور میں اپنی حسرتیں پوری کر سکتا اس کے سوا میرے من میں کبھی کوئی لالچ پھانسی سے بچے رہنے کا نہیں آیا۔ مجھ سے زیادہ خود قسمت کون ہوگا؟ آج کل مجھے خود پر بہت فخر ہے۔ اب بڑی بے تابی سے آخری امتحان کا انتظار ہے۔ تمنا ہے کہ یہ اور نزدیک ہو جائے۔

آپ کا ساتھی

بھگت سنگھ

جنگ کے مختلف ہیئت

ہوسکتا ہے کہ یہ لڑائی الگ ۔الگ جانبوں میں الگ الگ شکل اپنائے۔ کسی وقت یہ لڑائی ظاہری شکل لے لے ۔کبھی پوشیدہ حالت میں چلتی رہے،کبھی بھیانک شکل اختیار کرلے،کبھی کسان کے سطح پر جنگ جاری رہے اور کبھی یہ حادثہ اتنا بھیانک ہوجائے کہ زندگی اور موت کی بازی لگ جائے۔چاہے کوئی بھی حالت ہو،اس کا اثر آپ پر پڑے گا۔یہ آپ کی خواہش ہے کہ آپ جس حالت کو چاہئے چن لیں،لیکن یہ لڑائی جاری رہے گی۔اس میں چھوٹی چھوٹی باتوں پر دھیان نہیں دیا جائے گا بہت ممکن ہے کہ یہ جنگ بھیانک شکل میں اختیار کرلے۔پر یقینی ہے کہ یہ اس وقت تک ختم نہیں ہوگی جب تک سماج کا موجودہ ڈھانچہ ختم نہیں ہوجاتا،ہر ایک شئے میں تبدیلی یا کرانتی ختم نہیں ہوجاتی اور انسانی زندگی میں

آخری جنگ

مستقبل قریب میں آخری جنگ لڑی جائے گی اور یہ جنگ فیصلہ کن ہوگی ملوکیت وسرمایہ دار کچھ دنوں کے مہمان ہیں۔یہی وہ لڑائی ہے جس میں ہم نے براہ راست سے حصہ لیا ہے اور ہم اپنے پر فخر کرتے ہیں کہ اس جنگ کو نہ تو ہم نے شروع ہی کیا اور نہ یہ ہماری زندگی کے ساتھ ختم ہی ہوگا۔ہماری خدمات تاریخ کے اس صفحات میں لکھی جائیں گی جس کو یتندر ناتھ داس اور بھگوتی چرن کے قربانیوں نے مخصوص شکل میں روشن کردیا ہے۔ان کی قربانی مہان ہیں۔جہاں تک ہماری قسمت کا تعلق ہے، ہم زوردار لفظوں میں آپ سے یہ کہنا چاہتے ہیں کہ آپ نے ہمیں پھانسی پر لٹکانے کا فیصلہ کرلیا ہے۔آپ ایسا کریں گے ہی،آپ کے ہاتھوں میں طاقت ہے اور آپ کو حق بھی حاصل ہے۔لیکن اس طرح آپ جس کی لاٹھی اس کی بھینس والا مثل ہی اپنا رہے ہیں اور آپ اس پر عہد پابند ہیں ہمارے مقدمہ کی سنوائی اس بات کو درست کرنے کیلئے حاصل ہے کہ ہم نے کبھی کوئی درخواست نہیں کی اور اب بھی ہم آپ سے کسی طرح کی رحم کی التجا نہیں کرتے۔ہم آپ سے صرف یہ التجا کرنا چاہتے ہیں کہ آپ کی سرکار

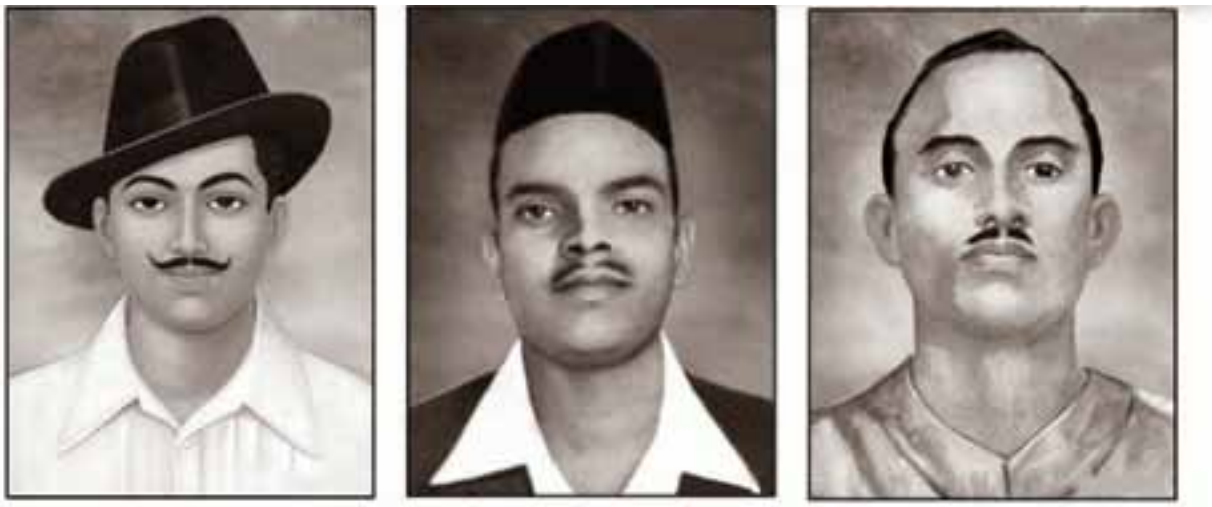

भगत सिंह राजगुरु सुखदेव

کے ہی ایک عدالت نے فیصلہ کے مطابق ہماری خلاف جنگ جاری رکھنے کا مقدمہ ہے۔اس حالت میں ہم جنگ بندی ہیں،اسلئے اس بنیاد پر ہم آپ سے مانگ کرتے ہیں کہ ہماری تئیں جنگ بندیوں جیسا ہی برتاؤ کیا جائے اور پھانسی دینے کے بدلے گولی سے اڑادیا جائے۔

اب یہ ثابت کرنا آپ کا کام ہے کہ آپ کو اس فیصلہ میں یقین ہے جو آپ کی سرکار کے عدالت نے کیا ہے۔آپ اپنے کام کے ذریعہ اس بات کی تصدیق کیجئے۔ہم ازراہ امتثال سے التجا کرتے ہیں کہ آپ اپنے فوجی محکمہ کو اجازت دے دیں کہ ہمیں گولی سے اڑانے کیلئے ایک فوجی ٹولی بھیج دی جائے۔

آپ کا،

بھگت سنگھ،راج گرو،سکھ دیو

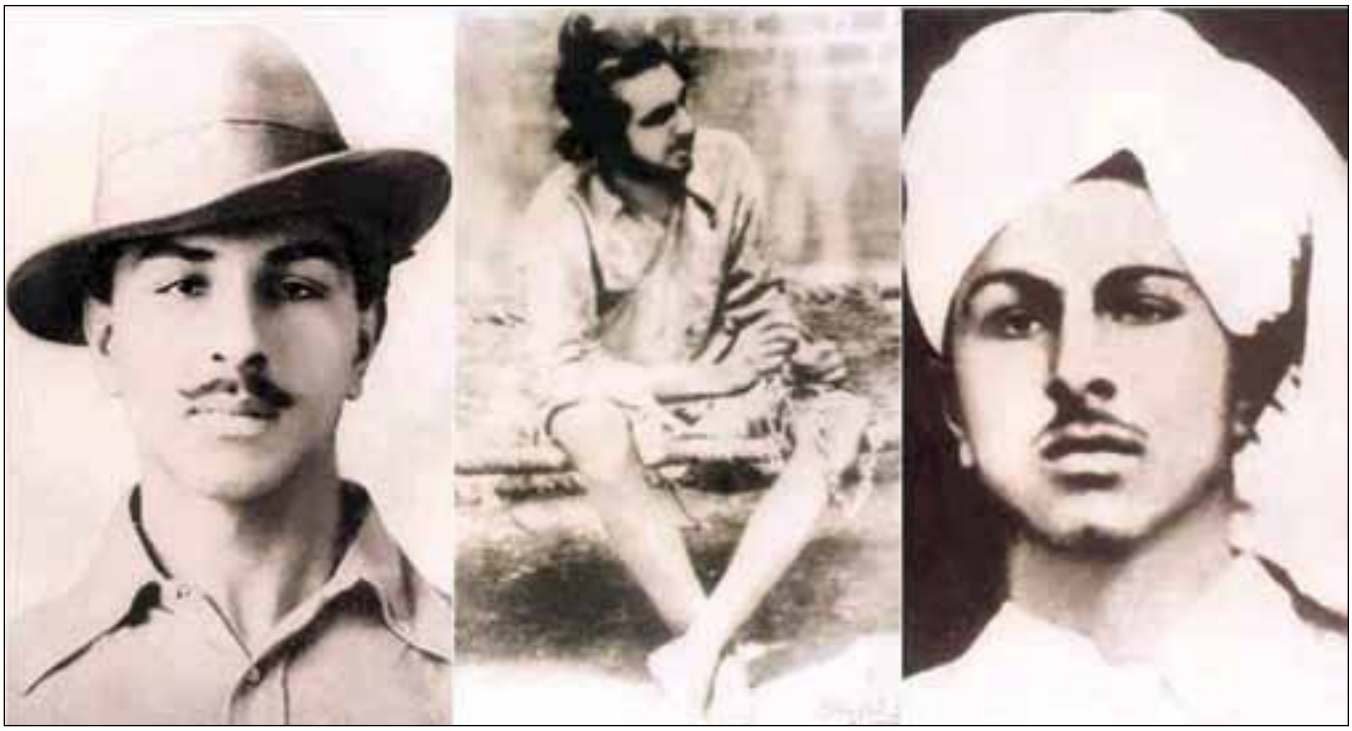

کہ جنگ چھڑنے سے عدالت کی امید کیا ہے؟ لیکن ہم اس تشریح کو منظور کرتے ہیں اور ساتھ ہی اسے اسکے متعلق میں سمجھانا چاہتے ہیں۔

جنگ کی حالت

ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ جنگ چھڑی ہوئی ہے اور یہ لڑائی تب تک چلتی رہے گی جب تک کہ طاقتور آدمیوں نے بھارتیہ عوام اور مزدوروں کی آمدنی کے انتظاموں پر اپنا اختیار کر رکھا ہے۔ چاہے ایسے آدمی انگریز سرمایہ دار اور انگریز یا سیدھا سادھا بھارتیہ ہی ہوں، انھوں نے آپس میں ملکر ایک لوٹ جاری کر رکھی ہے۔ چاہے خالص بھارتیہ سرمایہ داروں کے ذریعہ ہی غریبوں کا خون چوسا جا رہا ہو تو بھی اس حالت میں کوئی فرق نہیں پڑتا۔ اگر آپ کی سرکار کچھ نیتاؤں یا بھارتیہ سماج کے مکھیوں پر اثر جمانے میں کامیاب ہو جائے، کچھ سہولتیں مل جائے یا سمجھوتے ہو جائیں، اس سے بھی حالت نہیں بدل سکتی اور عوام پر اس کا اثر بہت کم پڑتا ہے۔ ہمیں اس بات کی بھی فکر نہیں کی۔ نوجوانوں کو ایک بار پھر دھوکا دیا گیا ہے اور اس بات کا بھی ڈر نہیں ہیکہ ہمارے راج نیتک نیتا بدعنوان ہو گئے ہیں اور وہ سمجھوتے کی بات چیت میں ان بے قصور بے گھر اور یقینی قربانی دینے والوں کو بھول گئے ہیں جنہیں بدقسمتی سے کرانتی کاری پارٹی کا ممبر سمجھا جاتا ہے ہمارے راج نیتک نیتا انھیں اپنا دشمن مانتے ہیں کیونکہ ان کے وچار میں وہ لڑائی میں یقین رکھتے ہیں۔ ہمارے شوہروں کو سولی پر قربان کر دیا۔ بھائی قربان کئے، اور جو کچھ بھی ان کے پاس تھا سب نچھاور کر دیا انہوں نے اپنے آپ کو بھی نچھاور کر دیا۔ لیکن آپ کی سرکار نے باغی سمجھتی ہے۔ آپ کے ایجنٹ بھلے ہی جھوٹی کہانیاں بنا کر انھیں بدنام کر دیں اور پارٹی کی مقبولیت کو نقصان پہونچانے کی کوشش کریں۔ لیکن یہ جنگ چلتی رہے گی۔

ہمیں پھانسی دینے کے بجائے گولی سے اڑا یا جائے!

(پھانسی پر لٹکائے جانے سے 3دن پہلے۔20مارچ1931 کو ۔بھگت سنگھ اوران کے ساتھیوں راج گرو،اور سکھ دیو نے لکھے گئے لیٹر کے ذریعہ شامل ہونے سے پنجاب کے گورنر سے مانگ کی تھی کہ انھیں جنگ بندی مانا جائے اور پھانسی پر لٹکائے جانے کے بجائے گولی سے اڑادیا جائے۔یہ خط ان قومی جوانوں کی صلاحیت،سیاسی سوجھ بوجھ ،ہمت اورحوصلہ کی ناقابل فراموش قصہ کاایک اہم باب ہے۔

20مارچ1931

کاپی،گورنرپنجاب،شملہ

عزت مآب

مناسب عزت کے ساتھ ہم نیچےلکھی باتیں آپ کی خدمت میں رکھ رہے ہیں۔

بھارت کی برٹش سرکار کے اعلیٰ آفیسر وائس رائے نے ایک خصوصی نوٹی فیکشن جاری کرکے لاہور سازش الزام کی سنوائی کیلئے ایک خصوصی نیادھیکرن (ٹربیونل) قائم کیا تھا،جس نے 7اکتوبر 1930 کو ہمیں پھانسی کی سزاسنائی۔ہمارے خلاف سب سے بڑاالزام لگایا ہے کہ ہم نے سمراٹ جارج پنچم کے خلاف جنگ کیا ہے۔

عدالت کے اس فیصلہ سے دوباتیں صاف ہوجاتی ہیں۔

پہلی یہ کہ انگریز ذاتی اور بھارتیہ عوام کے ذریعہ ایک جنگ چل رہی ہے۔دوسری یہ ہیکہ ہم نے یقینی طور سے اس جنگ میں حصہ لیا ہے۔اسلئے ہم جنگ بندی ہیں۔

حالانکہ ان کی تشریح میں بہت حدتک مبالغے سے کام لیا گیا ہے مگر پھر بھی ہم یہ کہے بغیرنہیں رہے سکتے کہ ایسا کرکے ہمیں اعزازا کیا گیا ہے۔پہلی بات کے متعلق میں ہم تھوڑی تفصیل سے روشنی ڈالنا چاہتے ہیں۔ہم نہیں سمجھتے کہ براہ راست ایسی کوئی لڑائی چھڑی ہوئی ہے۔ہم نہیں جانتے

دھلی کو ملی سو بسوں کی سوغات

کلسٹر بسوں کی تعداد ہوئی 1590

دھلی کی ٹرانسپورٹ انتظام کو بہتر بنانے کیلئے حکومت کی کوشش رنگ لانے لگی ہے۔اسی کے تحت 100 نئی بسیں سڑکوں پر اتاری گئی ہیں۔یہ سبھی بسیں جی پی ایس سہولت سے لیس ہیں اوران میں الیکٹرانک ٹکٹ کا انتظام بھی ہے۔اگلے مرحلہ میں ایسی 800 بسیں اور آئیں گی جس میں 431 پوری طرح ایئر کنڈیشن ہونگی۔

18 ستمبر کو اسمبلی کمپلیکس میں ہوئے ایک خصوصی پروگرام میں ان سبھی بسوں کو عوام کو وقف کیا گیا۔اس پروگرام کی صدارت دہلی ودھان سبھا کے چیئرمین جناب رام نواس گوئل نے کی۔انہوں نے دہلی سرکار کو مفاد عامہ اٹھایا گیا اہم قدم بتاتے ہوئے حکومت کو مبارکباد دی۔

اس موقع پر ٹرانسپورٹ وزیر جناب ستیندر جین نے بتایا کہ ٹرانسپورٹ نظام کو مضبوط بنانے کیلئے 3000 نئی بسیں چلائی جائیں گی۔یہ حدا سی مالی سال میں پورا کرلیا جائیگا۔انھوں نے کہا کہ حکومت بس خدمات کو بہتر بنا کر لوگوں کا بھروسہ حاصل کرنا چاہتی ہے۔میٹرو فیڈر بسوں کی تعداد بڑھائی جائیگی۔جس سے لوگ عوامی ٹرانسپورٹ کا زیادہ سے زیادہ استعمال کریں۔ان بسوں میں آرام دہ سیٹوں کا انتظام ہے جس سے مسافروں کا سفر سہانہ ہوگا۔ساتھ ہی الیکٹرانک ٹکٹ سسٹم کی وجہ سے وقت کی کافی بچت ہوگی۔

ان بسوں کے سڑک پر اترنے سے دہلی میں کلسٹر بسوں کی تعداد 1590 ہوگئی ہے۔یہ بسیں شمال مشرقی اور پچھمی دہلی میں چلائی جائیں گی۔موری گیٹ، پرانی دہلی، میو وہار فیز۔3، اندر پوری، امبیڈکر نگر اور کملا مارکٹ میں ان بسوں کا ٹرمنل ہوگا۔ان بسوں کا روٹ بڑے اسپتال، میٹرو اسٹیشن اور بس اڈہ سے جوڑا جائے گا۔کشمیری گیٹ، آنند وہار اور سرائے کالے خاں کے انٹراسٹیٹ بس اڈوں تک ان کی پہنچ سے مسافروں کو کافی راحت دے گی۔

’شہید فنڈ‘ کا افتتاح

ج کی پیڑھی نے تمام شہیدوں کا صرف نام سنا ہے۔ان کے زندگی اور تجویز کولیکر زیادہ جانکاری اس کے پاس نہیں ہے۔اس کمی کو دور کرنے
یلئے دہلی حکومت نےshahedkohs.delhi.gov.inشروع کی ہے جس کا افتتاح شہید اتسو کے دوران کیا گیا۔

ں ویب سائٹ میں ملک بھر کے شہیدوں اور مجاہدین سپاہی کا ڈاٹا بیس تیار کیا جائے گا۔اس فنڈ میں ملک کے شہیدوں سے جوڑے سبھی
یلات کا انتظام کیا جائے گا۔سرکار اس کے لئے بھارتیہ سیکریڑیوں اور سفارت کاروں کے ذریعہ سے بنگلہ دیش، برما، انگلینڈ، کناڈا اور امریکہ
برہ ملکوں میں بھی رہ رہے مجاہدین سپاہیوں، ان کے پریواروں کے ممبروں یا ان کے نزدیکی رشتہ داروں سے بھی رابطہ کرنے کی کوشش کرے گی۔

زندگی کامیاب ہو جائے گی۔انھوں نے اس موقع پر شہید فنڈ ویب سائٹ کے لانچ کو اہم بتاتے ہوئے کہا کہ دنیا کے کونے۔کونے میں بیٹھے لوگ اس کے ذریعے شہیدوں کی زندگی اور سنگھرش کے بارے میں جان پائیں گے۔پروگرام کی صدرات دہلی کے وزیر محنت وروزگار جناب گوپال رائے نے کی۔اس موقع پر تمام ثقافتی پروگرام بھی ہوئے۔

’میرا رنگ دے بسنتی چولا‘ جیسی دیش بھگتی کی تھیم پر منعقد پروگراموں نے لوگوں کو شہیدوں کی یادوں میں بھگو دیا۔پنجاب کے مشہور گلوکار ہر بھجن سنگھ مان کی پیش کردہ نے ایسے سماں باندھا کہ اسٹیڈیم میں موجود ہزاروں لوگوں کے بیچ حب الوطنی کا جذبہ بیدار ہو گیا۔

وزیراعلیٰ جناب اروند کجریوال نے کہا کہ اگر وہ بھگت سنگھ کے سپنوں کا ایک فیصدی بھی پورا کر سکے تو زندگی کامیاب سمجھیں گے۔انھوں نے کہا کہ بھگت سنگھ کے تجویز کے اطلاعات وتشہیر کیلئے دہلی حکومت ان کے نام پر ایک فاؤنڈیشن بنائے گی۔فاؤنڈیشن بھگت سنگھ کے ساتھ۔ساتھ تمام دیگر شہیدوں کی زندگی اور تجویزوں پر عمل کر کے اطلاعات وتشہیر کریگا۔انھوں نے کہا کہ جو سماج اپنے شہیدوں کی قربانی بھول جاتا ہے،اس کا کوئی مستقبل نہیں ہوتا۔

وزیراعلیٰ نے اس موقع پر وزیراعظم سے مانگ کی کہ جس طرح دہلی حکومت سرحد اور ملک کے اندر اپنی ڈیوٹی نبھاتے ہوئے شہید ہونے والوں کے پریواروں کو ایک کروڑ روپئے کی اعزازی رقم دیتی ہے،ویسے ہی تعاون مرکزی حکومت بھی کرے۔اڑی حملے میں شہید ہوئے 18 جوانوں کو سلام کرتے ہوئے انھوں نے کہا کہ ان کے پریواروں کو ایک کروڑ کی رقم دینے کے ساتھ مرکزی سرکار یہ شروعات کر سکتی ہے۔

شہید اتسو کو خطاب کرتے ہوئے نائب وزیراعلیٰ منیش سسو دیا نے کہا کہ بھگت سنگھ ہم سب کے اندر زندہ ہیں۔شہید اتسو آنے والی پیڑھی کے نام پیغام ہے کہ شہید ہونا اپنے آپ میں اتسو ہے۔شہادت کا بھاؤ رکھنا ہی اتسو کا کام ہے۔انھوں نے کہا کہ بھگت سنگھ انقلاب کی جس کتاب کو ادھورا چھوڑ گئے ہیں،اگر ان کی سرکار اس میں ایک صفحہ بھی جوڑ پائے تو

'شہید اُتسو' میں شامل ہوئے شہیدوں کے پریوار

بھگت سنگھ کے بتائے راستے پر ہے دھلی حکومت

۔کیجریوال

دھلی میں بنے گا بھگت سنگھ فاؤنڈیشن

دھلی میں بنے گا شہید بھگت سنگھ فاؤنڈیشن یہ اعلان 28 ستمبر کو شہید اعظم بھگت سنگھ کی 110 ویں جینتی پر منعقدہ شہید اتسو کے دوران دہلی کے وزیراعلیٰ جناب اروند کیجریوال نے کیا۔ تالکٹورہ اسٹیڈیم میں منعقد اس تقریب میں وزیراعلیٰ نے شہید بھگت سنگھ اور شہید سکھ دیو سنگھ کے علاوہ تمام دیگر شہیدوں کے پریواروں کے ساتھ 190 مجاہد آزادی سپاہیوں کو بھی اعزاز سے نوازا گیا۔

وزیراعلیٰ جناب کیجریوال نے کہا کہ شہیدوں کی یوم پیدائش یا یوم شہادت منانا اچھی بات ہے، لیکن اس سے بھی ضروری ہے ان کے بتائے ہوئے راستے پر چلنا ۔بھگت سنگھ صرف 23 سال کی عمر میں شہید ہوئے لیکن انھوں نے بہت پڑھا، لکھا۔ انھوں نے لکھا کہ صرف انگریزوں کو بھگانے سے آزادی نہیں آئے گی، سچی آزادی تب آئی گی جب کسانوں ،مزدوروں، غریبوں کے ہاتھ میں حکومت ہوگی۔ لیکن ہمارے ملک میں ماحول یہ ہے کہ ووٹ لینے کے وقت ہی غریبوں کی یاد آتی ہے۔ نیتا لوگ چناؤ میں غریبوں کے سامنے ہاتھ جوڑتے ہیں لیکن جیتنے کے بعد انہیں سرمایہ داروں کی یاد آتی ہے۔ غریبوں کی بات کرنے پر پرانے وعدوں کو جملہ بتا دیتے ہیں۔

وزیراعلیٰ نے کہا کہ سرکاری اسکولوں کو جان بوجھ کر برباد کیا گیا جہاں غریبوں کے بچے پڑھتے ہیں تاکہ پرائیویٹ اسکول چمک سکے۔ دہلی حکومت حالات بدل رہی ہے۔ آج دہلی میں غریبوں کے بچوں کو سرکاری اسکولوں میں پرائیویٹ اسکولوں سے بہتر ماحول مل رہا ہے۔ اساتذہ کو آکسفورڈ اور کیمبرج بھیج کر ٹریننگ دلائی جا رہی ہے۔ سرکاری اسپتالوں میں دوا، جانچ، علاج پوری طرح مفت کر دیا گیا ہے اور کم سے کم مزدوری 9 ہزار سے بڑھا کر 14 ہزار روپے مہینے کی جا رہی ہے جو ملک میں سب سے زیادہ ہے۔ یہ غریبوں کی سرکار ہے جو غریبوں کے ہاتھ میں اقتدار دینا چاہتی ہے۔ شہید اعظم بھگت سنگھ یہی چاہتے تھے۔

صدر جمہوریہ جی کی کلاس

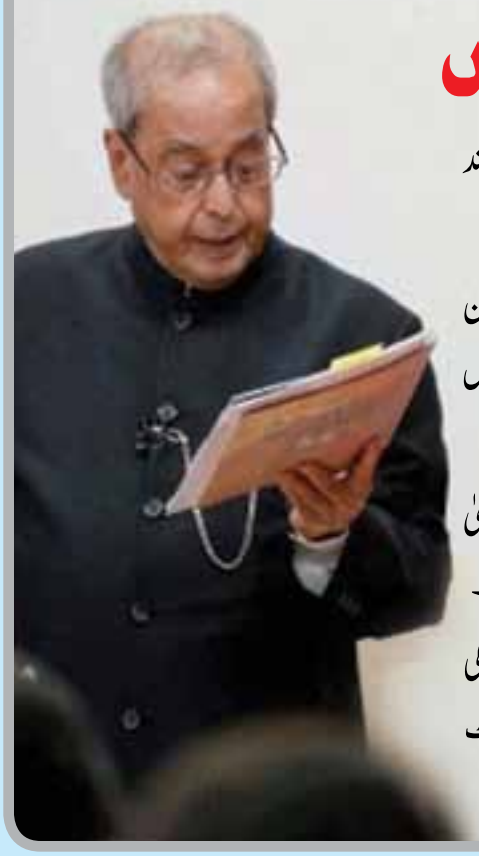

یوم اساتذہ پر صدر جمہوریہ ہند جناب پرنب مکھر جی بھی استاذ کی رول میں نظر آئے۔انھوں نے ڈاکٹر راجندر پرساد سرودیہ ودیالیہ میں ایک گھنٹے تک بچوں کو پڑھایا۔یہ ودیالیہ راشٹرپتی بھون کے کمپلیکس میں قائم ہے۔

صدر جمہوریہ جی نے 11 ویں اور 12 ویں کے قریب 80 طلباء کو بھارتیہ راج نیتی کی تاریخ مضمون پر قریب ایک گھنٹے کا سبق پڑھایا۔صدر جمہوریہ نے آزادی کے بعد بھارتیہ راج نیتی کی تاریخ اور اس کے فروغ کے ساتھ ساتھ ملک اور دنیا میں دہشت گرد کے بڑھتے خطرے کے بارے میں بھی بتایا۔

پچھلے سال بھی صدر جمہوریہ نے یوم اساتذہ کے موقع پر اسی ودیالیہ کے بچوں کو پڑھایا تھا۔وزیر اعلیٰ جناب اروند کیجریوال اور نائب وزیر اعلیٰ جناب منیش سسودیا نے ان سے اس کی گذارش کی تھی۔

اس موقع پر دہلی کے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا بھی موجود تھے۔انہوں نے اسکول کی سوویئنر نئی زندگی کی امنگ ،سوچھ اُرجا کے ساتھ کا افتتاح کیا اور اس کی ایک سرٹی فکٹ صدر جمہوریہ کو پیش کی۔

ان کے تعاون سے حکومت تعلیم میدان کے میں پورا ماحول بدلنے کے لئے کوشاں ہیں۔انھوں نے اس دوران اساتذہ کو طلباء،سرپرستوں اور سماج کے تئیں اچھائی اور فرض تعمیل کا حلف بھی دلائی۔دہلی کے جل بورڈ کے وزیر کپل مشرا نے بھی اس موقع پر اساتذہ کو مبارکباد دی۔

اعزاز سے نوازے گئے اساتذہ سرکاری کے ساتھ ساتھ پرائیویٹ اسکولوں کے بھی تھے۔سرکار نے ان کی تصویروں کی جگہ ہورڈنگ جگہ۔جگہ لگائی تھی جس سے وہ کافی خوش نظر آئے۔انھوں نے سرکار کا شکریہ ادا کرتے ہوئے اس بات پر خوشی جتائی کہ بطور ٹیچر ان کی محنت کو سراہا گیا۔

پروگرام کے دوران چیف سیکریٹری کے کے شرما،تعلیم کے سیکریٹری پونے سریواستو ،ایجوکیشن ڈائرکٹر سومیا گپتا اور اضافی ایجوکیشن ڈائرکٹر سونیتا کوشک ،خصوصی مہمان کی شکل میں موجود رہے۔تقریب میں نوبل ایوارڈ یافتہ کیلاش ستیارتھی ،اولمپک میڈل یافتہ ساکشی ملک اور پی وی سندھو کے ویڈیو پیغام دکھائے گئے۔

تقریب کے دوران گائک کلاکار شاہد مالیہ اور پیوش مشرا کے علاوہ سادھیا انسٹی ٹیوٹ اور انڈین اوشن بینڈ کے کلاکاروں نے رنگارنگ پروگرام بھی پیش کیا۔

کا تعاون ہے جس کی وجہ سے ہمارے بچوں نے کامیابی پائی ہے۔

-بلو سنگھ، سنسکرت

ہندی ہماری مادری زبان ہے۔ میں چاہتا ہوں کہ میرا ہر شاگرد ہندی کے ساتھ ہی دوسری زبانوں کی بھی عزت کرے، انہیں سیکھے۔ اپنے طالب علموں کی بہتری کے لئے مجھے جتنا بھی محنت کرنی پڑے، کرتا ہوں۔

-نودیپ کمار ، ہندی

کوشش کرتی ہوں کہ بچوں کو صرف کتابی تعلیم نہ دیکر انہیں عملی علم زیادہ دیا جائے۔ وقت کو لیکر میری مستعدی، محنت و پڑھانے۔ سیکھانے کے نئے۔ نئے طریقے استعمال کرنے کے سبب مجھے اس ایوارڈ کیلئے چنا گیا۔

-جیوتی شرما، سنگیت

ہم اسکول میں بچوں کو پڑھائی کا اچھا ماحول دستیاب کراتے ہیں۔ اسلئے بچے بھی خوب من لگا کر پڑھتے ہیں۔ ان کی کامیابی سے ہی ہماری کامیابی اور پہچان بڑھتی ہے۔ مجھے ملے اس ایوارڈ کا سہرا بچوں کو ہی جاتا ہے۔

-راکیش کمار شرما، پرنسپل

اساتذہ کا طور طریقہ اور اپنے کام کے برعکس ان کی سپردگی ہی ان کی طالب علموں کی کامیابی کی پہلی شرط ہے۔ طالب علم اچھے شہری بن کر استاذ کا سر فخر سے اونچا کریں، یہی ہماری لئے گرو دکشنا ہے۔

-رجنی شرما ، سنگیت

میرے اسکول میں بچوں کو نظم وضبط، صفائی وسب کے ساتھ برابر سلوک کرنے کی بات شروع سے ہی سیکھائی جاتی ہے۔ بچوں کو پڑھائی کا اچھا ماحول ملے ہمیشہ اس کا دھیان رکھنا چاہئے۔

-مہیندر موہن شرما ، پرنسپل

ایک استاذ کی شکل میں میں خود کو بچوں کے سب سے قریب پاتا ہوں ہم سے سیکھنے کے ساتھ ہی بچے ہمیں بہت کچھ سکھاتے بھی ہیں۔ جو آج بچوں ہیں وہی آگے چل کر ٹیچر بنتے ہیں۔

-شتیش شرما، جسمانی تعلیم

اس انعام کو پانے کیلئے جتنی محنت میں نے کی ہے اس سے کہیں زیادہ ہمارے طالب علموں کی محنت ہے۔ وقت پر اسکول پہنچ کر امتحان میں اچھے نمبر لا کر اسکول کو صاف ستھرا رکھ کر بچوں نے ثابت کیا کہ ہم اچھے ٹیچر ہیں۔

-اروند کوشل ، جسمانی تعلیم

ہم نے بچوں کو اچھی تعلیم دی۔ بچوں نے ہمیں ایوارڈ دلوایا۔ یہ ہمارے لئے گرو دکشنا کے سمان ہے۔ سبھی طلباء کو یہ سمجھنا چاہئے کہ ان کے استاد انہیں جو پڑھاتے ہیں، وہ ان کے اچھے مستقبل کیلئے ہوتا ہے۔

-اجونت سنگھ ، پی جی ڈی

بچے، کچی مٹی کی طرح ہیں۔ انہیں شروع سے جس ماحول میں جیسے ڈھالو گے، ڈھل جائیں گے۔ یہ ہم استادوں کو یقینی بنانا ہے کہ کسی بھی بچے کا مستقبل کیسے سنوارنا ہے۔

-ویملا رانا ، پی ای ٹی

آج سماج میں اچھے اساتذہ کی سخت ضرورت ہے۔ بچوں کی ہر کامیابی کے پیچھے تعلیم کا ہاتھ ہوتا ہے۔ اساتذہ کو اپنی اس ذمہ داری کی ادائیگی پوری سنجیدگی سے کرنی چاہئے۔

-انل کوشک ، پی ای ٹی

ٹیچر ڈے پر نوازے گئے دھلی کے 91 اساتذہ

ٹیچر ہیں اصلی ہیرو - منیش سسودیا

''ٹیچر سماج کے سب سے مضبوط ستون ہوتے ہیں۔ انہیں ہر سطح پر حوصلہ افزا کرنے کی ضرورت ہے تا کہ وہ سماج کی تعمیر میں اپنا رول رہبرانہ ڈھنگ سے اچھی طرح سے نبھا سکیں۔ان پر ایک پوری پشت کو تعلیم یافتہ اور ترقی یافتہ کرنے کی ذمہ داری ہوتی ہے۔ہم ان کی حوصلہ افزائی کر رہے ہیں۔جو بھارت کا مستقبل بناتے ہیں۔

دھلی کے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا کے اس خیال پر پورا تیاگ راج اسٹیڈیم تالیوں کی گڑگڑاہٹ سے گونج اٹھا۔موقع تھا آنجہانی ڈاکٹر رادھا کرشنن کے یوم پیدائش یعنی 5 ستمبر پر منعقد ہونیوالے ٹیچر ڈے تقریب کا۔دہلی سرکار نے اس موقع پر 91 قابل قدر اساتذہ کو ''دہلی راجیہ شکشک سمان 2016 '' سے نوازے گئے۔ نائب وزیر اعلیٰ نے ٹیچروں کو عزت افزائی کرنے کی اہمیت کو بتاتے ہوئے کہا کہ ہم لوگ کھیل، سنیما یا دوسرے ڈویژن کے ستاروں کو نوازتے ہیں۔لیکن ٹیچر وہ ہیں جو انہیں اصل میں اس لئے یہ شاندار تقریب انعقاد کر رہی ہے تا کہ لوگ ٹیچروں کی اہمیت کو سمجھ سکیں۔وزارت تعلیم کی ذمہ داری سنبھال رہے جناب سسودیا نے کہا کہ اگلے سال ٹیچروں کی حوصلہ افزائی تقریب اور بھی بڑے پیمانے پر منائی جائے گی۔دہلی سرکار تعلیم کے میدان میں انقلابی بدلاؤ لا رہی ہے۔جس میں استاذ یہ اعزاز پاکر کافی خوش ہیں۔حالانکہ یہ ایوارڈ صرف میرا نہیں ہے۔اس میں ہمارے طلبہ اور ان سبھی معاصروں

भड़काने वाले अख़बारों को मदद न करें

“अखबारों का जनता पर जबरदस्त असर होता है ! संपादकों का फर्ज है कि वे अपने अखबारों में गलत खबरें न दें या ऐसी खबरें न छापें, जिससे जनता में उत्तेजना फैले ! एक अखबार में मैंने पढ़ा कि रेवाड़ी में मेवों ने हिंदुओं पर हमला कर दिया ! इस खबर ने मुझे बेचौन कर दिया! मगर दूसरे दिन अखबारों में यह पढ़ कर मुझे खुशी हुई कि वह खबर गलत थी! ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं! संपादकों और उप संपादकों को को खबरें छापने और उन्हें खास रूप देने में बहुत ज्यादा सावधानी लेने की जरूरत है! आजादी की हालत में सरकारों के लिए यह करीब–करीब असंभव है कि वे अखबारों पर काबू रखें! जनता का फर्ज है कि वह अखबारों पर कड़ी नजर रखें और उन्हें ठीक रास्ते पर चलायें! पढ़ी–लिखी जनता को चाहिए कि वह भड़काने वाले या गंदे अखबारों को मदद करने से इनकार कर दें !”

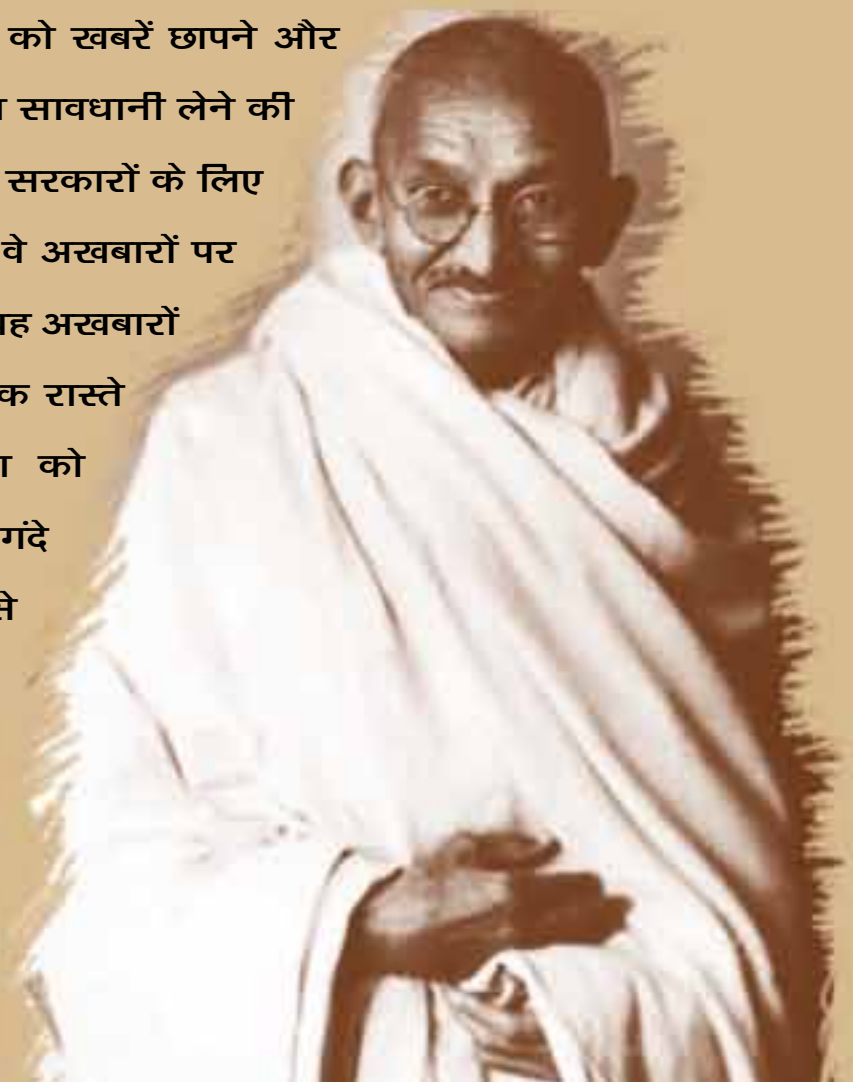

महात्मा गाँधी

(दिल्ली–डायरी, पृष्ठ – 77)

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्मदिवस पर शत् शत् नमन

"अहिंसा मानवता के लिए सबसे बड़ी ताकत है"

-महात्मा गाँधी

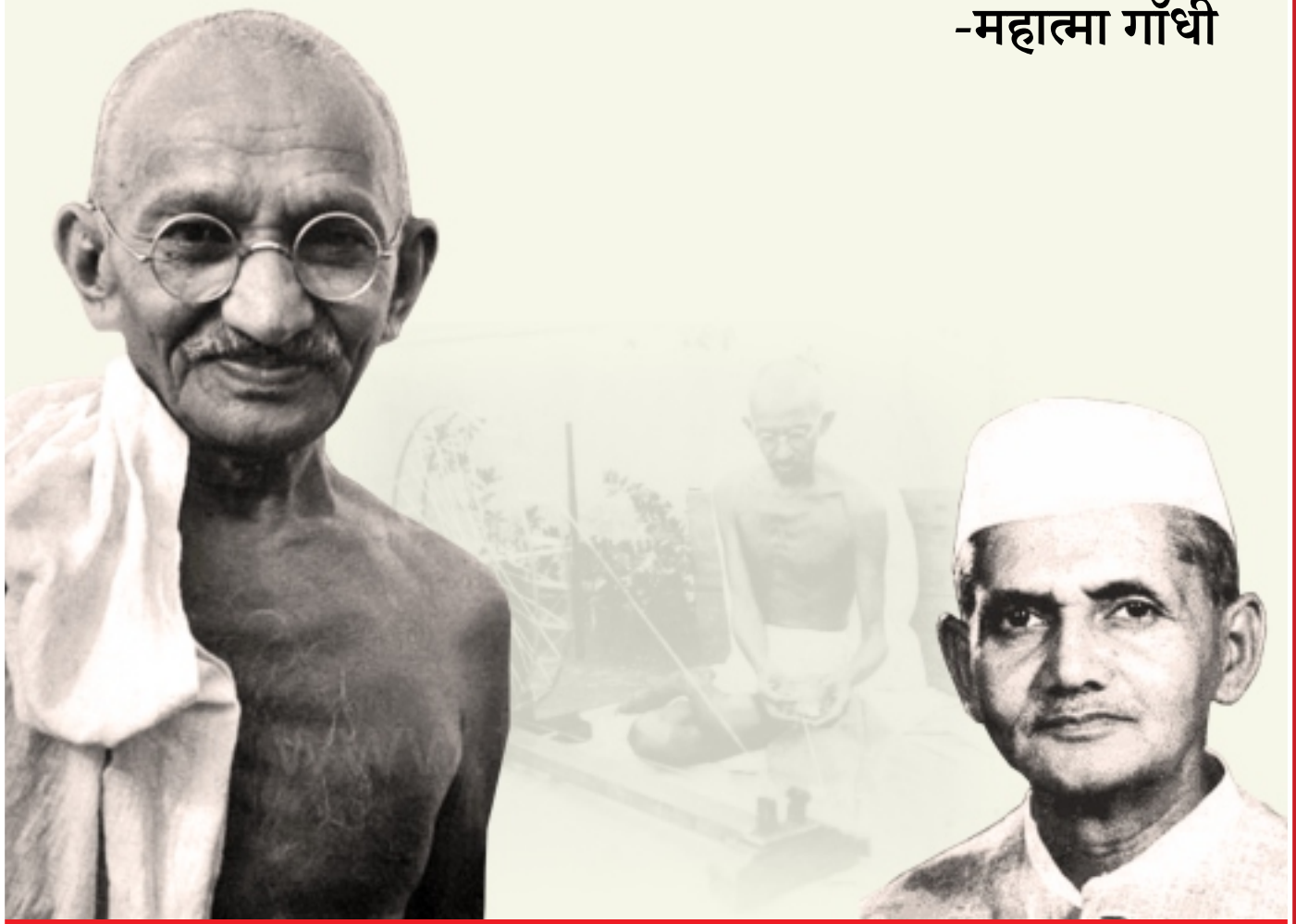

सूचना और प्रचार निदेशालय
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

डॉ. जयदेव षड़ंगी, निदेशक, सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054 द्वारा प्रकाशित एवं आकांक्षा इम्प्रेशन्स, 18/36 स्ट्रीट नं. 5, रेलवे लाइन साइड, आनंद पर्वत इंडस्ट्रियल एरिया, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली–05 द्वारा मुद्रित